सैन्डफ़ोर्ड और मरटन

की

कहानी ।

श्रीमन्महाराजाधिराज पश्चिमोत्तरदेशाधिकारी
श्रीयुत नव्वाब लेफ़्टिनेंट गवर्नर बहादुर
की आज्ञानुसार

राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द (१) ने बनायी

पहला हिस्सा

SANDFORD AND MERTON,

BY

RAJA SIVAPRASAD, C. S. I.

PART I.

लखनऊ

सुपरिंटेंडेंट बाबू मनोहरलाल भार्गव बी. ए., के प्रबन्ध से
मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., के छापेखाने में छपी

सन् १९१२ ई०

2nd Edition, 600 Copies.
Price 6 As. per Copy.

दूसरीबार ६०० जिल्द छपी
क़ीमत ६) आना फ़ी जिल्द

सैन्डफ़ोर्ड और मरटन

की

कहानी।

श्रीमन्महाराजाधिराज पश्चिमोत्तरदेशाधिकारी
श्रीयुत नव्वाब लेफ्टिनेंट गवर्नर बहादुर
की आज्ञानुसार

राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द (३) ने बनाथी

पहला हिस्सा

SANDFORD AND MERTON.

BY

RAJA SIVAPRASAD, C. S. I.

PART I.

दूसरी बार

लखनऊ

सुपरिंटेंडेंट बाबू मनोहरलाल भार्गव बी. ए., के प्रबन्ध से
मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., के छापेखाने में छपी
सन् १९१२ ई०

सैन्डफ़ोर्ड और मरटन की कहानी।

हिन्दुस्तान से उत्तर और पश्चिम के कोने में तीन चार हज़ार कोस पर इंगलिस्तान का प्रसिद्ध टापू है उसमें मरटन नाम एक धनवान् रहता था जमेका में उसकी ज़मींदारी थी हज़ारों बीघे ऊख बोई जाती थी और सैकड़ों हबशी उसके गुलाम थे, लड़का उसके एकही था और अपने बाप का बड़ा लाड़ला था, इसी लड़के की तालीम और अच्छी शिक्षा के लिये वह इंगलिस्तान में ठहरा हुआ था उस लड़के का नाम तामी था, और उमर ६ बरस की, सुभाव उसका बहुत अच्छा था परन्तु लाड़ प्यार ने बिलकुल ख़राब कर रक्खा था जमेका में सारे घर के नौकरों को यह हुक्म था कि तामी का कोई कहना न टाले जिस काम के लिये जिसे वह कहे तुरन्त उसे कर दे जब वह बाहर निकलता दो हबशी साथ रहते एक बड़ासा छाता ले चलता और दूसरा जब वह थकता गोद में उठा लेता पोशाक उसके लिये सब अतलस और मख़मल की बनतीं, जो थोड़ी दूर भी किसी दोस्त के यहां उसे जाना मंजूर होता सुनहरे तानजान पर बैठकर जाता, मा उसकी उसे अपना कलेजा जानती थी जिस वस्तु की वह ज़रा भी इच्छा करता उसी दम उसके लिये मौजूद कर देती पढ़ने के नाम से तामी का सिर घूमता था इसलिये उसकी मा पढ़ने से सदा उसे दूर रखती परिणाम इस लाड़ प्यार का बहुत बुरा था सब चीज़ मिलने पर भी वह दिन पर दिन ज़िद्दी और चिड़चिड़ा होता जाता था प्रसन्न कभी न रहता किसीदिन मिठाई इतनी खालेता कि बीमार पड़ जाता और बीमारी में दवा कड़वी लगने के डरसे कभी न पीता इस सबब से उसका दुख दर्द और भी बढ़ता किसी दिन वह ऐसी २ बातों की हठ करता कि जिनका होना बहुत कठिन था घड़ियों रोता चिल्लाता और मचल जाता जो घरमें दस पांच पाहुने आ जाते तौभी मेज़पर तामी के सामने सबसे पहिले और अच्छे

से अच्छे खाने चुने जाते और नहीं तो वह इतना हल्ला बखेड़ा मचाता कि सब के सब महादुखी होजाते बहुधा वह मेज़ पर अच्छे २ खाने की रकाबियां मा बाप की आज्ञा बिना अपने सामने खींच लेता बरन इस ईंचा खींची में कभी चाय और कभी शोरबे के पियाले उलट देता कभी शराब की बोतलें ढुलका देता लोग तो ना खुश होते ही थे परन्तु इस ढिठाई की कुलत से उसे भी बहुत नुक़सान पहुंचता कभी छुरी से अपना हाथ काट डालता कभी किसी चीज़ से चोट खा जाता।

एक बार इस तार्मा ने खौलते हुए पानी का देग औंधा दिया जलते जलते बचगया सुकुमार ऐसा होगया था कि थोड़ी सी सर्दी गर्मी से खांसी और ज़ुक़ाम होजाता निदान यह लड़का लिखना पढ़ना तो कुछ भी न सीखा परन्तु ज़िद चिड़चिड़ापन घमंड और बेसबरी में पूरा हो गया मरटन के मकान के पासही सैन्डफ़ोर्ड नाम एक सीधा सादा सच्चा किसान रहता था उसके भी मरटन की तरह हारी नाम इकलौता लड़का था हारी सदा खेतों में दौड़ता बागों में फिरता जंगल में मंगल मनाता और हलवाहों के संग हल चलाता कभी भेड़ों बकरियों को चराई पर से घर में लेजाता कभी उनके लिये खेतो मे से हरे हरे पत्ते तोड़ लाता इसी कारण वह हट्टा कट्टा चालाक और मोटा ताज़ा बना हुआ था यद्यपि वह मरटन सा सुन्दर और सुकुमार न था तौभी उसके चिहरे से ईमानदारी और भल मनसाहत ऐसी झलकती थी कि जो उसको देखता उसके साथ प्रीति करता वह हरएक का अपनी सामर्थ्य भर उपकार करता और ख़फ़ा कभी किसी से न होता जो खाता रहता और कोई भूखा आकर सवाल करता उसी दम आधा भोजन उसे उठा देता बरन कभी सब का सब दे डालता और आप भूखाही रह जाता आदमीयत यहां तक कि आदमी पर क्या कहना है वह जानवरों को भी कभी नहीं सताता न कभी चिड़ियों के घोंसलों में से अण्डे और बच्चे निकालता न कभी बिल्ली कुत्तों पर ढेले चलाता बरन उनका भी जी अपना सा समझता सच है दुख दर्द हम सब को बराबर होता है अन्तर केवल इतना ही है कि ये बेचारे मौनीरूप धारण

किये मुख से कुछ भी प्रगट नहीं कर सकते एक दिन सैन्डफ़ोर्ड क्या देखता है कि हारी एक कीड़े को डोरे में बांध कर सिर के गिर्द घुमा रहा है सैन्डफ़ोर्ड बड़े अचरज में आया और कहा कि अरे बेटा यह तू क्या कर रहा है जो तुझको कोई रस्सी से बांध के अपने सिर के गिर्द घुमावे तो फिर तेरा क्या हाल हो हारी ने कदापि यह न जाना था कि कीड़े को रस्सी से बांध कर घुमाने में उसे कुछ कष्ट होता है परन्तु जब अपने बाप से यह बात सुनी तो मारे पछतावे के रोदिया ।

फिर उस कीड़े को घर लेजाकर १५ दिन तक अपने पास रक्खा और बहुत सावधानी से उसके खाने पीने की ख़बरगीरी करता रहा यहां तक कि वह कीड़ा अच्छा होकर जंगल में उड़गया उस रोज़ से फिर हारी को ऐसा ध्यान रहने लगा कि राह में भी चलता तो ज़मीन देख कर जिसमें कोई कीड़ा मकोड़ा पांव से न पिसजाँय निदान वह बेचारे अबोल जानवरों पर बहुतही दया रखता हल के घोड़ों को अपने हाथ से ठोंकता और पुचकारता बर्फ़ के दिनों में जब चिड़ियों को जंगल में चारा न मिलता हारी अकसर अपनी रोटी उनको उठा देता और आप बेखाये रहजाता कभी किसी जानवर को न सताता और सदा यही कहता रहता कि दुनिया में रहने को बहुत जगह है हम सब अच्छीतरह समा सकते हैं फिर क्यों किसी को छेड़ें झूठ से उसे ऐसी घिन थी कि जो मेवा मिठाई की भी कोई उसे लालच देता वह झूठ कभी न बोलता और सच के लिये मार खाना भी अंगीकार करता ।

जिस लड़के का ऐसा चलन होगा क्यों न लोग उसको मन से चाहेंगे विशेष करके उस पर्गने का पादरी उसके साथ बहुत प्रेम प्रीति रखता था और उसे लिखना पढ़ना सिखलाता बरन बहुधा अपने पासही रहने देता अब एक दिन का हाल सुनो कि तामी अपने मामूल मुताबिक़ सबेरे के समय अपनी अन्ना के साथ हवा खाने को निकला मैदान में फूल खिले हुए थे तोड़ने लगा और दौड़ २ कर तितलियों को पकड़ने लगा दैव संयोग वहां एक सांप घास में छिपा बैठा था

वह उछल कर तामी के पैर से लिपट गया तामी के औसान जातेरहे चिहरे का रंग उड़गया पत्थर की मूरत और मिट्टी के खिलौने की तरह खड़ा रहा और उसकी अन्ना मारे डर के चिल्लाती हुई घर को भागी सयोग से हारी भी कहीं उसी जगह टहल रहा था दौड़ कर तामी के पास आया और पूछा क्या हाल है तामी की घिग्घी बँध गई थी मुँह में बोल कहां जो बतलावे पैर की ओर इशारा किया हारी यद्यपि निरा बच्चा था परन्तु साहस और शूरता में बड़े २ जवानों के कान काटता था बोला कि बाबा तुम घबराओ मत और तुरन्त फुरती के साथ सांप की गरदन पकड़ली और तामी के पांव से छुड़ाकर दूर फेंक दिया इसी अर्से में तामी की मा और उसके सारे कुनबे के लोग उसकी अन्ना से घबराहट की आहट पा झटपट चले आये जब वहां पहुंचे तो सांप तो न देखा परन्तु यह देखा कि तामी, हारी को धन्यवाद दे रहा है बीबी मरटन ने झपट कर अपने लड़के को गोद में उठा लिया और छाती से लगाकर माथा चूमा और प्यार किया और पूछा कि तुझे उस दुष्ट ने कहीं काटा तो नहीं तामी बोला नहीं अम्मा उसने मुझे कहीं नहीं काटा परन्तु जो यह लड़का जल्दी आकर उसे मेरे पांव से न छुड़ा लेता तो वह अवश्य काटता तब बीबी मरटन हारी की ओर देखने लगीं और पूछा कि तुम कौन हो हम तुम्हारे बड़े इहसानमन्द हुए हारी ने जवाब दिया कि मेम साहिब मुझे लोग हारी कहते है बीबी मरटन बोलीं शाबाश लड़के तेरी बलिहारी जाऊं तैने बड़ा साहस किया आओ आज हमारे साथ खाना खाओ हारी ने सलाम किया और कहा कि नहीं मेम साहिब बाबाजान मुझको ढूंढेंगे बीबी मरटन ने कहा तू किसका लड़का है और कहां रहता है उसने जवाब दिया कि मैं सैन्डफ़ोर्ड किसान का लड़का हूं इसी पहाड़ी के नीचे रहता हूं बीबी मरटन ने प्रेम से बड़ी कृपा करके कहा कि आज से तू मेरा बेटा हुआ हारी बोला कुछ चिन्ता नहीं लेकिन यह भी इसके साथ है कि मैं अपने मा बाप का भी बेटा रहने पाऊं बीबी मरटन हँसीं और उसी दम एक आदमी दौड़ा दिया कि सैन्डफ़ोर्ड को हारी के यहां आने और खाने की खबर दे देवे और हारी का हाथ

पकड़े हुए अपने घर में ले आई वहां मरटन साहिब भी मौजूद थे तामी के पांव में सांप का लिपटना और हारी का उसकी गरदन पकड़ कर छुड़ा लेना यह सब समाचार अव्वल से आख़िर तक कह सुनाया, हारी ऐसे रंगीले चमकीले सजेहुए आलीशान मकान में अबतक कभी नहीं गया था उसने ऐसे बड़े २ शीशे सुनहरे चौकठों में जड़े हुए अच्छे अच्छे रेशमी पर्दे, सोने के काम के मेज़ कुरसी, मख़मल से मढ़ीहुई कौच, और सोने चांदी के बर्तन अर्थात् जो कुछ सामान और असबाब कि अमीरों के मकान में रहता है उमर भर आंख से न देखा था खाने के समय बीबी मरटन ने उसे अपने पास बैठाया और अच्छे से अच्छा खाना उस के आगे चुना गया परन्तु जब लोगों ने देखा कि न तो हारी ने किसी बात में अपना अचम्भा प्रगट किया और न उसका चिहरा प्रसन्न दिखाई दिया तब तो सब के सब हैरान होगये और विशेष करके बीबी मरटन क्योंकि वह इन चीज़ों का बड़ा शौक़ रखती थीं और जानती थीं कि सारी दुनिया इसी शौक़ में मरती है इस औसर में बीबी मरटन ने देखा कि हारी एक छोटे से चांदी के पियाले को जिस में कुछ पीने की चीज़ उस के सामने रक्खी गयी थी ध्यान देकर देख रहा है बीबी मरटन मन में मगन होकर बोलीं कि हारी जो तुझको यह पियाला मिल जावे तो तू कितना प्रसन्न हो, और फिर यह भी कहने लगीं कि यह पियाला तामी का है पर मुझे निश्चय है वह इस पियाले को बड़े आनन्द से अपने नये मित्र की भेट करेगा इतने में तामी भी शेख़ी के साथ बोल उठा कि हां बेशक मैं यह पियाला ख़ुशी से हारी की भेंट करूंगा क्योंकि मेरे पास ऐसाही एक सोने का है बरन वह इससे भी सुडौल बना है और चांदी के तो मेरे पास दो और हैं वे इससे कहीं बड़े हैं हारी ने सुन कर इस मिहर्बानी का शुकराना अदा किया और कहा कि आप इस पियाले को रहने दीजिये मेरे घर में इस से बहुत अच्छे अच्छे पियाले मौजूद हैं ।

बीबी मरटन बड़े अचम्भे में आई और पूछा कि क्या तेरा बाप

को मारडालते हैं कभी उनके गाय बैलों को लंगड़ा कर देते हैं बहुत क्या कहें वह गरीबों को हर प्रकार से सताते हैं और लोगबाग इन सब विपत्तियों का कारण केवल उनकी दौलतमन्दी बताते हैं ।

यद्यपि मुँह पर उनके कोई यह बात नहीं कह सकता परन्तु मन सब का उनसे फिरा रहता है मैं तो सारी दुनिया भी मिलने से कभी यह न चाहूंगा कि मुझसे किसी का मन फिरे बीबी मरटन से इतनी बात पर भी न रहा गया फिर पूछा कि क्या तेरा मन कारचोबी मखमल की कुरती पहरने और सेजगाड़ी पर सवार होने और बहुत से नौकर चाकर रखने को भी नहीं चाहता, हारी ने कहा कि जो कुरती ऐसी मिले जिससे शरीर को जाड़ा न लगे तो फिर उसके ऊपर कारचोब की क्या ज़रूरत है मेरे लेखे सादी और कारचोबी दोनों कुरती बराबर हैं और जब कि पांव चलने के लिये मौजूद हैं तो फिर गाड़ी क्या होगी बाक़ी रहे नौकर चाकर सो उनका तो मेरे पास कुछ काम ही नहीं जो मानो कि मेरे पास १०० नौकर हों तो फिर उनसे काम क्या लूंगा निदान बीबी मरटन चुप होगई और बड़ी देर तक उस के मुँह की ओर देखती रहीं संझा के समय उसे उस के घर भिजवा दिया, उसके बाप ने मिहमानी का हाल पूछा हारी ने कहा कि पिता जी उन लोगों ने मुझ पर बड़ी कृपा की और बड़ी प्रीति से खाने पीने का सत्कार किया मैं उनका अत्यन्त इहसान-मन्द हूं परन्तु जो मेरे मन का हाल पूछो तो मैं उस मिहमानी से अपने घर का खाना पसन्द करता हूं क्योंकि ऐसा दुख मैंने कभी उमर भर नहीं पाया था जैसा मुझे वहां झेलना पड़ा, एक आदमी तो मेरी रकाबियां उठाता और धरता था, एक आदमी पियाले चुनता और भरता था, एक आदमी मेरी कुरसी के पीछे हाथ बांधे खड़ा था मानों लोगों ने मुझे लंगड़ा लूला अन्धा अपाहिज समझ लिया इसके सिवाय उन लोगों ने खाने की चीज़ें इतनी बनाई थीं कि मैंने समझा शायद उन का उठाना धरना उमर भर में भी पूरा न होगा और फिर खाने के पीछे दो घण्टे तक मेम साहिब ने मेरा सिर खाया और अपनी जगह से न हिलने दिया, कभी मुझे अच्छे कपड़े पहरने का शौक़ दिलाती

थीं कभी मुल्क और दौलत की लालच दिखलाती थीं इन बातों से उनका यही प्रयोजन था कि मैं भी धनी होजाऊं और मुझ से भी लोग शिकारी साहिब की तरह नफ़रत करें, पादरी बारलो साहिब की सी बात वहां एक भी सुनने में न आई ।

हारी के चले जाने के पीछे मरटन साहिब के यहां उसकी बहुत देरतक चरचा रही बीबी मरटन उसके धीरज और संतोष की बड़ाई करती थीं वरन उसके अच्छे स्वभाव और सुशीलता से अचम्भे में आयी थीं परन्तु तौ भी उन्हें हारी की बातों में एक ऐसा भद्दा भोंडा गंवारपन मालूम होता था कि वह अमीरों की वज़ादारी और सज धज से बहुत दूर है, मरटन साहिब कहते थे कि मैंने इस स्वभाव और प्रकृति का लड़का उमरभर नहीं देखा अहो भाग्य उस भाग्यवान् के जो इस लड़के कीसी समझ बूझ हासिल करे सज धज और वज़ादारी जिस पर अमीरलोग मरते हैं दुरुस्त करलेनी कुछ कठिन नहीं है यहांतक कि कभी २ खिदमतगार और खानसामां भी इन बातों में पूरे गिने जाते हैं, तारीफ़ उन्हीं की करनी चाहिये और बड़े वही हैं जिनका मन शुद्ध रहता है और वही अच्छी समझ के और चतुर हैं जिनको ईश्वर ने धीरज और संतोष दिया है उनको भगवान् ने सब बात का सुख दिया और उन्हीं को बिना बनावट की मिलनसारी भी दी जिनमें ये अच्छाइयां नहीं वे खाली बातें बनाने से और हाथ पैर मटकाने से जुल्फ़ बटकाने वा मूछों पर ताव देने से बड़े मोल के जवाहिर या तासबादले की सजी हुई सुन्दर पोशाकें पहर कर बांकी तिरछी टोपी रखने से कभी बड़े आदमी नहीं हो सकते ये सब चीजें थोड़े हज्जाम जौहरी और कपड़ावालों से सहज में हाथ लग सकती हैं इस में किसी तरह का शक नहीं कि इस किसान के छोकरे के मन में बड़ाई और कुलीनता का बीज बोयागया यद्यपि मेरी यह खुशी है कि टामी हर एक बात में वैसी अमीरों को चाहिये महारत और ताक़त पैदा करे परन्तु इसका मैं अच्छीतरह बन्दोबस्त किया चाहता हूं, कि जिससे टामी इस किसान बच्चे से किसी बात में हेठा न रहे मेरी समझ में यह अमीरों का लाड़ प्यार टामी के लिये बहुत बुरा हुआ लड़कों को इतना लाड़ प्यार

कभी न चाहिये ज्यों २ हमलोग उसका कहा करते जाते हैं वो उतना ही हठीला और चिड़चिड़ा होता जाता है जो कुछ उसने चाहा वही हम लोग करते गये परन्तु पढ़ने लिखने का सोच अबतक कुछ न किया ककहरा भी उसको शुरू न कराया प्यार के कारण तुम्हारी खातिर से इस घड़ी तक तो मैं चुपरहा परन्तु अब जो मैं इसके लिये कुछ उपाय नहीं करता हूं तो लड़का खराब जायगा और सारी उमर पछताकर हाथ मलना पड़ेगा इस से अब बिहतर यही है कि तामी को पादरी बारलो साहिब के सपुर्द करें इस हारी का तामी की हमजोली होना हमारे हक में बड़ी अच्छी बात है हारी के बाप से कहदेंगे कि जबतक तामी पादरी साहिब के यहां रहे तबतक हारी के खाने पीने का खर्च भी हम दिया करेंगे तो जरूर वह रात दिन उसके पास रहेगा और अच्छीतरह उसका मन बहलावेगा यद्यपि बेटे की जुदाई से तो बीबी मरटन का मन दुखी हुआ परन्तु अपने पति की यह अच्छी सलाह मानलेने के सिवाय और कुछ भी इलाज न था तब इतवार के दिन पादरी साहिब की मिहमानी की, खाने के समय मरटन साहिब ने उन से यह भी चर्चा छेड़ी और कहा कि यद्यपि ऐसी कोई वस्तु नहीं है कि जो मिल सके और मैं उसको आपकी भेट न करूं तौ भी मैं अपने लड़के के लिखाने पढ़ाने को एक ऐसा जरूरी काम समझता हूं कि तमाम उमर आप का इहसानमन्द रहूंगा बारलो साहिब ने इस विश्वास का धन्यवाद किया और कहा कि मैं अपने जान में कुछ भी इस काम के लायक नहीं मैं पादरी हूं मेरा काम उपदेश देने और नसीहत और अच्छी बातों के सुनाने का है आप देखते हैं कि आज बीस बरस से मैं शहर की भीड़भाड़ छोड़ कर बाहर एक कोने में पड़ा रहता हूं और अब मैं अपने इस काम को दुनिया की बादशाहत के लिये भी नहीं छोड़ने का आप अमीरलोग अपने लड़कों को वज़ादार बनाना चाहते हैं कि जिससे सिर्फ शरीर की शोभा होती है, हम गरीबों के पास यह वज़ादारियां कहां से मिलेंगी मरटन साहिब बोले कि इसमें शक नहीं कि मैं अपने लड़के की ज़ाहिरा सज धज भी दुरुस्त करनी चाहता हूं पर आप निश्चय जानिये कि मुझ को हरतरह उसके

स्वभाव दुरुस्त करने और उसे अच्छी तालीम देने का सब से ज़ियादा ख़याल है निदान बहुत सी बातें होने के पीछे जब पादरी साहिब ने देखा कि मरटन साहिब गुणग्राहक और क़दरदान हैं तब फ़र्माया कि अच्छा लो हम तुम्हारे लड़के को ले जाते हैं और जहांतक बन पड़ेगा उसकी तालीम और सिखाने में कसर न रखेंगे परन्तु कभी कुछ देने का हम को मन में ख़याल न लाना हमारा ऐसा दस्तूर नहीं है, निदान दूसरे दिन तामी को उस के बापने पादरी बारलो साहिब के मकान पर जो कोस एक के अन्तर पर था भेज दिया पादरी साहिब ने तामी को अपने साथ खाना खिलाया और फिर हारी समेत बाग़ में गये आप तो बेल्चा लेकर बाग़ की रविश सुधारने लगे और हारी को मिट्टी खोदने के लिये कुदाली दी, तामी की ओर देख कर पादरी साहिब ने कहा कि सुनो, हर एक मनुष्य जो खाने को खाता है उसको चाहिये कि खाने की चीज़ पैदा करने में भी मदद देवे देखो हम और हारी दिन भर इस काम में मिहनत करते हैं यह हमारे सोने की चारपाई है और वह हारी की है हम दोनों में से जो जितनी ज़ियादा मिहनत करता है वही उतने ज़ियादा फल अपने बांट में पाता है जो तुम को भी शरीक होना मंजूर हो तो हम एक टुकड़ा ज़मीन दे सकते हैं तुम उसको अपनी मिहनत से दुरुस्त करो और जो कुछ कि उसमें उपजे तुम्हीं खाया करो तामी यह सुनकर मुंह फुला कर बोला कि यह मुझ से कभी नहीं हो सकेगा मैं बड़े आदमी का लड़का अमीरज़ादा हूं हलवाहों की तरह मैं मिहनत करना कभी पसन्द नहीं करता बारलो साहिब ने जवाब दिया कि बहुत अच्छा मीर्ज़ासाहिब आप को जो अच्छा लगे सो कीजिये हम और हारी तो मिहनत करेंगे, हमलोग कामकाजी आदमियों से घटकर नहीं हैं, दो घण्टे के पीछे फावड़े और कुदालियां रखकर बारलो साहिब हारी का हाथ पकड़े हुए एक अच्छे ख़ासे हवादार फूस के बंगले में गये और बैठे, बारलो साहिब ने एक टोकरी बहुत अच्छे पके हुए शाहदानों से भरी निकाली और हारी के साथ खाने लगे तामी भी उनके साथ २ पीछे लगा चला आया और उसे इस बात का भरोसा था कि मुझ को भी कुछ शाहदाने मिलेंगे

परन्तु जब उसने देखा कि सब उन दोनों ने आपस में बांट खाये और मुझ से पूछा भी नहीं रह न सका चिल्लाकर रोनेलगा बारलो साहिब ने धीरज के साथ पूछा कि बाबा तुम को क्या हुआ तामी नाक चढ़ाकर टेढ़ी नजरों से देखता रहा परन्तु जवाब कुछ न दिया, बारलो साहिब बोले कि जनाब आप को बोलना बुरा मालूम होता है तो आप बेशक चुप रहिये यहां कोई किसी को जबर्दस्ती से नहीं बुलाता तामी को इस बात के सुनने से और भी क्रोध सिवाय हो आया और वहां न ठहर सका झपट कर बाहर निकल गया और बहुत उदास होकर बाग में घूमता फिरा इधर ये दोनों जब शाहदानों के खाने से सुचित्त हुए तो हारी ने बारलो साहिब से कहा कि आपने मिहरबानी करके मुझ से यह वादा किया था कि जब बाग में काम कर चुकेंगे तो तेरा पढ़ना सुनेंगे इससे जो आप को तकलीफ न हो और आज्ञा दीजिये तो मैं अपनी कहानी की किताब कुछ पढ़कर सुनाऊं बारलो साहिब ने बहुत खुशी से आज्ञा दी और कहा कि बहुत अच्छा पढ़ो परन्तु साफ और धीमी आवाज से और पढ़ने में कहीं रुको मत अच्छे ढब से पढ़ो और शब्दों का उच्चारण शुद्ध करो और इस ढब से पढ़ो कि जिसमें जान पड़े कि तुम जो पढ़ते हो वह समझते भी जाते हो हारी किताब उठा कर पढ़ने लगा निदान जब एक कहानी पूरी हुई तब बारलो साहिब ने कहा कि अब चलो जरा बाहर चलकर हवा खा आवें और हारी को खेतों की ओर ले गये और बहुत से नई २ भांति के पेड़ और पौधों के नाम और गुण बतलाये इस औसर में हारी कहीं से एक लाल सा चमकता हुआ फल तोड़ लाया और बारलो साहिब से उसके खाने की आज्ञा मांगी बारलो साहिब ने देखते ही वह फल उसके हाथ से ले लिया और कहा कि बेटा तूने खूब किया कि खाने से पहिले मुझ को दिखला लिया यह फल विष से भरा हुआ है जो कहीं खाता तो तुरन्त मर जाता खबरदार फिर कभी अनजाना फल न खाना हारी ने इसके पलटे धन्यवाद किया और कहा कि मैं विना आप से पूछे और दिखलाये कभी कोई फल नहीं खाता हूं और अब निश्चय है कि जो आप दिन २ ऐसी ही कृपादृष्टि के साथ बताते

रहेंगे तो मैं भी कुछ दिनों में बहुतेरे फल फूलों का लाभ हानि जान जाऊंगा जब वे वहां से फिर कर घर की ओर आते थे तो रास्ते में हारी ने क्या देखा कि एक चील ने चिड़िया के बच्चे पर झपट्टा मारा और पंजे में दबाकर चाहती थी कि नोंच डाले परन्तु हारी चिल्लाया और उसके छुड़ाने के लिये दौड़ा यहांतक कि चील उस बच्चे को छोड़ कर उड़ गई हारी ने देखा कि बच्चा लोहूलुहान हो रहा है यद्यपि सांस बाक़ी है, पर चोट बड़ी कड़ी आई है हारी ने उसे उठा कर तुरन्त छाती से लगा लिया और घर आते ही उसके परों से लोहू धोया पुवाल नरम २ बिछा उसे उसके ऊपर रक्खा और दाना पानी भी दिया इस अर्से में शाम हो गई और खाने का समय हुआ बारलो साहिब और हारी मेज़ पर बैठे।

तामी दिनभर तो नाक भौं चढ़ाये इधर उधर दबका रहा परन्तु जब भूख ने सताया तो लाचार क्रोध और सोच में भरा हुआ धीरे २ खाने के कमरे में आया और चाहा कि एक कुरसी लेकर वह भी मेज़ पर बैठे परन्तु बारलो साहिब ने उसे रोका और कहा कि ऐ अमीरज़ादे तुम इतने बड़े हो कि मिहनत करना बुरा समझते हो परन्तु याद रक्खो कि हम ग़रीब लोग सुस्त आलसी बेमिहनती निकम्मे आदमियों के लिये मिहनत नहीं करते, तामी से न रहागया कोने में मुंह डाल कर फूट २ रोने लगा और जब देखा कि यहां मेरा मुंह फुलाना और झुंझलाना कोई ध्यान में नहीं लाता तो उसके मन को और भी दुख पैदा हुआ, हारी से अपने मित्र का यह हाल न देखा गया आंखें डबडबा लाया और बारलो साहिब से बहुत नर्मी के साथ बिनती की कि यह जो सब खाने की चीजें आपने मुझ को दी हैं कृपा करके पर्वानगी दीजिये कि मैं उनको जो चाहूं सो करूं बारलो साहिब ने कहा कि तुम को अपने बांट पर इख़्तियार है जो चाहो सो करो सुनते ही हारी बहुत खुश हो कर उठा और अपना सारा खाना लेजा कर तामी को जो कोने में मुंह दिये सिसकता था हवाले किया तामी ने हारी का बड़ा गुन माना और धन्यवाद किया पर आंख ऊपर को न उठाई इस में बारलो साहिब बोले कि यद्यपि अमीरलोग मिहनत में बुराई समझते हैं परन्तु देखो

उससे किसी को कुछ लाभ न होता इसलिये उससे कोई दोस्ती भी न रखता बरन ज़ोर जुल्म के कारण सारे पड़ोसी उससे नाखुश रहते और नौकर भी उसे पीठ पीछे गालियां देते वह इन बातों से सदा उदास और दुखी रहता और जो किसी को प्रसन्न देखता मन ही मन में कुढ़ता और जलता यह अमीर जब कभी पालकी पर सवार होकर उस बंसफोड़ के झोंपड़े के सामने से निकलता और उसको अपने दर्वाजे पर टोकरी बुनते और गाते हुए पाता तो अपने मन में बहुत रिस खाता और झुंझलाता और कहता कि यह अभागा नीच कंगला बंसफोड़ सदा प्रसन्न बना रहता है और इस टोकरी बुनने में उसे गाने की सूझती है और मैं अभी चाहूं तो ऐसे २ दस लाख बंसफोड़ मोल लेकर गुलाम बना डालूं हाय इतनी दौलत और दबदबे पर भी मैं सदा उदास और परेशान बना रहता हूं निदान होते २ कुछ दिनों में इस अमीर को उस बंसफोड़ से ऐसी लाग हो गई, कि बेचारे को केवल इस बात पर कि वह हर हाल में बहुत खुश रहता है दुख देने पर कमर बांधी एक रात अपने नौकरों को हुक्म दिया कि उसके सब नरकट बांस जो कुछ इकट्ठे हैं आग लगा कर फूंक दो नौकरों की क्या ताक़त थी कि जो आज्ञा न मानते ऋतु गर्मी की थी, बांस सूखे हुए थे आग जो भड़की तो उस बेचारे के झोंपड़े में भी जालगी यह हाल देख कर बंसफोड़ तो नंगमुनंगा अपना जी लेकर बाहर भागा परन्तु उसका वह छान छपर सारा जलकर राख हो गया इतनी उस को ताक़त न थी कि उस अमीर से कुछ बात भी कहे रोता हुआ हाकिम के पासगया और उसे अपना सारा हाल कह सुनाया, हाकिम बहुत दयावान् और न्यायी था तुरन्त उस अमीर को बुलवाया, अमीर को सिवाय अपने दोष मानलेने के और कुछ तदबीर न सूझी सारी बातें अपनी नटखटी की कह सुनाई तब हाकिम उस बंसफोड़ की ओर देखकर कहने लगा कि यह अमीर घमंड और शेख़ी से ऐसा फूलगया है कि अपने सामने किसी को कुछ नहीं समझता और नाहक़ ग़रीबों को सताता है इसलिये अब मैं भी उसको बतला दूंगा कि यह कैसा निकम्मा और तुच्छ है परन्तु यह बात उसी हालत में

अच्छी भांति बन सकती है कि तूभी उसके साथ बाहर जाना कबूल करे यह सुन कर उस बंसफोड़ ने कहा कि आप जानते हैं कि मेरे पास कुछ धन धरती तो थी ही नहीं यही बांस की पूंजी थी सो इस अन्यायी ने फूंक दी मैं तो सब तरह से बर्बाद होगया एक टुकड़ा रोटी भी कमाने के काम का न रहा इससे मुझ को क्या उज़र है जहां भेजोगे सिर आंखों से चला जाऊंगा इसमें शक नहीं कि उस उपाधी घमंडी की ऐसी ताड़ना होजाने से जिस से फिर किसी गरीब को न सतावे मैं मन से खुश हूगा पर तौभी यह बात नहीं चाहता कि वह सब तरह बर्बाद होकर मुझसा अनाथ होजावे ॥

हाकिम ने यह सुन कर अपने पियादों को हुक्म दिया कि इन दोनों को जहाज पर चढ़ा कर एक ऐसे टापू मे छोड़ आओ जहां जंगली मनुष्य बसते हैं और सिवाय छान छपर के और कुछ जमा पूंजी नहीं रखते मछली मार कर अपना पेट भरते हैं ।

निदान जहाजवालों ने हाकिम की आज्ञा के अनुसार उन दोनों को एक ऐसे ही टापू में लेजाकर छोड़ दिया, जब जहाज लेकर अपने घर को मुड़े हर एक ओर से उस टापू के मनुष्य झुंड के झुंड इन दोनों के पास आये धनवान् ने जब देखा कि न तो मेरे पास यहां सिपाही हैं और न चोबदार बल्लमबर्दार और सवार हैं अकेला इन जंगली मनुष्यों में आन पड़ा हूं और इनकी बोली भी नहीं समझता तब तो बहुत डरा और घबराया यहां तक कि घिघियाने लगा और हाथ जोड़ २ उनकी मिन्नतें करने लगा बंसफोड़ ने तो जनम से ऐसे ही हाल में दिन काटे थे वह कुछ भी इन बातों पर ध्यान न लाया और इशारों से उनको समझाया कि हम तुम्हारे मित्र हैं लड़ने को नहीं आये तुम्हारी टहल और चाकरी करेंगे तब उन जंगलियों ने भी इशारा किया और बताया कि हम तुम को नहीं सतावेंगे केवल लकड़ी ढोने और मछली पकड़ने का काम तुम से लिया करेंगे ॥

फिर इन दोनों को एक जंगल में लेजाकर लकड़ी के लट्ठे दिखा दिये और इशारा किया कि इनको यहां से उठा लेचलो बंसफोड़ तो अच्छा हृष्ट पुष्ट था झटपट अपने लट्ठों को उठा लाया परन्तु वह

धनवान् दुबला पतला और सुकुमार था काहेको कभी इतना बोझ उठाया था चौथाई भी न पहुंचा सका जंगलियों ने जब यह दशा देखी इस बंसफोड़ को बड़े काम का आदमी ठहराया और इस अमीर को निरा निकम्मा अपाहज समझा बरन इसी ख़याल से बंसफोड़ को तो बहुत सी मछलियां और जंगल के फल नित खाने को दिये और उस अमीर को उतना भी न दिया कि जिससे उसका पेट भरे मिहनत से अमीर की भूख बढ़ गई थी, जो पाता सब खाजाता घर में सदा भूख न लगने का गिला बना रहता था और यहां भोजन न मिलने का गिला रहने लगा दूसरे दिन फिर यही हाल हुआ बेचारा बंसफोड़ झटपट अपना सारा काम करके छुट्टी पागया, अमीर की पसलियां दोही लट्ठों के ढोने में ढीली होगई निदान वह जंगली मनुष्य बंसफोड़ का बड़ा आदर करने लगे ।

उस धनवान् अमीर की आंखें खुलीं और अच्छीतरह जान गया कि मैंने अपने सामने एक मनुष्य को जो सब आपस में भाई हैं तुच्छ समझने में बड़ी भूल की एक दिन ऐसा सयोग हुआ कि उन टापूवालों में से किसी को कहीं एक कपड़े की धज्जी मिलगई उसने वह धज्जी अपने माथे पर बांधी और एक बड़ा उत्तम गहना समझ के मारे आनन्द के नाचता फिरा बंसफोड़ ने यह हाल देख कर जंगल से नरकट तोड़े और उन्हें काट २ कर बड़ी चतुराई से एक माला बनाई और जो मनुष्य पहिले उसके पास आया उसको पहनाई उस जंगली मनुष्य को वह नरकट की माला मानो नौलखा हार था मारे खुशी के वह उछल २ कर कूदने और दौड़ २ कर अपने संगी साथियों को दिखाने लगा थोड़ी देर में बंसफोड़ के आस पास एक भीड़ सी लगगई हर एक मनुष्य यही इशारा करता था कि हमको भी एक ऐसी माला बनादो निदान लोगों ने उस बंसफोड़ से लट्ठे ढुलाने तो बन्द कर दिये और माला गुथवाने का काम उसके सिपुर्द किया और सब उसकी बड़ी खुशामद करने लगे अच्छे से अच्छा भोजन जो कुछ कि वहां होता उसको खिलाते और रहने के लिये एक छप्पर छा दिया परन्तु उस धनवान् में न तो इतना बल था कि लट्ठे ढोता और न कोई गुण था कि जिससे

उन जंगलियों को प्रसन्न करता नाचार उन्हो ने उसे बंसफोड़ का टहलुआ बनाया और हुकम दिया कि माला बनाने को उसके लिये जंगल से नरकट काट लाया करे कई महीने के पीछे हाकिम ने जहाज भेज कर उन दोनों को फेर अपने देश में बुलाया जब वे दोनों हाकिम के पास पहुंचे तो उसने घुरक कर धनवान् से कहा कि यह बात तो तू अच्छीतरह जानगया कि कैसा तुच्छ और नीच है और जिस मनुष्य को तूने तुच्छ और नीच जाना था तू उससे कितना बढ़कर अधमतर है अब मै तुझ से इस गरीब का जो कुछ तूने नुकसान किया है उसका बदला चुकवाऊंगा जो मैं तेरे अपराध की पूरी सजा दूं तो तुझे अपना सारा घरबार और मालमता इस बंसफोड़ को दे देना पड़े क्योंकि तूने उसका सारा घरबार जमापूंजी फूंक दी थी परन्तु इस बिचार से कि अब आगे को तू कुछ आदमीयत सीखे आधा माल दिलवाता हूं जा जो कुछ धन पूंजी तेरे पास है आधा बंसफोड़ को बांट दे बंसफोड़ ने धन्यवाद करके बिनती की कि दीनदयाल मैंने अपने दिन सदा गरीबी में काटे हैं और टहल धंधा करके पेट भरा है मुझ को इस धन की हर्गिज चाह नहीं मै धन लेकर क्या करूंगा बरन मैं तो यह भी नहीं जानता कि दौलत कौन सी बलाय है जो आप मुझ को मेरा पलटा दिलवाना चाहते हैं तो इतना कर दीजिये कि यह मुझे उसी तरह की सब चीजें जैसी कि मेरे पास थीं और इसने फूंक दी इकट्ठी कर देवे और आगे को आदमीयत सीखे ॥

वह धनवान् उस बंसफोड़ की यह सामर्थ्य और धीरज देखकर और भी हक्का बक्का होगया और जनमभर उसके साथ जो दोस्ती का हक है निबाहा और फिर कभी किसी गरीब को न सताया बरन अपनी सारी संपत्ति उन्हीं के काम में लाया ॥

जब कहानी पूरी हो चुकी, तामी बोला कि वाह क्या अच्छी कहानी है परन्तु जो मैं कभी बंसफोड़ होता तो अवश्य उस अन्यायी धनवान् का आधा धन बंटवा लेता, हारी ने कहा कि मैं तो कभी ऐसा न करता जो उसका धन लेता मैंभी अवश्य अभिमानी, और आलसी और मनुष्यों का दुखदाई होजाता ॥

निदान बारलो साहिब इन दोनों लड़कों को लेकर हर रोज सबेरे के समय अपने बाग में काम करते और जब थकजाते बंगले में आकर सुस्ताते, हारी का पढ़ना दिन पर दिन सुधरता जाता था अच्छी २ कहानियां पढ़ा करता और तामी उनको बहुत मन लगाकर सुनता इस अर्से में हारी एक अठवाड़े की छुट्टी लेकर घरगया और वहां केवल तामी और बारलो साहिब रह गये॥

जब अपने मामूली वक़्त पर बाग से काम करके बंगले में आये तामी बाट देख रहा था कि हारी के बदले बारलो साहिब आपही कोई कहानी पढ़कर सुनावेंगे परन्तु साहिब को कुछ जरूरी काम ऐसा लग गया कि वे उसकी आस पूरी न करसके दूसरे और तीसरे दिन भी ऐसाही संयोग हुआ तब तो तामी से न रहागया घबरा कर अपने मन में कहने लगा कि जो मैं भी हारी की तरह पढ़ सक्ता काहे को किसी दूसरे का आसरा ढूढ़ता मै आप अपना मन बहला सक्ता इससे यही ठीक है कि जो बात हारी ने पैदा की उसको मैं भी क्यों न सीख लूं इसमें सन्देह नहीं कि हारी बहुत होशियार है परन्तु बिना सिखाये तो उसको भी पढ़ना न आया होगा जो कोई आदमी मुझे सिखावे तो मैं भी जरूर उसी तरह पढ़ने लगूं खैर कुछ चिन्ता नहीं जब हारी अपने घर से आवेगा मैं उससे पूछूंगा तामी इसीतरह अपने मन में पढ़ने का बिचार बांधता रहा दूसरे दिन हारी भी अपने घर से आगया जब दोनों अकेले हुए तो तामी ने पूछा कि हारी जरा यह तो बतलाओ कि तुम ने पढ़ना क्योंकर सीखा॥

हारी ने जवाब दिया कि मुझ को पहिले तो बारलो साहिब ने अक्षर बतला दिये और फिर उनका आपस में जोड़ना सिखा दिया धीरे २ मैं किताब पढ़ने लगा तामी बोला कि फिर क्या तुम इसीतरह मुझ को भी अक्षर नहीं पहिंचनवा सक्ते हारी ने कहा क्यों नहीं, मैं तन मन से हाजिर हूं आप बेशक सीखिये, तब हारी ने एक किताब उठाकर अक्षर बताने शुरू किये तामी ने थोड़ीही देर में सारे अक्षर सीखलिये और इस बात से ऐसा अपने मन में प्रसन्न हुआ कि चाहा तुरन्त दौड़कर बारलो साहिब से जा कहे परन्तु फिर मन में

यह सोचकर रहगया कि जो चुपचाप मैं ऐसी ताक़त पैदा कर लूं जिससे हारी की तरह किताब पढ़ने लगूं तो बारलो साहिब को ज़रा अपनी चालाकी दिखला सकूं और उन्हें बड़े अचरज में लाऊं निदान यह पढ़ने में इतना मन लगाने लगा और मिहनत करने लगा और हारी भी इसको ऐसी मिहनत से बतलाने लगा कि दोही महीने में उसको किताब पढ़ने की ताक़त होगई जब तामी ने देखा कि अब तो मैं भी बिना किसी की मदद के हारी की तरह फर्राटे के साथ किताब पढ़सक्ता हूं तो एकदिन जब वह सब बंगले में इकट्ठे हुए और हारी ने पढ़ने के लिये किताब उठाई तामी ने उठकर और हाथ जोड़कर बारलो साहिब से कहा जो आप की आज्ञा हो तो मैं भी कुछ पढ़कर सुनाऊं बारलो साहिब ने कहा कि मेरी सब तरह से आज्ञा है परन्तु पढ़ने की आज्ञा मांगना मैं आप के लिये वैसाही समझता हूं कि जैसे आप कभी आसमान में उड़ने की मांगते, तामी मुसकुराया और किताब लेकर बहुत अच्छे ढब से फर्राटे के साथ यह कहानी पढ़ने लगा ॥

॥ दो कुत्ते की कहानी ॥

कहीं किसी ग़रीब चरवाहे को दो पिल्ले उस जात के हाथ लग गये कि जो अच्छे डीलडौल और लड़नेभिड़ने के काम के होते हैं उसने उनमें से एक तो अपने गांव के ज़मींदार को जो बहुत बड़ा आदमी था और शहर में रहता था भेट किया और एक को अपने पास रक्खा ज़मींदार ने अपने कुत्ते का नाम झबड़ा रक्खा और चरवाहे ने अपने कुत्ते का नाम रखवाला मुक़र्रर किया ज़मींदार ने झबड़े को अपनी रसोईं में भेज दिया वहां रसोईदार और टहलुये उसके साथ खेला करते और वह भी पूंछ हिला २ कर उनका पांव चाटा करता दिनभर उसे रसोईं मेंसे रोटियां और और खाने की चीज़ें मिला करतीं सिवाय इसके जब कभी वह नौकरों को ग़ाफ़िल पाता जो कुछ रसोईं में खाने पीने की चीज़ रहती ले भागता थोड़े दिनों में यह कुत्ता बड़ा मोटा ताज़ा चिकना चुपड़ा होगया यद्यपि देखने में बहुत प्यारा मालूम होता पर कम हिम्मत इतना कि अपने से आधे डीलडौल वाले कुत्ते का भी सामना न करता बरन पूंछ दबाकर अपनी राह

लेता इसमें संदेह नहीं कि दोनों पिछले पैर से खड़ा होना और पूंछ हिला २ कर लोगों की खुशामद करना और मुंह में लाठी या मशाल लेकर चलना यह बातें उसने ऐसी सीख ली थीं कि जो उसे देखता पुचकारता और पीठ पर हाथ फेरता, चीज ले भागने और कम हिम्मती के ऐबों पर कोई भी खयाल न करता दूसरा कुत्ता जो चरवाहे के झोंपड़ों में रहा करता वह न यह छल छिद्र सीखा और न बेचारा मोटा ताजा हुआ इसका मालिक गरीब आदमी था ऐसी किसी चीज का भी खर्च नहीं उठासक्ता था जिससे उसका कुछ काम न निकले और सदा जंगलों में आंधी पानी के बीच भी अपनी रोजी के लिये घूमा करता, रखवाला उसके साथ रहते २ अच्छा मजबूत चालाक और मिहनती होगया था बहुधा उसने भेड़ों के गल्लों की चौकसाई में भेड़िये का भी सामना किया यद्यपि कई बार भेड़िये के दांतों का घाव खाया परन्तु इस नितके लड़ाई झगड़े में वह ऐसा दिलेर और हिम्मत का शेर बनगया था कि कैसाही दुश्मन उसके सामने क्यों न आता वह कभी पीठ न दिखलाता भेड़ों की चौकसाई ऐसी करता कि जब से यह कुत्ता आया कभी किसी भेड़ का नुक़सान न हुआ, नमक की शर्त ऐसी अदा करता कि चाहे जितनी खाने की चीज़ अकेले मकान में उसके सामने भूख के समय भी क्यों न रक्खी हो वह कभी आंख उठाकर उसकी ओर न देखता जो कुछ रूखा सूखा रोटियों का टुकड़ा उसका मालिक दे देता उसी पर संतोष करता॥

संयोग से एक बेर वह ज़मींदार किसी काम के लिये अपने इलाक़े पर आया झबड़ा भी उसके साथ था जमींदार ने रखवाले को झबड़े के आगे तनछीन और मन मलीन देखकर अपने जी में बहुतही निकम्मा और बेक़दर समझा कहीं एकदिन वह ज़मींदार हवा खाता हुआ जंगल की ओर चला गया और सिवाय इन दो कुत्तों के उसके साथ और कोई न था उस समय अचानचक एक बड़ा सा भूखा भेड़िया अंगारों की तरह उसकी आंखें चमकती हुई एक कोने से इस फुरती के साथ निकल कर झपटा कि ज़मींदार के तो देखतेही औसान जाते रहे और यक़ीन जाना कि बस अब

यह मुझे खाजावेगा झबड़ा भेड़िये की गंधही पाकर पूंछ दबाकर चिल्लाता हुआ घर को भागा परन्तु इस रखवाले ने उस भेड़िये का सामना किया और खूब लड़ा यहां तक कि सारा लोहू लुहान होगया आखिर उस भेड़िये को मारही लिया तब तो जमींदार की आंखें खुलीं और इस परीक्षा से उसके मन में यह बात अच्छीतरह साबित होगई कि निरन्तर सब चीज़ों की जाहिरी सूरत पर भरोसा न करना चाहिये बहुधा ऐसा होता है कि जो बातें नेकी और भलाई की बड़े आदमियों में नहीं पाईजातीं, वो झोंपड़ों के रहनेवालों में मिलजाती हैं निदान वह जमींदार उस रखवाले कुत्ते का मन में बड़ा इहसानमन्द हुआ और जिन्दगीभर इस जांच को सांच कर मानता रहा ॥

जब कहानी यहांतक पहुंची तो बारलो साहिब ने तामी को शाबाशी दी और बड़ाई की और कहा कि बेशक जो अमीरों के लड़के भी मिहनत करना अंगीकार करें तो और लोगों की तरह जो काम चाहें अच्छी तरह कर सक्के है और पढ़ना लिखना भी सीख सक्के हैं, परन्तु तामी अब तुम यह बतलाओ कि जो तुम्हारे सामने वे दोनों कुत्ते आवें तो तुम झबड़े को पसंद करो या उस दुबले पतले ग़रीब रखवाले को, तामी ने कहा कि मैं बेशक उस रखवाले को पालूंगा, अच्छी तरह सेवा करूंगा, नहलाऊंगा साबुन से धुलाऊंगा कंघी करूंगा, और खूब खिलाऊंगा निदान झबड़े से भी उसका सुन्दर रूप बनाऊंगा बारलो साहिब बोले कि तब वह झबड़े के बराबर मोटा, निकम्मा सुस्त और कम हिम्मत हो जावेगा परन्तु अब इस कहानी को पूरी करो तामी ने फिर पढ़ना शुरू किया। वह जमींदार रखवाले कुत्ते सें इतना खुश हुआ कि चरवाहे से उसे मांग लिया और अपने साथ शहर को लेगया और झबड़े पर खफ़ा होकर यों कहकर उस चरवाहे को देगया कि इसे गरदन में रस्सी बांध कर किसी पेड़ से लटका देना जिस से यह निकम्मा कुत्ता फांसी पाकर अपने दंड को पहुंच जावे ।

जब जमींदार रखवाले कुत्ते को लेकर शहर को चला गया और चरवाहे ने झबड़े के गले में रस्सी बांध कर चाहा कि किसी ऊंचे

पेड़ में फांसी देवे परंतु उसका अच्छा डील डौल और दुम हिला हिला कर उछलना कूदना और पैरों में सिर देना देखकर उसके मन में कुछ दया सी आगयी और सोचा कि फांसी देना तो अपने हाथ में है परन्तु कुछ दिन इसको भी रखवाले की तरह रख के देखें क्या जानें यह भी उसके से रंग ढंग पर आजावे निदान झबड़े को भी उस रखवाले कुत्ते की तरह वही रूखी सूखी रोटियां मिलने लगीं ज्यों ज्यों दुबला होता गया उसकी तेजी और चालाकी बढ़ती गयी एक दिन जो दो चार छींटे मेह के पड़े तो तुरन्त दौड़कर जैसी कि ज़मींदार के घर की बान पड़ी हुई थी अलाव के पास आकर सोरहा चरवाहे की बहू ने लात मारी और उसी बरसते मेह में बाहर निकाल दिया यहां तक कि सर्दी गर्मी सहते २ वह बड़ा मजबूत और लड़नेवाला होगया और फिर उसी रखवाले की तरह बाहर मैदान में पड़ा रहने लगा परन्तु डरता बहुत था जंगली जानवरों की आवाज से भागता यहां तक कि एक दिन किसी भेड़िये ने उसे जंगल में दबालिया, जब जान पर आई तब तो उस ने भी खूब उस का सामना किया संयोग से उस भेड़िये का टेंटुआ झबड़े के मुंह में आगया तुरन्त उसे फाड़ डाला इतने में चरवाहा भी वहां आ गया खूब पुचकारा और ठोंका झबड़े का मन बढ़ा जैसा पहिले गीदड़ था वैसाही अब शेर हुआ जंगली जानवरों पर हल्ला करने में गांव के सारे कुत्तों से आगे रहता, अब रखवाले का हाल सुनिये कि जिस दिन से शहर में ज़मींदार के घर गया न वहां भेड़ियां थीं कि वह उनकी रखवाली करता और न कहीं घाती उत्पाती जानवर थे कि वह उनका शिकार मारता केवल खाने और सोने से काम था दस्तूर है कि बान न रहने से सारी बातें दूर होजाती हैं थोड़ेही दिन में वह उसकी दिलेरी मज़-बूती और चालाकी तो जाती रही परन्तु जो जो ऐब कि सुस्ती काहिली और बहुत खाने से होते हैं उन सब में वह पूरा होगया ॥

कुछ दिनों के पीछे वह ज़मींदार फिर अपने इलाके पर आया रख-वाले कुत्ते को भी साथ लाया चाहा कि जैसा उसने पहले भेड़िये का

शिकार देखा था फिर वह तमाशा देखे जंगल में पता लगा कर रखवाले कुत्ते के साथ भेड़िये की तलाश में चला, थोड़ीही दूर गया था कि दैवात सामने से एक भेड़िया भी आगया परन्तु शिकार के तमाशे के बदले क्या तमाशा देखा कि भेड़िये की सूरत देखतेही वह उसका प्यारा कुत्ता रखवाला, दुम दबाकर एक ओर को भाग गया और पीछे से एक दूसरा कुत्ता झपट कर आया और उसनें उस भेड़िये को ऐसा दबा लिया कि फिर वह अपनी जगैह से न उकसा जमींदार यह देख कर बड़ा हैरान हुआ परन्तु जब झबड़े को पहचाना जो उस मुर्दे भेड़िये की छाती पर कूदरहा था उसे और भी दूना अचरज हुआ चरवाहे से पुकार कर कहा कि सुन अब मेरे मन में यह बात अच्छी तरह आगई कि जो अपनी जिन्दगी काहिली और सुस्ती में काटते हैं उनसे साहस का भरोसा रखना बड़ी भूल है और मिहनत और अच्छे काम करने से तुच्छ और मूर्ख मनुष्य भी भले और अच्छे काम के बन जाते हैं॥

कहानी पूरी हुई तो बारलो साहिब बोले कि सच मेरा मन इस बात से बहुत प्रसन्न हुआ कि तामी ने भी पढ़ना सीखलिया अब उस को किसी दूसरे की मदद न लेनी पड़ेगी जब चाहेगा आप अपना मन बहला सकेगा जितनी बातें आजतक किताबों में लिखी गई हैं अब उन सबका ढूंढ़ना और जानना उसके आधीन होगया चाहे वह ऐसी छोटी २ मन बहलाव की कहानियां पढ़ा करे जैसी कि अभी पढ़ी गई है चाहे वह इतिहासों में जो बड़े २ नामी और नेकलोग होगये हैं उनका हाल देखे चाहे वह भांति २ के पशु पक्षी और जीव जन्तु का हाल दर्याफ़्त करे चाहे मछली मगर और तरह २ के फूल फल का ब्योरा जानले निदान मेरी समझ में कोई ऐसी बात नहीं आती कि जिसका मालूम करना अब तामी को कठिन हो और भरोसा है कि वह किसी दिन ऐसा होशियार हो जायगा कि औरों को सिखला सकेगा॥

तामी इस बात से फूल कर बोला कि साहिब मैं अब इस बात पर मन से उतारू हुआ हूं कि जो कुछ सीखने की चीजें हैं सब अच्छी तरह सीखूं यद्यपि मैं अभी देखने में निरा बच्चा हूं परन्तु तिसपर भी देखिये

कितना सीखगया हूं कि बहुतेरे बड़े न जानते होंगे हमारे घर में छः सात हबशी गुलाम हैं परन्तु ऐसा उनमें कोई भी नहीं कि जो इस कहानी की एक सतर पढ़ सके बारलो ने जब देखा कि तामी घमंड में दून ले रहा है और फूला चला जाता है कुछ रूखे फीके बनकर कहा कि साहिबजादे भला यह तो बताओ कि उन गुलामों को कभी किसी ने कुछ सिखाने की भी कोशिश की है, तामी ने यह सुनकर जवाब दिया कि नहीं, इस बात की कोशिश तो कभी किसी ने नहीं की तब बारलो साहिब ने कहा कि फिर जो वह मूर्ख रहे तो इसमें कौन अचरज की बात हुई इसीतरह जो तुम को भी कोई न सिखलाता तो तुम भी मूर्ख बने रहते बरन इस सिखलाने पर भी अभी तुमने बहुत थोड़ा सीखा है ॥

बारलो साहिब इसीतरह से तामी को दिन २ दुरुस्त करने लगे स्वभाव उसका बहुत अच्छा था केवल किसी की उसपर ताकीद और दाब न रहने के कारण उसकी बान बिगड़ गई थी तेजी और चालाकी उसके मिज़ाज में ज़ियादा आगई थी उसके मन में यह समागई थी कि सारी दुनिया के आदमी जो हमारे से अच्छे बढ़िया कपड़े नहीं पहन सके मानो हमारी सेवाही के लिये पैदा हुए हैं बहुधा वह अपनी इस कच्ची बुद्धि से बहुत दुख और आफ़तें झेलता एकादिन का जिकर है कि तामी गेंद उछाल रहा था संयोग से उसका गेंद खावें के पार एक खेत में जा पड़ा वहां उस समय एक छोटा सा छोकरा लगोटी बाधे खड़ा था उसको तामी ने घुरक कर कहा कि इस गेंद को उठादे छोकरे ने उसकी ओर निगाह उठा कर देखा भी नहीं और अपना काम करता रहा तामी ने फिर चिल्ला कर पूछा क्या तू बहरा है, यह सुन कर उस छोकरे ने जवाब दिया कि नहीं साहिब मैं बहरा नहीं हूं तब तो तामी और भी तेज हुआ और धमकाया कि तू अपना भला चाहता है तो तुरन्त गेंदा उठाला परन्तु वह छोकरा बोला कि मुझ को ऐसी गरज नहीं, तामी पुकारा कि बचा सीधी तरह से तू मेरा गेंद नहीं उठालाता तो मैं खावां फांद कर अभी तेरा भुरता कर डालूंगा वह छोकरा केवल हंस-

कर चुप होरहा कुछ जवाब न दिया तामी के गुस्से की आग और भी भड़की खावें पर चढ़कर चाहा कि खेत में कूदे परन्तु पांव जो कहीं फिसला तो कीचड़ भरी खंदक में जा पड़ा बहुतेरा चाहा कि बाहर निकले परन्तु पांव दल २ में धस गये थे, उसके वह सब बढ़िया कपड़े कीचड़ में लथ पथ होगये जूते दोनों उसी जगह फसरहे टोपी भी उसकी लैस लगी हुई गिरकर उसी कीचड़ पानी में मिलगयी और यक़ीन था कि वह उसी हालत में बड़ी देर तक पड़ा रहता परन्तु उस लंगोटिये छोकरे को दया आई उतर कर तामी को उस आफ़त से निकाला तामी मारे शरम के गर्दन न उठासका आंख नीची किये उसी कीचड़ में सना हुआ घर को गया बारलो साहिब उसका यह हाल देख कर बहुत डरे कि शायद उसने कोई बड़ी चोट न खाई हो परन्तु जब उसने अपना सारा हाल सुनाया तो बारलो साहिब खिलखिलाकर हंसपड़े और कहा कि अब फिर कभी ऐसे गरीब छोकरों का भुरता करने का बिचार न करना ॥

दूसरे दिन अपने मामूल मुताबिक जिससमय सबलोग उस बंगले में इकट्ठे हुए बारलो साहिब के कहने से तामी ने यह कहानी पढ़नी शुरू की ॥

॥ अन्द्रोकलीस और सिंह की कहानी ॥

अन्द्रोकलीस एक ऐसे निर्दयी कठोर आदमी के हाथ गुलामी में बिका कि वह सदा उसपर ज़ुल्म और ज़ियादती करता रहता था यहां तक कि उसने अपने मन में भागने का बिचार किया और अच्छी तरह सोच लिया कि जो पकड़ा भी आऊंगा तो फांसी पाकर इस नित्य की आपत्ति से छूट जाऊंगा निदान वह वहां से निकल दिन भर तो किसी कटीले जंगल में चारों ओर दौड़ता और भटकता फिरा और सांझ के समय थका मांदा भूखा प्यासा एक बड़ी सी मांद के मुंह पर पड़रहा ॥

हारी से उस गुलाम का दुख सुनकर न रहागया बोल उठा कि जो मैं वहां पहुंच सकता तो अपनी सारी खुराक और पोशाक उसके भेट करता परन्तु साहिब भला इसका कारण तो मुझ को बता दीजे कि

आदमी आपस में क्यों एक दूसरे पर ज़ियादती करते हैं और मालिक क्यों अपने नौकरों को इस तरह सताते हैं।

तामी ने कहा इसमें कौनसा अचरज है दुनिया में कोई अमीर के घर पैदा होता है और कोई ग़रीब के यहां, अमीर हुकूमत के लिये पैदा हुए और ग़रीब हुक्म बजाने और टहल करने के वास्ते, मेरे घर में भी बहुतेरे हब्शी लौंडी गुलाम हैं और मेरी मा कहती थी कि वे केवल मेरी टहल और हुक्मबजाने के लिये पैदा हुए हैं बहुधा उनको लात घूंसे भी मारा करता हूं बरन जब क्रोध में आता हूं उनपर ढेले चलाता हूं परन्तु उन गुलामों का कभी यह हियाव नहीं पड़ता कि मुझ पर हाथ उठावें ॥

बारलो साहिब ने पूछा कि साहिबज़ादे, वे हब्शी तुम्हारे गुलाम क्योंकर हुए ॥

तामी । उनको मेरे बाप ने रुपया देकर मोल लिया है ॥

बारलो साहिब । तो जो रुपये देकर गुलाम मोल लेते हैं उनपर अधिकार रखते हैं कि चाहें लात मारें चाहे घूंसा अथवा चाहें जिस तरह से उनपर ज़ियादती करें ॥

तामी । हां बेशक ॥

बारलो साहिब । भला जो मैं तुम को सेन्डफ़ोर्ड ज़मींदार के हाथ बेचडालूं तो उसको अधिकार होगा कि जो चाहे सो तुम्हारा करे ।

तामी । नहीं साहिब यह बात कभी नहीं हो सकती आप को मेरे बेचने का क्या अधिकार है और वह मुझको क्योंकर मोल ले सकता है ।

बारलो साहिब । हां तो यह बात कुछ आदमी के बिकने और मोल लेने पर नहीं है कि कोई उसपर ज़ियादती करे बरन ख़रीदने और बेचने के अधिकार रहने के आधीन है ।

तामी । ठीक ।

बारलो साहिब । अच्छा अब तुम यह बताओ कि जिसने उन हब्शियों को तुम्हारे बाप के हाथ बेचा उसे इस बात का क्या

अधिकार था और तुम्हारे बाप को उनके मोल लेने का क्योंकर अधिकार हुआ।

तामी। पहले तो कुछ निरुत्तर सा होकर आगा पीछा करने लगा परन्तु अन्त को बोला कि साहिब इन हब्शियों को काले कोसों से जहाज़ में चढ़ाकर यहां लाते हैं इस कारण उनको ग़ुलाम बनाते हैं।

बारलो साहिब। जो मैं तुम को जहाज़ में चढ़ा कर किसी दूर देश में लेजाऊं तो फिर मुझे भी तुम्हारे बेचने और ग़ुलाम बनाने का अधिकार हासिल होगा।

तामी। कभी नहीं आप को हर्गिज़ यह अधिकार न होगा, क्योंकि मैं धनवान् का लड़का हूं।

बारलो साहिब। धनवान् के लड़के से तुम्हारा क्या मतलब है।

तामी। देखिये मेरा मकान कैसा आलीशान है और कपड़े भी मेरे कैसे अच्छे हैं गाड़ियां मेरे घर में दो २ बरन चार २ घोड़ों की सवारी को मौजूद हैं और रुपया भी मेरे बाप के पास बहुतेरा है।

बारलो साहिब। इस बात की कुछ चिन्ता नहीं परन्तु जो तुम्हारे पास यहां मकान और कपड़े और गाड़ियां और रुपये बाकी न रहें तो कोई ऐसीही चीज़ों वाला आदमी तुम्हारे कहने मुताबिक बेशक तुमको ग़ुलाम बनाकर जो चाहे दुख देसकता है और जो चाहे सो तुम्हारा करसकता है।

तामी। नहीं साहिब यह बात कभी उचित न होगी कि मुझ को कोई आदमी दुख देवे।

बारलो साहिब। शायद यह कहने से तुम्हारा यह मतलब है कि आदमीको आदमी का सताना उचित नहीं।

तामी। हां साहिब यही मेरा मतलब है।

बारलो साहिब। तो फिर किसी को ग़ुलाम बनाना क्या उस को दुख देना नहीं है॥

तामी । ऐसा तो समझ में आता है ।

बारलो साहिब । जो गुलामी से लोगों को दुख पहुंचता है और आदमी को दुख देना अनुचित ठहरा तो तुम को भी किसी को गुलाम बनाना न चाहिये ।

तामी । आप बहुत ठीक कहते हैं परन्तु अब मैं अपने गुलामों को कभी दुख न दूंगा न कभी उनको चुटकियां काटूंगा न कभी उन को लात घूंसों से मारूंगा हां पहले बेशक मैंने यह काम किये हैं ।

बारलो साहिब । जो तुम अपने कहने पर ध्यान रक्खोगे बेशक अच्छे लड़कों में गिने जाओगे ख़ैर कहानी ख़तम करो ।

तामी ने पढ़ना शुरू किया बेचारा आस्मान का मारा अन्द्रोकलीस अभी उस मांद के आगे जाकर लेटाही था कि एक ओर से सिंह की भयावनी आवाज़ सुनाई दी तब तो बहुत डरा और चाहा कि भागे परन्तु वह सिंह साम्हनेही आपहुंचा मांद उसी सिंहके रहने की थी जब अन्द्रोकलीस ने देखा कि अब भागने की राह किसी ओर न रही अपनी जान से हाथ धो बैठा परन्तु सिंह बेचारा बिपत का मारा उस से कुछ भी न बोला बरन धीरे २ उसके साम्हने बढ़ता चला आया और कुछ कराहने और रोने की सी आवाज़ करने लगा कि मानो उस को कुछ दुख दर्द है और दूसरे की सहायता चाहता है अन्द्रोकलीस को, इस दशा के देखने से मन में ढाड़स बंधी और बिचार किया तो जान पड़ा कि यह सिंह लंगड़ाकर चलता है और पैर उसका एक घाव होजाने के कारण बहुतही सूज रहा है तब तो यह बेधड़क उस सिंह के पास चला गया और उसके पैर को डाकतरों की तरह हाथ में उठाकर देखा उसके पंजे में एक बड़ासा कांटा चुभ गया था उसी कारण से वह इतना सूजा था निदान अन्द्रोकलीस ने जब जाना कि यह सिंह कुछ नहीं बोलता बरन बहुत प्यार से अपनी पूंछ हिलाता है तो उसने बेखटके कांटा खींच लिया और पंजे को दबाकर जो कुछ पीप उसमें इकट्ठी हुई थी सब बाहर करदी जब कांटे के निकलने से सिंह को आराम मिला तो वह अन्द्रोकलीस के आगे हर तरह अपनी



खुशी और इहसानमन्दी की बातें दिखाने लगा कभी उछलता कूदता कभी अपनी पूंछ हिलाता और कभी अन्द्रोकलीस के हाथ पैर चाटता निदान उस दिन से यह अन्द्रोकलीस उस सिंह का मेहमान हुआ, जो शिकार लाता अन्द्रोकलीस के साम्हने रख देता यह उसी शिकार से अपना पेट भरता, कई महीने इसी रीति से बीत गये अंत को हाकिम के पियादों ने जो अन्द्रोकलीस के पकड़ने के लिये छूटे थे जंगल में ढूढ़ते २ एक दिन उसे पकड़ लिया उस देश का दस्तूर था कि जो गुलाम अपने मालिक के पास से भाग जाता उसको सिंह के साम्हने डाल देते थे अन्द्रोकलीस के वास्ते भी यही हुकम हुआ और मामूल बमूजिब एक सिंह को जगल से पकड़ लाकर उसके खिलाने के लिये कई दिन पिंजरे में भूखा बन्द कररक्खा जब वह समय जो इस काम के लिये ठहरा था आ पहुचा और हजारों आदमी इस भयंकर तमाशे को देखने के लिये इकट्ठे हुए अन्द्रोकलीस को खाली हाथ एक बड़े से हाते में जो इस काम के लिये बना था लाकर खड़ा कर दिया और फिर थोड़ी देर के पीछे वह भूखा सिंह भी पिंजरे में से छोड़ा गया यद्यपि पहिले तो वह सिंह बहुतही गरजा और तड़पा और पूंछ उठाये क्रोध मे भरा अन्द्रोकलीस के सामने आया परन्तु अन्द्रोकलीस की सूरत देखतेही तुरन्त आग से पानी होगया जैसे कोई अपने बच्चे को देखकर खुश होजाता है इसी तरह वह सिंह भी खूब पूंछ हिलाने लगा झुक झुक कर उसका तलुवा चाटने लगा क्योंकि यह वही सिंह था जिसके पांव से अन्द्रोकलीस ने कांटा निकाला था निदान सबलोग यह दशा देखकर बहुतही अचम्भे में आये और हाकिम ने अन्द्रोकलीस से इस अचम्भे की बात का भेद पूछा।

अन्द्रोकलीस ने उस सिंह के पांव से कांटा निकालने और बहुत दिनों तक उसके यहां मेहमान रहने का सारा अहवाल अच्छी तरह कह सुनाया जितने आदमी उस जगह जमा थे सब के सब इस बात के सुनने से कि पशु भी आदमी का इहसान मानता है और उस के मन में भी धन्यबाद की जगह है, बहुत ही खुश हुए और सबने मिलकर हाकिम से अन्द्रोकलीस के अपराध की क्षमा चाही हाकिम ने उस

का अपराध भी क्षमा किया और वह सिंह भी उसके हवाले किया।

तामी। वाहवाह यह कहानी बहुतही मनोरंजन पढ़ी गयी यह बात कभी मेरी समझ में न आई थी कि सिंह आदमी के साथ इतना हेल मेल कर सकता है मैं यही जानता था कि सिंह चीते और भेड़िये इत्यादि बधिक जीव जिस को पाते हैं फाड़ ही डालते हैं।

बारलो साहिब। जब वे भूखे होते हैं तो अपना पेट भरने के लिये बेशक जीवधारियों को सताते हैं और मारते हैं क्योंकि केवल मांसही के आहार से उनका जीवन है भगवान् ने उनके दांत ऐसे नहीं बनाये कि जिससे घासपात चर चुग सकें परन्तु जब भूख नहीं रहती तो संयोगही पाकर किसी को सताते हैं अब मेरी जान में वे बधिक जीव लड़कों से बहुत कम दुखदाई हैं कि जो नाहक और बेसबब जीवधारियों को सताते और दुख देते हैं।

हारी। ठीक है साहिब मेरी भी यही राय है मुझे याद पड़ता है कि एक दिन मैं किसी ओर को जाता था रास्ते में क्या देखता हूं कि एक छोकरा मेरी उमर का लंगड़े गधे पर उसके बल से दूना बोझा लादे लिये जाता है बेचारा गधा बड़ी कठिनाई से पांव उठाता था परन्तु वह निरदई निरमोही नीच छोकरा उसको बेधड़क डंडे मारता था।

बारलो साहिब। तुमने भी उसे कुछ कहा था।

हारी। मैंने उसको समझाया कि यह बात बहुत बुरी है और कहा कि जो कोई तुझ से बलवान् अभी तेरी पीठ पर इसी तरह बोझा लाद कर डंडों से मारना शुरू करे तो फिर तेरा क्या हाल हो।

बारलो साहिब। तब उसने क्या जवाब दिया।

हारी। उसने जवाब दिया कि यह मेरे बाबाजान का गधा है जितना मेरा जी चाहेगा मारूंगा तू कौन होता है जो सिवाय कुछ बक बक करेगा तुझे भी मारे डंडों के जितना लम्बा है उतनाही चौड़ा कर दूंगा।

बारलो साहिब। फिर क्या हुआ।

हारी। मैंने उसे कहा जो यह गधा आप के बाप का है तो आप को मुबारक रहे परन्तु आप इसको नाहक डंडे मत मारिये क्योंकि हम सब को एकही भगवान् ने पैदा किया है फिर वह जिस तरह हम सब पर प्यार रखता है हम को भी आपस में सब के साथ प्रीति रखनी चाहिये और यह जो बात आपने मुझ को मारने की कही तो जो आप मुझ को मारेंगे मैं भी मारूंगा उसने यह सुनतेही मेरे सिर पर डंडा चलाया सिर तो मैं बचा गया डंडा कंधे पर आकर लगा परन्तु जब उसने चाहा कि दूसरा वार करें मैंने लपक कर उस को धर दबाया और पछाड़ ही डाला फिर तो वह गिड़गिड़ाने और हें हें करने लगा और हाथ जोड़ कर बोला कि छोड़ दो परन्तु मैंने उससे जब तक कि बेचारे गधे को फिर न मारने का क़ौल न लेलिया उसको न छोड़ा।

बारलो साहिब। तुमने बहुत ठीक काम किया और शायद वह छोकरा भी धरती से उठते समय ऐसा लजाया हो कि जैसा तामी उस लंगोटिये छोकरे की सहायता से कीचड़ भरी ख़न्दक़ के बाहर निकालने पर लजाया था। इसबात से तामी की आंखें नीची हुई बोला कि साहिब जो वह लड़का मेरा गेंद उठा देता तो मैं कभी उसे कुछ न कहता।

बारलो साहिब। परन्तु तुम्हारा अधिकार क्या पहुंचता था कि उससे ऐसी धींगधींगी से अपना गेंद उठवाते।

तामी। ऐ साहिब! यह आप क्या कहते हैं कहां वह लंगोटिया छोकरा और कहां मैं अमीर का लड़का।

बारलो साहिब। तो तुम्हारे कहने बमूजिब हरएक अमीर लंगोटिये छोकरों पर हुक्म चला सक्ता है॥

तामी। हां बेशक।

बारलो साहिब। जो तुम को भी नये कपड़े न मिलें और केवल एक लंगोटी बदन पर बाक़ी रहजाय तो तुम पर भी हर एक अमीर हुक्म चला सकेगा।

तामी इस बात से निरुत्तर हुआ और खिसियाना सा होकर कहने लगा कि साहिब वह उसी खेत में खड़ा था जो ज़रा सा मेरा गेंद उठा देता तो उसका क्या घिस जाता।

बारलो साहिब। यह क्या निश्चय बात थी कि वह तुम्हारा गेंद उठाता ही नहीं परन्तु तुम को उससे बहुत नर्मी और नम्रता के साथ कहना था कडुवे बचन और धमकी से जो आदमी काम करता भी हो तो नहीं करता है परन्तु एक बात मैं तुम से और भी पूछता हूं कि वह छोकरा तुम्हारे कहने से बहुत गरीब और मुहताज मालूम पड़ता है भला तुम ने उसको अपनी गेंद की उठवाई क्या देनी कही थी।

तामी। कहा तो मैंने उसको कुछ भी नहीं और न उस को कुछ दिया है।

बारलो साहिब। क्यों, क्या तुम्हारे पास उससमय कुछ मौजूद नहीं था।

तामी ने जेब खड़खड़ा कर कहा कि नहीं साहिब रुपये तो मेरे पास मौजूद थे।

बारलो साहिब। तो शायद तुम ने उस लड़के को भी अपना सा धनवान् समझ लिया था।

तामी। कभी नहीं उसके पास दौलत कहां लंगोटी में भी उसके सौ पैवन्द लगे होंगे जूता तक पांव में नदारद।

बारलो साहिब। अब मैं अच्छीतरह समझा कि तुम अमीर जिसको कहते हो, अमीर कहने से तुम्हारा मतलब उस से है जो हर एक वस्तु बहुत सी इकट्ठी कर रक्खे और अपने काम में लावे, दूसरे को कभी कुछ देना न चाहे जो गरीब बेचारे सेंत मेंत बेगार में उनका काम न करें तो वह उनको मारे और पीटे और जो वे उसकी बुराई पर निगाह न करके भलाई करें तो यह कभी उनका इहसान तक न माने और कुछ भी उनको उसके बदले में न देवे, अच्छा हुआ कि वह अन्द्रोकलीस वाला सिंह धनवान् था।

तामी यह सुनकर इतना खिसियाना हुआ कि उसकी आंखों से आंसू

टपक पड़े स्वभाव तो उसका असल में अच्छाही था उसी दम उसने अपने मन में ठान लिया कि उस लंगोटिये लड़के को कुछ देना चाहिये सांझके समय जब हवा खाने को बाहर निकला तो देखा कि वही लड़का एक पेड़ पर चढ़ कर जामुन तोड़ रहा है तामी उसके पासगया और पूछा कि छोकरे तू लंगोटी क्यों लपेटे है कपड़े क्यों नहीं पहनता क्या तेरे पास कपड़े नहीं हैं उस ने जवाब दिया कि नहीं साहिब मैं कपड़े कहां पाऊं सात मेरे बहन भाई हैं सब के सब इसीतरह लंगोटी से गुजरान करते हैं परन्तु जो मुझ को पेट भरने के लिये कुछ मिला जावे तो कपड़े की परवा भी नहीं रखता तामी ने पूछा कि फिर क्या तुझ को पेटभर खाने को नहीं मिलता उसने जवाब दिया कि ऐ साहिब हमारा बाबा बुखार के आजार में बीमार है खेत जोतने बोने की ताकत नहीं रखता जो भगवान् हमलोगों की सुध न लेगा तो हम सब के सब भूखों मर जायंगे तामी कुछ न बोला दौड़ कर घर आया और अपने पहरने का एक जोड़ा कपड़ा और रोटी लेकर फिर वहां पहुंचा और उस लड़के को दिया और कहा कि तूने उसदिन मुझ पर बड़ा इहसान किया कि कीचड़ भरी खन्दक से निकाला, ले अब यह मैं तुझे खुशी से देता हूं मैं धनवान् हूं मेरे पास खाने पीने को बहुत है, जितनी खुशी कि इस लंगोटिये छोकरे को उस समय हुई उससे बढ़ के इस बिचार से कि एक आदमी के साथ भलाई की तामी को हासिल हुई नेकी ऐसी ही चीज़ है कि जिसके साथ की जाती है उससे भी सिवाय करने वाले को सुख देती है जब तामी घर आया तो यह माजरा बारलो साहिब को कह सुनाया परन्तु तामी की बातें जरा दून के साथ पाई जाती थीं इसलिये बारलो साहिब ने दूसरी तरह से जवाब दिया, खैर कपड़े जो तुमने उस छोकरे को दिये सो वह तुम्हारे थे तुम को अधिकार है अपनी वस्तु जिस को चाहो उठा दो परन्तु रोटी तो मेरी थी वह तुम ने बिना मेरे पूछे क्यों किसी को दे डाली तामी ने कहा कि साहिब वह बहुतही

भूखा था सात भाई बहन रखता है और बाप उसका बीमार, कुछ भी मिहनत नहीं कर सकता ।

बारलो साहिब । इसबात की चिन्ता नहीं जो वह भूखा और मुहताज था तुम को अधिकार है कि अपनी वस्तु जो चाहो सो उसके हवाले करो परन्तु यह नहीं कि दूसरों की देडालो कहावत है कि सेंत का चावल नानीजी का श्राद्ध जो हारी तुम्हारे सब कपड़े लत्ते उठाकर किसी भूखे नंगे को देडाले तो तुम क्या उसको कुछ न कहोगे ॥

तामी । आपका कहना बहुत ठीक है मुझसे चूकहुई अब आगे को फिर कभी आप की कोई वस्तु बिना पूछे लेकर कभी किसी को न दूंगा ॥

बारलो साहिब । बहुत अच्छा लो यह कहानी पढ़ो इसी बात पर यह कहानी है ॥

॥ कै खुसरो ईरान का बड़ा बादशाह ॥

कै खुसरो में लड़कपन से नीति और शक्ति के चिह्न प्रगट थे कहावत है होनहार बिरवे के चिकने चिकने पात और उस के बाप ने अच्छे अच्छे चुनकर कई उस्ताद उसकी तालीम के लिये रक्खे थे वे उसको सारे संसार की अच्छी बातें सिखलाते थे और वह अपने हम जोलियों के साथ अनेक प्रकार की विद्या सीखता था एक दिन का ज़िकर है कि सांझ के समय जब छुट्टी हुई और कै खुसरो अपने बाप के पास गया तो उसने पूछा कि कहो बेटा आज पाठशाला में क्या समाचार बीते और तुमने कौनसा नया पाठ लिया कै खुसरो ने हाथ जोड़ कर निवेदन किया कि बाबाजान आज मैंने एक झगड़ा निमटाने में अन्याय किया उसकी मुझको सजा मिली, बादशाह ने पूछा कि बेटा तुम को पाठशाला में कौनसा झगड़ा निमटाना पड़ा कै खुसरो ने फिर हाथ जोड़ कर निवेदन किया कि बाबाजान आज ऐसा संयोग हुआ कि पाठशाला में दो लड़के नये कुरते पहनकर आये, छोटे लड़के का कुरता बड़ा था और बड़े का छोटा, बड़े लड़के ने छोटे से कहा कि आओ हम तुम कुरतों का बदला करें मेरा कुरता

तुम्हारे बदन पर ठीक आवेगा और तुम्हारा मेरे बदन पर और दोनों कुरते एकही कपड़े के बने हैं छोटे लड़के ने यह बात मंज़ूर न की तब बड़े ने ज़बर्दस्ती उस का कुरता छीन कर अपना उसके गले में डाल दिया उन दोनों में इस बात की तकरार हो रही थी कि मैं भी जा पहुंचा दोनों ने मुझे पंच माना मैने अपनी राय यह दी कि छोटा लड़का छोटा कुरता रक्खे और बड़ा लड़का बड़ा क्योंकि उस में दोनों का फ़ायदा था और नुक़सान किसी का नहीं इसी अन्याय के करने मे उस्ताद ने मुझे सज़ा दी बादशाह ने पूछा कि फिर इस में बे इन्साफ़ी क्या थी कैखुसरो बोला कि उस्ताद ने यों फ़र्माया कि तुझे इसलिये पंच नहीं बदा था कि कौन सा कुरता किस के बदन पर ठीक आता है बरन इस बात के निमटाने के लिये कि बड़े लड़के ने जो छोटे लड़के का कुरता उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ छीन लिया यह बात उचित अथवा अनुचित, बाबाजान बेशक मुझ से इस में बे इन्साफ़ी हुई इसलिये उस्ताद ने मुझको सज़ा दी ॥

ज्योंही यह कहानी संपूर्ण हुई यह लोग क्या देखते है कि वही लंगोटिया लड़का जिसको तामी ने रोटी और कपड़े दिये थे बगल मे एक गठरी लिये दौड़ा चला आता है आंखे डब डबाई हुई नाक सुड़ सुड़ाता हुआ और जगह जगह शरीर पर नोच खसोट और लोहू के निशान नज़र आते थे, लड़के ने पहुंचतेही वह कपड़ों की गठरी तामी के सामने पटकी और कहा कि लीजिये साहिब यह अपने कपड़े भगवान् का कोप पड़े और इन कपड़ों में आग लगे मुझ से बड़ा अपराध हुआ कि मैंने इन के पहरने का हौसिला किया परन्तु जैसा किया वैसा पाया अब जो मैं आदमी हूं तो जन्म भर ऐसे कपड़ों का नाम न लूंगा पहरना तो एक ओर रहा बारजो साहिब ने पूछा कि क्यों इन कपड़ों ने तेरा क्या बिगाड़ा कुछ अपना हाल तो सुना उसने जवाब दिया कि साहिब हाल यह है कि आप के साहिबज़ादे ने मुझे अपना गेंद उठाने को कहा और धमकाया कि जो न उठावेगा मारते २

भुरता करदूंगा जो वह नर्मी और मुलायमत से कहता मैं उसका गेंद सिर आंखों से उठा देता निस्सन्देह मैं गरीब और रोटियों का भूखा हूं तब भी गुलामी तो किसी की न करूंगा जो वह अमीर है अपने घर खुश रहे जब मैंने वह गेंद न उठाया मुझे मारने के लिये खांबे पर चढ़ कर कूदा संयोग से पैर फिसल कर खंदक में जा रहा। मैंने वहां से उसको निकाला इस कारण मिहरबान होकर उसने मुझे ये कपड़े दिये मुझे भी मूर्खता ने ऐसा घेरा कि इन कपड़ों को पहन कर बाजार में गया, आप जानते हैं कि यह कपड़े अतलस और मखमल के बने हैं इन बढ़िया कपड़ों के पहरने से मेरा एक स्वांग सा बन गया सारे बाजार के लड़के ताली बजाते और होहो करते मेरे पीछे पड़े कोई कहता लूलू है और कोई कहता लखनऊ का शुहदा है, एक ने मेरे मुंह पर कीचड़ फेंकी मैंने भी उसको एक घूंसा जड़ा कि बिल्बिलाता और चिल्लाता हुआ घर को भागा दूसरे ने पीछे से आकर मेरी टोपी गिरादी तब मुझे उसके साथ कुश्ती लड़नी पड़ी। निदान मुझे लखनऊ का शुहदा बनना मंजूर नहीं यह कपड़े आप के साहिबजादे को मुबारक रहैं न मैं इन कपड़ों को पहनता न लड़के मुझे छेड़ते भला जो हुआ परन्तु तमाम उमर को यह नसीहत याद रहैगी बारलो साहिब ने उस के घर का पता ठिकाना पूछा मालूम हुआ कि पक्के कोस भर पर उसका बाप रहता है बारलो साहिब ने हारी की ओर देख कर कहा कि जो तू लेजा सके तो कुछ दाल, दलिया और रोटी बनवाकर इस छोकरे के बाप के लिये भेजें, हारी ने कहा मैं तय्यार हूं पांच कोस पर भी वह रहता होता तो मैं ले जाता, बारलो साहिब तो बावर्चीखाने की ओर खाना बनवाने के ब्योंत में गये और तामी ने जो देर से उस छोकरे को चुपचाप देख रहा था यों मुंह खोला कि बड़े खेद की बात है ऐ छोकरे तू बेचारा नाहक मेरे सबब लड़कों के हाथ से पिटा उसने कहा साहिब मैं आप का इह-सान मानता हूं-आपने मिहरबानी की राह से मुझे यह कपड़े

दिये थे आप क्या जानते थे कि मैं पीटा जाऊंगा आप कभी इस बात का अपने मन में कुछ दुख और सोच न मानिये सिवाय इसके ऐसी र. मार पीट को मैं कुछ भी ध्यान में नहीं लाता वह छोकरा तो सलाम करके अपने घर चला गया परन्तु तामी को कल न पड़ी हारी की ओर मुंह करके बोला कि देखो यह छोकरा कैसा भला मानस दिखलाई देता है क्या करूं मेरे पास उसके पहरने लायक कपड़े मौजूद नहीं हैं नहीं तो मैं इसे वही कपड़े देता जो गरीबलोग पहनते हैं हारी ने कहा यह कौनसी कठिन बात है उस परले गांव में दरजी की दूकान है वह गरीब लोगों के पहरने लायक सब तरह के कपड़े बेचता है रुपये तुम्हारे पास मौजूदही हैं मोल लेलो ॥

तब तामी ने कहा यह बहुत अच्छी सलाह है कल सबेरे चलकर उस छोकरे के लिये कुछ कपड़े खरीदेंगे, दूसरे दिन वह दोनों लड़के बड़े तड़के उस दरजी की दूकान को चल दिये परन्तु आधीदूर गये होंगे कि बहुत से शिकारी कुत्ते दौड़ते और सरपट भरते दिखाई दिये, तामी ने हारी से पूछा कि हारी तुम कुछ जानते हो यह इतने कुत्ते क्यों दौड़ रहे हैं, हारी ने कहा हां मुझे इन के दौड़ने का कारण अच्छी तरह मालूम है वह घोड़ा फेंके हुए जो एक शिकारी साहिब चला जाता है यह सब उसी के कुत्ते हैं बेचारे खरगोश के फाड़ने को उस के पीछे दौड़ रहे हैं बड़े अफसोस की बात है कि इन शिकारियों को ऐसे बेचारे गरीब कमजोर जानवरों के मारने में शर्म नहीं आती जो शिकार ही खेलना है तो जंगल में जाकर शेर चीते रीछ घाती उत्पाती जीवों का जो दूसरे जीवधारियों को सताते हैं क्यों नहीं शिकार करते मैंने किताब में देखा है कि एकदेश में जहां बड़ा भयानक जंगल है उन्हीं हिंसकों का शिकार खेलते हैं और वहां के आदमी सदा नंग धड़ंग जंगलों में फिरा करते हैं इसी कारण वे मोटे ताजे और चतुर चालाक हो जाते हैं यहां तक कि हिरनों के बराबर दौड़ने लगते हैं और

जब कोई शेर गांव के पास आजाता है और उनकी गाय भेड़ का नुक़सान करने लगता है तब यह छः सात आदमी बड़े २ भाले लेकर गांव से बाहर जाते है और ढूंढ़ ढांढ़ कर उसका पता लगाते हैं जब उसको पाते हैं चारों ओर से ऐसा हल्ला मचाले हैं कि वह बड़ा क्रोध में आता है और लाल २ आखे करके गर-जता तड़पता पूंछ फटकारता जो आदमी आगे रहता है उस पर लपकता है वह आदमी तो गेंद की तरह उछल कर उसके सामने से हट जाता है और दूसरा जो इस घात मे रहता है उस पर भाला चलाता है भाले के लगाने से उसका क्रोध और भी भड़कता है परन्तु जब वह भाला मारनेवाले पर हमला करता है तो वह उसी ढब पहिले आदमी की तरह उछल कर वार बचाता है तब तक तीसरा आदमी शेर पर भाला चला देता है यहां तक कि भाले चलाते २ उसकी जानही ले डालते है ॥

तामी । अहा हाहाहा उस शिकार मे तो बड़ा तमाशा होता होगा जो कोठे पर बैठ कर देखने में आसके तो मै भी देखू ॥

हारी । मैं ऐसा तमाशा कभी देखना नहीं चाहता मुझ से उस शेर का दुख कभी देखा न जा सकेगा परन्तु इस में शक नहीं कि उस देश के आदमी अपना जान माल बचाने के लिये शेर चीते वग़ैरः हिंसक जीवों को मारते है पर मैं पूछता हू कि इस बेचारे खरगोश ने इन लोगों का क्या क़सूर किया है यह दोनों इसी बात चीत में थे कि हारी की निगाह खरगोश पर जा पड़ी तामी से कहा देखो वह खरगोश यहां दबक रहा है परन्तु जो मुझ से वह शिकारी इसका निशान पूछेगा तो मैं कभी नहीं बताऊंगा शायद बेचारा इस जगह बच जावे, हारी पूरी बात भी न कहने पाया था कि वह शिकारी साहिब ताजी घोड़े पर सवार कुत्ते समेत सिर पर आन पहुंचा और हारी से पूछा कि तू ने हमारा खरगोश भी देखा है ? हारी पहिले तो चुप रहा परन्तु उसने दूसरी बार चिल्ला कर पूछा तो जवाब दिया कि हां देखा है ॥

शिकारी साहिब । किधर को गया ॥

हारी । यह बात तो मैं आप को नहीं बतलाने का ॥

शिकारी साहिब । क्योंरे नहीं बतलाने का ? देख मैं तुझ से एक दम में बतलवाता हूं यह कह कर घोड़े से उतर पड़ा और हारी को कोड़े मारने लगा हर कोड़े पर यही कहता था कि अबे अब भी बतलावेगा या नहीं, हारी ने एक दफ़ा तो इतना जवाब दिया कि जो बतलाना होता तो पहिले ही बतला देता अब तो मार भी डालो नहीं बतलाने का और फिर चुपचाप बड़ी मज़बूती से मार खाया किया तामी यह हाल देख कर फूट २ रोता था परन्तु उस शिकारी के मन में कुछ भी दया न आई यहां तक कि उस का साथी भी जो पीछे रह गया था घोड़ा दौड़ाये आन पहुंचा यह दशा देख कर दूर ही से चिल्लाया अजी क्या कर रहे हो टुक अपना हाथ रोको जो नहीं मानते हो तो यह लड़का अब मर जावेगा ॥

शिकारी साहिब । यह दुष्ट मरने ही के लायक़ है अभागे ने ख़रगोश देखा है पर बतलाता नहीं कहता है बतलाना होता तो पहिले ही बतला देता तब उस के साथी ने हारी से पूछा कि प्यारे जो तुम ने ख़रगोश देखा हो तो बतला क्यों नहीं देते हारी ने कहा कि साहिब मैं बे गुनाह बे ज़बान जीव की हत्या अपने माथे लेनी नहीं चाहता, इसी अर्से में जो किसी जंगली जानवर की बू आगई तो वह कुत्ते सब के सब इक बारगी फिर दौड़ पड़े और वह शिकारी साहिब भी अपने साथियों समेत तुरन्त सवार होकर उनके पीछे चलदिया जब वह सब वहां से चले गये तो तामी ने पास आकर अत्यंत प्रेम से पूछा कि भाई तुम्हें चोट तो बहुत लगी होगी, हारी ने कहा नहीं कुछ ऐसी चोट नहीं लगी ॥

तामी । क्या करूं मेरे पास पिस्तौल नहीं था नहीं तो इस शिकारी से समझ लेता ॥

हारी । पिस्तौल होता तो क्या करते ॥

तामी। इस दुष्ट नटखट की जान लेता जिसने तुम को नाहक़ ऐसा सताया॥

हारी। यह बहुत अनुचित होता क्योंकि मैं अच्छी तरह जानता हूं वह शिकारी कुछ मेरी जान लेने की इच्छा नहीं रखता था भला जो होगया सो होगया अब उसका याद करना कुछ ज़रूर नहीं शत्रु का अपराध सदा क्षमा करना चाहिये, क्या तुम को बारलो साहिब ने यह बात नहीं कही कि हमारा प्रभु सदा अपने शत्रुओं को क्षमा करता था और याद रक्खो बहुधा ऐसा हुआ है कि जिन्हों ने इस बेर तुम्हारे साथ कुछ दुश्मनी का काम किया वह थोड़े ही दिनों मे अपने किये का फल पाकर फिर तुम्हारे साथ दोस्ती और मुहब्बत करने लगते हैं॥

तामी। परन्तु यार यह तो बतलाओ कि तुम इतनी मार क्योंकर सह सके न कुछ रोये न चिल्लाये॥

हारी। रोने चिल्लाने से क्या होता कुछ मेरा दुख तो घटता ही नहीं और यह क्या मार थी बहुधा बच्चों ने इस से भी अधिक मार सही है और आह भी नहीं की॥

तामी। मुझ से तो कभी न सही जाती॥

हारी। जो जो कठिनाइयां कि स्पार्टा के लड़कों ने सही हैं उनके आगे यह मार कुछ भी नहीं है॥

तामी। स्पार्टा कहां है और वहां वालों पर क्या क्या कठिनाई बीती हैं॥

हारी। स्पार्टा यूनान देश का एक टुकड़ा है वहां के आदमी किसी समय में बड़े शूर बीर और रणधीर थे इलाका उनका छोटा था और चारों ओर के लोग उनके बैरी थे केवल अपने बल से बच रहे थे इसलिये वे अपने बच्चों को भी अनेक प्रकार से बलवान् और साहसी करते थे सदा उनको कुछ वाजबी सा कपड़ा पहना कर मैदान में खेलने कूदने दौड़ने और कुश्ती लड़ने देते और खाने को रूखा सूखा और सोने को कड़ा २ बिछौना दिया करते लाड़ प्यार कभी न करते और यही कारण

उनके ऐसे बलवान् होने का है जिसकी मिसाल किसी इतिहास में नहीं मिलती ॥

तामी। क्या उनके पास सवारी को गाड़ियां और खाने को अच्छी २ मिठाइयां और पीने को शराब और खिदमत को नौकर चाकर नहीं रहते थे ॥

हारी। इन सब चीजों की वहां क्या चर्चा थी जो यह सब चीज होतीं तो वे सब के सब खराब होजाते उस शहर के सारे लड़के एक मकान में बैठ कर एकसा खाना खाते थे और उनको हर एक बात की चतुराई और बुद्धिमानी सिखलाई जाती थी खाने के पीछे वे सब एक जगह खेलते थे और जो कोई बात अनुचित करते कोड़ों से पीटे जाते थे परन्तु रोते चिल्लाते कभी नहीं और न अपना मुंह बिगाड़ते, इस अवसर में वह दर्जी की दूकान भी आन पहुंची जहां से कपड़े खरीदने विचारे थे, तामी ने अपनी जमा पूंजी जो कुछ जोड़ी बटोरी थी अर्थात् ७॥-) उस दर्जी के आगे रक्खे उस दर्जी ने बरीब लड़कों के पहरने के कपड़े इनके कहने बमूजिब एक गठरी में बांध कर हवाले किये, तामी ने वह गठरी हारी को दी हारी ने खुशी से अपने बगल में दाब ली परन्तु इतना पूछा कि तुम आप क्यों नहीं ले चलते ॥

तामी। अमीरों को सज नहीं देता कि गठरी ढोवें ॥

हारी। क्यों इसमें क्या नुक़सान है ॥

तामी। नुक़सान का हाल तो मैं नहीं जानता परन्तु शायद इस सबब से न उठाते हों कि जिसमें छोटे बड़ों का फ़र्क़ और उनकी पहचान रहे ॥

हारी। तो फिर अमीरों को हाथ पैर आंख नाक कान मुंह यह सब चीजें भी न रखनी चाहियें क्योंकि छोटे लोग भी यह सब चीजें रखते हैं ॥

तामी। नहीं जी यह चीजें अमीर क्यों न रक्खें यह सब काम की हैं ॥

हारी । और गठरी उठानी क्या काम की बात नहीं है ॥

तामी । हां काम की बात है पर गठरी उठाने के लिये अमीरों के पास नौकर रहते हैं ॥

हारी । तो अमीर होना बड़ी आफ़त है ॥

तामी । क्यों ॥

हारी । अर्थात् दुनिया में सब अमीर होजावें तो फिर काम कोई न करे हम तुम दोनों भूखे मरें न कोई आटा पीसे और न कोई रोटी पकावे ॥

तामी । आटा क्योंकर पिसता है ॥

हारी । क्या तुमने कभी आटा पिसते नहीं देखा पास ही तो पवन चक्की है किसी दिन बाग़लो साहिब से पूछ कर देख आना ॥

यह लोग इसी ढब आपस में बात चीत करते चले जाते थे कि अचानक ही हल्ला और गुल गपाड़ा उनको सुनाई दिया आंख जो उठाई तो क्या देखते हैं कि एक सवार घोड़े से गिर पड़ा है परन्तु पैर उसका रकाब ही में फंसा रहगया है वह घोड़ा उसको घसीटे फिरता है हारी की दया यह कब क़बूल कर सकी थी कि किसी को दुख में फंसा देखे और छुड़ाने का उद्योग न करे, अपनी जान जाने का कुछ खयाल न किया गठरी ज़मीन पर रख कर तुरन्त दौड़ा संयोग से घोड़े के आगे एक गढ़ासा आगया घोड़ा कुछ रुका, हारीने झपट कर झटपट उसकी लगाम पकड़ ली इस अवसर में उस सवार का साथी और उसके नौकर चाकर भी आन पहुंचे भाग से धरती नरम थी चोट बहुत नहीं लगी लोगों ने थाम थूम कर उसको खड़ा किया जब चेत हुआ तो पूछा कि मेरी जान किसने बचाई और इस दुष्ट नटखट घोड़े को किसने रोका उसका साथी बोला, तुम्हारी जान उसी लड़के ने बचाई जिसको तुम ने सबेरे कोड़े से पीटा था जो वह घोड़े को न रोकता तो तुम्हारा कहीं पता न लगता ॥

वह शिकारी साहिब अपने मन में शर्मिन्दा और खिसियाना

तो बहुत सा हुआ परन्तु जेब से एक अशरफ़ी निकाल कर हारी को देने लगा और कहा कि जैसा मैंने किया वैसाही फल पाया हारी ने उस की अशरफ़ी की ओर निगाह भी नहीं की गठरी उठाकर चल दिया ॥

तामी और हारी वहां से चलकर उस लंगोटिये छोकरे के घर पहुंचे मालूम हुआ कि रात के समय बारलो साहिब ने आकर उसके बाप को देखा था और कुछ दवा भी दी थी और उस दवा ने उस को फ़ायदा भी बहुत किया तामी ने लंगोटिये लड़के को बुलाकर वह सब कपड़े हवाले किये और कहा कि तू अब इनको शौक़ से पहन और अपने भाइयों को पहना इन कपड़ों में न कोई तुझ को लखनऊ का शुहदा ठहरावेगा और न लूल बनावेगा वे लड़के उन कपड़ों को पाकर ऐसे निहाल हुए और उनके मा बाप तामी को ऐसी असीस देने लगे कि हारी और तामी की आंख से आंसू बह चले जब वहां से घर को फ़िरे तो तामी ने हारी से कहा कि यार ऐसी खुशी मुझ को कभी किसी धन दौलत से न हुई जैसी इन ७॥=) सात रुपये नव आनों ने मुझे दी अब मैं कभी अपने रुपये मिठाई और खिलौने मोल लेने में नहीं बिगाड़ूंगा बरन जो मुझे मिलेगा गरीबों के काम में लाऊंगा ॥

एक दिन ऐसा हुआ कि बारलो साहिब और हारी और तामी तीनों आदमी पवन चक्की के पास होकर निकले हारी ने तामी को याद दिलाई कि पवन चक्की यही है तामी ने बारलो साहिब से उस के देखने की परवानगी मांगी उस पवन चक्कीवाले से बारलो साहिब की जान पहचान थी तामी और हारी दोनों को भीतर ले गये और अच्छीतरह उसकी सब कलों को दिखलाया और समझाया कि जैसे पनचक्की पानी के बल से चलती है वैसेही पवन चक्की हवा के बल से घूमती है चक्की के ऊपर बड़े २ लंबे चौड़े ऊंचे पाल लगे थे वह हवा से भर कर फिरकी की तरह घूमते थे उन्हीं के बल से चक्की के पाट बराबर घूमते चले जाते थे और जो गेहूं उनके बीच में पड़ता था तुरन्त पिस कर

आटा हो जाता था जब वे घर गये तो हारी ने कहा कि तामी तुमने देखा कि किस प्रकार आटा पिसता है जो सब अमीर हो जावें तो फिर कहो यह आटा कैसे पिसे पर आटा तयार करने को गेहूं पैदा करने में भी बड़ी मिहनत होती है ॥

तामी । क्या गेहूं जंगल में नहीं जमता ॥

हारी । नहीं गेहूं केवल खेतों में होता है पहले धरती को हलों से जोतते हैं यहां हलों में तीन २ बरन चार २ घोड़े लगाते हैं पर दूसरे देशों में कहीं दो दो बैल और रेतली धरती में एक २ ऊंट काम में लाते हैं हल के पीछे जो लोहे की तीखी गुल्ली रहती है उस से धरती खुदती है जोतने के पीछे बीज बोते हैं फिर जब बालें लगती हैं और दाना पकता है तो उनको काट २ कर खलियान में इकट्ठा करते है ॥

यह तो बड़े तमाशे की बात है मैं भी बीज बोऊंगा देखूं किस तरह उगता है और कैसे बालें लगती है और क्यों कर दाना पकता है ॥

हारी । कल जो तुम कुछ धरती खोद कर तय्यार करो तो बीज मैं तुम्हारे लिये अपने बाप से मांग लाऊंगा ॥

दूसरे दिन तामी ने बड़े तड़के ही उठ कर बाग में जा एक कोने में थोड़ी सी धरती खोद खाद कर बड़ी मिहनत से तय्यार की जब घर के भीतर आया बारलो साहिब से कहने लगा कि देखिये मैंने कैसी मिहनत की है मैं इस जमीन में अनाज बोऊंगा यक़ीन है कि अब तो आप मुझ को भले लड़कों में गिनें ॥

बारलो साहिब । भला और बुरा होना उस काम पर मौकूफ़ है कि जिस में तुम अपना यत्न लाने का इरादा रखते हो ॥

तामी । मेरा यह बिचार है कि जब अनाज पैदा हो चुके तब मैं पिसवा कर और फिर आप से तर्कीब पूछ कर रोटी पकवाऊं और उसे खा जाऊं जिसमें जब मैं घर जाऊं तो बाप से कहने को हो कि मैं ने अपने हाथ के बोये यत्न की रोटी खाई है ॥

बारलो साहिब । इसकी कुछ चिन्ता नहीं परन्तु जो तुम ने अपने ही खाने के लिये अनाज बोया तो भलाई क्या हुई यह तो सभी लोग करते हैं जो न करें तो बहुतेरे भूखों मरें ॥

तामी । अमीर नहीं करते ॥

बारलो साहिब । क्या अमीर खाते भी नहीं ॥

तामी । खाते हैं परन्तु जिन्स पैदा करने के लिये उनके पास नौकर रहते हैं उनको अपने हाथ से जोतना बोना नहीं पड़ता ॥

बारलो साहिब । नौकर क्योंकर मिलते हैं ॥

तामी । अमीर उनको महीना देते हैं ॥

बारलो साहिब । तौभी नौकरों के लिये अमीरों को रुपये चाहियें जबतक रुपये न हों उनको नौकर न मिलेंगे और जबतक नौकर न मिलेंगे उनको खाने को न मिलेगा अब मैं तुम से एक बात पूछता हूं कि क्या अमीरों के पास सदा रुपया बना रहता है—इसके जवाब में तो तामी रुका परन्तु परिणाम सोच कर बोला कि साहिब सदा तो रुपया किसी के पास भी नहीं रहता ।

बारलो साहिब । जब रुपया न रहेगा तब तो अमीरों को बड़ी कठिनाई पड़ेगी और नाचार अपने हाथ से उनको मिहनत करनी पड़ेगी ॥

तामी । बेशक् तब जरूर जोतें बोवेंगे ऐसा तो कोई भी दयालु नहीं है जो इनको बिना मिहनत खाने को दिया करे ॥

बारलो साहिब । मुझ को इस बात पर एक कहानी याद आई है जो तुम्हारा मन सुनने को चाहे तो मैं सुना दूं ॥

तामी । बड़ी मिहरबानी होगी ॥

बारलो साहिब । जिन दिनों में पहिले पहल अमरिका के देश का तरी का रास्ता मालूम हुआ था उन दिनों में बहुतेरे आदमी सोने चांदी की खानों के खोज में वहां जाया करते थे संयोग से एक आदमी पिजारो नाम हस्पानिया देश के रहनेवाले को भी यही सूझी कि अमरिका में जाकर सोना चांदी ढूंढे और

अपने भाग्य का परचय ले उसके बड़े भाई का नाम अलन्ज़ो था उस से बहुत प्रेम रखता था उसको भी साथ लेजाना चाहा और ठहरा लिया कि जितना सोना मिलेगा आधा २ आपस में बांट लेंगे अलन्ज़ो दूरन्देश और बड़ा संतोषी था उसने सोने की तलाश में अमरिका जाने का बिचार ठीक न समझा और पिज़ारो को इस कच्चे मन्सूबे से दूर रहने की बहुत सलाह दी परन्तु जब देखा कि वह नहीं मानता नाचार साथ जाने पर राज़ी हुआ और यह शर्त कर ली कि सोना चांदी तो मुझे कुछ नहीं चाहिये लेकिन असबाब और नौकर चाकर जो कुछ मैं अपने साथ लूं तुम उन्हें जहाज़ पर ले चलने से इन्कार न करो, पिज़ारो ने यह बात मान ली और परदेश जाने की तय्यारी करने लगा जो कुछ माल असबाब था सब बेच डाला और उसके पलटे एक जहाज़ मोल लेकर उसे खुरपी फावड़े और खान मे सोना चांदी खोदने गलाने और साफ़ करने की चीज़ों से लादा बहुत से लोग उसके साथ हुए सब को आस थी कि जाते ही सोने से मालामाल हो जावेंगे अलन्ज़ो ने अपने साथ और तो कुछ न लिया केवल दो जोड़ी अच्छे २ मज़बूत बैलों की और दस पन्दरह भेड़ियां और पांच सात हल और खेती करने के हथियार और कुछ अनाज और बहुत से आलू और तरह तरह की तरकारियो के बीज रख लिये पिज़ारो ने यह सब चीजें बड़ी निकम्मी समझी परन्तु क्या करे अपने भाई से हामी भर चुका था कुछ न बोला थोड़े ही दिनों में इनके जहाज़ अमरिका में जा लगे जब किनारे पर उतरे अलन्ज़ो ने अपने भाई पिज़ारो से यह बात कही कि मैं तो यहां तुम्हारे साथ केवल टहल के लिये आया हूं अब तुमलोगों को मुनासिब है कि सोना चांदी ढूंढो मैं तबतक इसी जगह समुद्र के किनारे अपने नौकरों समेत ठहरा रहूंगा जब तुम मनमाना सोना इकट्ठा कर लोगे और अपने देस को फिरोगे तब मैं भी तुम्हारे साथ हो लूंगा ॥

पिज़ारो ने कहा बहुत अच्छा और अपने साथियों समेत सोने

चांदी की तलाश में निकला रास्ते में बहुधा उन लोगों से यह बात कहता था कि देखो हमारे भाई साहिब भी क्या झक्की आदमी हैं सोना चांदी छोड़कर आप भेड़ बकरी चरावेंगे, लोग तो कहते थे कि यह बड़े समझदार हैं परन्तु कभी कभी लोग भी झक्कियों के साथ झक्की और पागल बन जाते हैं, चलो हम सब तो चलकर सोना खोदें जो प्रारब्ध ने सहायता की तो फिर जन्मभर आनन्द से बैठे चैन उड़ाया करेंगे यह सुनकर और सब ने तो उसके कहने पर विश्वास किया परन्तु एक आदमी उनमें बुड्ढा था उसने गर्दन हिलायी और कहा कि मैं इस बात में हामी नहीं भर सक्ता ॥

निदान यह लोग जंगल पहाड़ों का रास्ता काटते नदी नालों को डांकते, आंधी तूफान गर्मी सर्दी भूख प्यास हज़ारों तरह की कठिनाइयां झेलते कई दिन में सोने चांदी की खान पर पहुँचे और खोदने गलाने में लयलीन हुए जों जों सोना इकट्ठा होता जाता था त्यों त्यों उनकी लालच बढ़ती जाती थी यहां तक कि खाने पीने का सामान. उनका बीतगया अन्त में जंगल के फल फूल और कन्द मूल से दिन काटने लगे जब वह भी होगये और मारे भूख के मरने लगे, तो जो कुछ सोना इकट्ठा किया था लेकर वहां से कूच किया और मरते जीते उस जगह जा पहुँचे जहां अलन्ज़ो को छोड़ गये थे ॥

अलन्ज़ो ज़मींदारी के काम में बड़ा उस्ताद था जब यह लोग उधर सोने की तलाश में गये तो उसने एक टुकड़ा ज़मीन का बहुत अच्छा उपजाऊ ढूढकर उसको अपने नौकरों की सहायता से उन्हीं हल बैलों से जो साथ लाया था जोत के सबभांति के बीज और आलू बो दिये भेड़ों को उसने समुद्र के किनारे बहुत अच्छी चराई की जगह देखकर छोड़दिया ऋतु अच्छी थी हर एक वस्तु जैसी चाहिये वैसी हुई इसी अवसर में भेड़ों के भी दो दो बच्चे होगये थे सिवाय इसके उसने सावकाश के समय समुद्र से मछलियां इतनी पकड़ी थीं कि एक ढेर लग गया था, उनको उसी नमक से जो समुद्र के किनारे जम जाता है मलकर सुखा रक्खा था ॥

निदान जब पिजारो आया तो अलनूज़ो अपने भाई के साथ बड़ी उमंग से मिला और सफ़र का कुशल क्षेम और सोने चांदी का समाचार पूछा पिजारो ने कहा कि सोना तो हमलोग आप की दया से बहुत लाये परन्तु खाने पीने का बड़ा दुख उठाया कितने ही साथी इस दुख से मरगये और हमलोगों की भी जान मारे भूख के होंठों पर आरही है अब आप जल्दी कुछ खाने को बनवाइये आज दो दिन से केवल पेड़ों की छाल और जड़ें चबा चबाकर जीये हैं अलनूज़ो ने कहा कि भाई क्या तुम को वह बात याद नहीं जो हमारे तुम्हारे बीच चलते समय हुई थी अर्थात् मुझ को तुम्हारे सोने चांदी से कुछ काम नहीं और तुम को मेरी वस्तुओं से कुछ प्रयोजन नहीं मैं रत्ती भर भी सोना तुम से नहीं मांगता तुम क्यों मेरी वस्तुओं पर जो बड़ी मिहनत से पैदा की हैं मन चलाते हो परन्तु जो बहुत भूखे हो और खाने को कुछ नहीं रखते तो चिन्ता नहीं मैं खाने को दूंगा परन्तु सोना जो तुमने इकट्ठा किया है वह मुझे दे दो पिजारो अपने भाई का निर्दई पन देखकर बहुत दुखी हुआ परन्तु इलाज क्या था पेट मारे भूख के पीठ से लग रहा था सब ने अपनी २ गठरी खोल कर जितना सोना लाये थे अलनूज़ो के सामने रख दिया और जो जिस को दर्कार था उससे खाने को लिया जब लोग खा पी-कर निश्चिन्त हुए और अलनूज़ो ने अपने भाई से कहा चलो अब अपने देस को चलें तब तो पिजारो से न रहागया झुंझला कर बोला कि जाइये आप को वतन मुबारक हो और आप सब सोना लाद कर जहाज पर सवार हूजिये मेरे लिये यही जंगल और उजाड़ वतन है यहां मर जाना भी खूब है पर ऐसे निर्दई कठोर भाई के साथ जहाज में बैठकर देस को जाना मैं कभी पसन्द नहीं करता ॥

यह सुनकर अलनूज़ो ने अपने भाई को छाती से लगाया आंखें चूमी और कहा कि भाई जान क्या तुमने यह बात अपने मन में निश्चय मान ली कि मैं तुम्हारी दौलत छीना चाहता हूं सारा तुम्हारा सोना तुम को मुबारक रहे यह तो क्या है जो

कभी कोई मुझे सारी दुनिया का सोना भी देना कबूल करे तो मैं अपने प्यारे भाई के साथ निर्दई पन नहीं करने का मेरा मनोरथ तो तुम्हें सीख देने से था तुम ने मेरी मिहनत और दूरन्देशी की क़दर न जानकर अपने मन में यह समझा था कि जिस के पास सोना रहता है वह किसी वस्तु का मुहताज नहीं होता याद रक्खो कि जैसे लड़ाई में लोहा सोने से अधिक काम देता है इसी भांति मिहनत और दूरन्देशी सदा सोने से जियादा काम में आती है देखो मैं जो तुम को खाने को न देता तो तुम सब के सब मर जाते कुछ सोना न चबाते खैर अब उम्मेद है कि आपलोग इस नसीहत को उमर भर न भूलेंगे और अपनी दौलत को अच्छे कामों में उठावेंगे अपना सोना अपनी गठड़ियों में बांधिये और खुशी २ वतन को चलिये ॥

पिज़ारो पहले जितना अपने भाई की बे मुरव्वती से दुखी हुआ था·उतनाही अब उस का बढ़ा हुआ मन देख कर अपने चित्त में खुश हुआ और बड़ा गुनमाना निदान वे सब मन मगन जहाज़ पर सवार हुए हवा जैसी चाहिये वैसी मिली थोड़े ही दिनों में अपने वतन को जा पहुंचे रास्ते में कई बार पिज़ारो ने अपने भाई से कहा कि आप आधा सोना बांट लीजिये मेरी इस में ऐन खुशी है परन्तु अलन्ज़ो ने यही जवाब दिया कि भाई तुम्हारा सोना तुम को मुबारक रहे जो मैं अपने हाथ से अपने खाने को पैदा कर सकता हूं तो फिर मुझे सोने से क्या काम है ॥

तामी। मैं अच्छी तरह जानता हूं कि अलन्ज़ो बड़ा ही दाना आदमी था जो वह साथ न जाता तो उसका भाई सारे साथियों समेत उसी जगह मर रहता परन्तु वह देस केवल जंगल उजाड़ था हमारे इङ्गलिस्तान के टापू में ऐसी बात कभी नहीं हो सकेगी, जिसके पास सोना है उसको किसी चीज़ की फ़िकर न होगी जहां जो चीज़ चाहे सोना देकर खरीद ले ॥

बारलो साहिब। परन्तु यह क्या ज़रूर है कि आदमी सदा इङ्गलिस्तान ही में रहे और कभी ऐसे जंगल उजाड़ों में न जा पड़े ॥

तामी। मनुष्य क्यों ऐसे देसों में जावे जहां जंगल पहाड़ हैं चैन से अपने घर में न बैठा रहे ?

बारलो साहिब। तो फिर कोई आदमी जहाज पर भी न चढ़े ॥

तामी। नहीं साहिब जहाज पर क्यों न चढ़े जो जहाज पर न चढ़ते तो हमलोग जमेका से इङ्गलिस्तान में क्यों कर आते परन्तु जहाज में तो जंगल उजाड़ नहीं रहता ॥

बारलो साहिब। बहुधा ऐसा संयोग हुआ है कि जहाज प्रचण्ड पवन से अथवा पहाड़ों के साथ टकरा के डूब जाता है फिर जो उसके सवार किसी ढब डूबने से बचें और कोई टापू पास मौजूद हो और वहां किसी प्रकार पहुंच जावें तो फिर वहां क्या करेंगे ॥

तामी। क्या सचमुच जहाज भी डूब जाते हैं ?

बारलो साहिब। बेशक अभी एक जहाज डूब गया था उसमें से एक आदमी सेल्कर्क नामी कई बरस तक उजाड़ टापू में पड़ा रहा पहले तो कुछ दिनतक उसने वहां के फल फूलों से अपना पेट भरा परन्तु फिर धीरे २ ऐसा मजबूत और चालाक होगया कि दौड़ दौड़ कर अपने हाथ से जंगली जानवरों को पकड़ने लगा ॥

तामी। बड़ा अचरज है कि इतने दुखदर्द में भी वह जीता रहा ॥

बारलो साहिब। मरने का वहां कौन सबब था बरन वह तो इस नित्त की दौड़ धूप से ऐसा पुष्ट और बलवान् होगया था कि बिना हथियार हिंसक जीवों का शिकार करता ॥

तामी। बड़े अचरज की बात है ॥

बारलो साहिब। जो तुम कभी उन रूसियों का हाल सुनों जिनका जहाज स्पिट्जबर्गन के किनारे डूब गया था तो और अचरज में आओ ॥

तामी। स्पिट्जबर्गन कहां है ? ॥

बारलो साहिब। यह टापू उत्तर में है यहां से बहुत

दूर है वह पाला और बर्फ़ से ढका रहता है जाड़ा वहां बहुत पड़ता है और पेड़ नांम को भी नहीं जमते जानवर कोई वहां संयोग से जीता है सिवाय इन दुख दर्दों के वहां यह एक बड़ी आफ़त है कि महीनों तक सूरज नहीं दिखलाई देता रात ही बनी रहती है परन्तु ऐसी जगह में भी उन रूसियों ने कई बरस तक अपनी जान बचाई और तीन आदमी कुशल मंगल से अपने देस में पहुंचगये उस ओर जहाजों को बड़ा डर है सर्दी के मारे समुद्र पर बर्फ़ जमी रहती है कहीं मैदानों की नाईं और कहीं पहाड़ों की भांति जो कोई जहाज़ उन बर्फ़ के टीलों के बीच फंस जावे तो फिर वहां से उसका निकलना बड़ा कठिन है ॥

तामी। सचमुच इन रूसियों का अहवाल बड़ा अचरज का होगा किसी तरह वह मेरे भी देखने में आ सकता है ? ॥

बारलो साहिब। इसमें क्या मुशकिल है जब मैंने उनका सफ़रनामा पढ़ा था तो बहुत सी बातें जो उसमें बड़े अचरज और, काम की मालूम हुईं चुनली थीं देखो उस अलमारी पर वह मेरे हाथ के लिखे हुए कागज़ रक्खे हैं जाओ उठा लाओ ॥

तामी उन कागज़ों को उठालाया और पढ़ना शुरू किया ॥ बारलो साहिब ने उन रूसियों का हाल उस जगह से चुना था जहां उनका जहाज़ बर्फ़ के टुकड़ों में फंसगया था ॥

बयान उन चार रूसियों का जो स्पिट्ज़्बर्गन के उजाड़ टापू में जा पड़े थे।

जब कि जहाज़ हर तरफ़ बर्फ़ के पहाड़ों से घिर गया और कोई उमेद उसके बचने की बाक़ी न रही सबलोग इकट्ठे होकर इस बात का बिचार करने लगे कि अब क्या करना चाहिये ॥

अल्कसीसहङ्कफ़ जो उस जहाज़ का मेट था बोला कि मुझ को याद पड़ता है कि जिन दिनों में मेस शहर के आदमी इस टापू में आये थे तो वे उस शहर से कड़ी तख़्ते वग़ैर: भी घर बनाने

का सामान अपने साथ लाये थे उनका इरादा था कि जाड़े के दिन इसी जगह काटें बरन मैंने किसी सें यह भी सुना था कि उन्होंने यहां एक घर बना कर तैयार किया था मेट की बात सुनतेही सब लोगों के तन में मानों जान सी. आगयी और यही बिचार पक्का ठहरा कि उस घर में जाड़े के दिन बितावें क्योंकि जहाज़ में बचने की आस कुछ बाक़ी न रही थी तुरन्त अल्कसीसहक्लफ़ को तीन और आदमियों के साथ उस घर का पता लगाने के लिये भेजा जहाज़ से टापू पर जाने में दो मील तक जो बर्फ़ के करारे ऊंचे २ हवा और समुद्र की लहरों के ज़ोर से जम गये थे चलने वालों को उनमें धस जाने का डर था इस कारण वे चारों आदमी कुछ अधिक बोझ साथ न लेगये केवल एक बन्दूक़ बारूत का सींगड़ा बारह गोलियां कुल्हाड़ी देगची छुरी तमाखू का बटुआ चकमक तोड़ा और दस दस सेर आटा ले लिया जब टापू पर पहुँचे और तलाश करने लगे तो किनारे से एक कोस के लगभग वह घर उन लोगों को मिलगया छत्तीस फुट लंबा और अठारह फुट चौड़ा और अठारह ही फुट ऊंचा था बारह फुट चौड़ी उसके भीतर एक कोठरी भी बनी थी दर्वाजे में किवाड़ लगे थे और घर के बीच में आग की अंगीठी के पलटे मिट्टी का एक तनूर बना था यद्यपि बे मरम्मती के कारण वह घर कई जगह से टूट गया था तो भी उस बर्फ़िस्तान में उनलोगों की जान बचाने के लिये बहुत था घर मिलजाने से खुश हुए और रात भर उस में रहे सबेरे जब वे चारों रूसी बाक़ी सब जहाज़ वालों को यह खुशखबरी सुनाने और अपना बिलकुल असबाब जहाज़ से उतार कर उस घर में लाने के लिये किनारे पर आये तो क्या देखते हैं कि जहाज़ और बर्फ़ के टीलों के बदले वहां तो समुद्र लहरें मार रहा है मालूम हुआ कि रात को जो एक आंधी आयी या उसके ज़ोर से वह सब बर्फ़ जो वहां इकट्ठी हुई थी फट कर किसी दूसरी ओर को हटगई जहाज़ उसी जगह पर डूब गया या वहां से बहकर किसी और जगह जाकर डूब गया क्योंकि फिर उसका पता कभी कहीं सुनने में न आया ॥

निदान जहाज़ डूब जाने से जो कुछ हाल उन रूसियों के जी पर बीता उसके लिखने की कुछ हाजत नहीं पढ़ने वाले आप खयाल कर सकते हैं ॥

उस टापू से निकलने की उनको किसी तरह की भी कुछ आस बाक़ी न रही क्योंकि जान बूझ कर काहे को कोई आदमी अपना जहाज़ बिनाकाम ऐसे भयंकर स्थान लें जावेगा नाचार ज़िन्दगी से हाथ धो बैठे और उदास और दुखी होकर उस घर की ओर फिरे ॥

तामी । हाय हाय क्या बुरी तरह उन बेचारों की जान गयी उस जाड़े पाले और बर्फ में उनके जीने की कौन सूरत थी मैं जानता हूं दोही चार दिन में वे सब मर गये होंगे ॥

बारलो साहिब । नहीं वे सब मरे नहीं तुम को आगे पढ़ने से उनका हाल मालूम होगा परन्तु पहले तुम इतना बतलादो कि यह बेचारे जहाज़ी तो सदा मिहनत मशक़्क़त और खौफ़ खतर में रहने से उसी ढब के हो गये थे जो कभी अमीर होते और इमारत का बू रखते तब तो अपने हाथ से कुछ भी न करते बरन थोड़े थोड़े से काम के लिये गुलाम और नौकरों का आसरा ढूंढते यह क्या कुछ उनके लिये अच्छी बात होती ॥

तामी । ओह तब तो वे बे मौत मरते वहां उनकी मिहनत और हिम्मत उनके लिये बड़ी पारस हुई देखिये अब इन चारों मिहनती हिम्मत वाले जहाज़ियों का क्या हाल होता है यह कह कर तामी फिर पढ़ने लगा ॥

पहले उन रूसियों ने उस घर को जहां कहीं टूट फूट गया था ठीक ठाक किया कुल्हाड़ी उनके पास मौजूदही थी और बढ़ई का काम वह अच्छीतरह जानते थे क्योंकि रूस के देस में सारे ज़मींदार बढ़ई का काम जानते हैं अपना घर अपनेही हाथों से बनाते हैं पेड़ उस हिमालय देश में कोई भी नहीं जमता कि जिस से कुछ कड़ी तख़्ता हाथ लगता पर इतनी कुशल थी कि वहां सर्दी की बहुतायत से दीमक आदि लकड़ी का नुक़्सान नहीं करते और न वह गलती सड़ती ॥

निदान उन्हीं पुराने तख़्तों को जो उस घर में लगे थे जोड़ जाड़ कर ठीक कर लिया जहां कहीं छेद होगया था या दरार पड़ गयी थी काई और सिवार इकट्ठा करके भरदी जब उस काम से निचिंत हुए तो शिकार को निकले उस देश में एक प्रकार का बारहसिंगा बहुत होता है और वह काई और सिवार से जिस के सिवा वहां और कुछ भी नहीं जमता अपना गुज़ारा करता है रूसी बारह फ़ैर की बारूत साथ लाये थे सो बारह ही बारहसिंगे शिकार किये ॥

आग जलाने के लिये लकड़ी की खोज में थे बिना आग उस हिमालय में जीना कठिन था जो कुछ काठ कबाड़ पेड़ों की जड़ और टहनियां समुद्र की लहरों ने दूर दूर के देसों से बहा कर उस उजाड़ टापू के किनारे पर डाली थीं उन लोगों ने चुन चुन कर बहुत सी इकट्ठी कीं एक तख़्ना किसी जहाज़ का ऐसा हाथ लग गया कि उसमें बहुत सी मेखें लोहे की पांच पांच और छ छ इंच की लगी थीं यह मेखें उनके बड़े काम आयीं मानों उन्हीं से उनकी जानें बचीं बारूत हो चुकी थी और वह बारहसिंगे जो मारे थे बिलकुल खर्चे में आगये थे यह मेखें न मिलतीं तो शिकार भी खाने को न मिलता मसल मशहूर है ज़रूरत और इहतियाज ईजाद की बुनियाद है जब आदमी को किसी चीज़ की ज़रूरत आन पड़ती है यह उसके मिटाने के लिये सैकड़ों उपाय करता है और उसमें कोई न कोई ठीक भी बैठ जाता है उस तख़्ते में एक मेख़ बहुत बड़ी लगी थी उसका उन्होंने हथौड़ा बनाया और एक बटिया समुद्र के किनारे से लेकर निहाई बनायी इसभांति बारहसिंगों के दो सींगों से चमटे का काम लेते थे छोटी छोटी मेखों को पीट पाट कर भाले और तीरों के फल बना लिये और उसी पटिया पर घिस घिस कर साफ़ और पैने किये बारहसिंगे जो इन जहाज़ियों ने मारे थे उनके चमड़ों को काट काट कर तस्मे बनाये और उन्हीं तस्मों से उन फलों को लकड़ियों में बांध बांध कर भाले और तीर तैयार किये पनडुब्बी चिड़ियों के जो पँख हाथ लगे वह तीरों की पूंछ में लगा दिये

और चील के पेड़ की जो एक टेढ़ी सी जड़ मिलगयी उसे छुरी से छील कर कमान बना लीं परन्तु चिल्ला पैदा करने की कोई हिकमत ध्यान में न आयी उस हिमालय में रीछ बहुत होते हैं रंग उनका सफ़ेद और आदमी पर चोट करने में सिंह से कम नहीं, भाले उन रूसियों ने इन्हीं रीछों के लिये तैयार किये थे संयोग से जिसदिन वह तैयार हुए उसी दिन उनके हाथ से एक रीछ मारा गया मांस उसका खाने में बड़ा सुस्वाद पाया और रग पट्ठों से अपनी कमान का चिल्ला बनाया फिर तो वे खटके बारहसिंगों का शिकार करने लगे लोमड़ियां भी सफ़ेद और नीले रंग की वहां बहुत सी उनके हाथ लगीं मांस उनका खाते और चमड़ा पहनते ओढ़ते और बिछाते रीछ कई बार उनके घर के भीतर घुस आये थे परन्तु भालों से छेदे गये खटका रीछ का उनलोगों को सदा रहता था सच है यह जीव बड़ा ही दुष्ट होता है ॥

तामी। बेचारे उन रीछों के भय से दिन रात दुचित्ते और दुखी रहते होंगे ॥

बारलो साहिब। दुचित्ता और दुखी होने का क्या कारण था कुछ किसी को रीछ ने फाड़ तो डाला ही नहीं था ॥

तामी। फाड़ा तो बेशक नहीं क्योंकि भाले उनके पास मौजूद थे इस कारण वह रीछों पर सदा प्रबल बने रहते थे ॥

बारलो साहिब। फिर यह कुछ ज़रूर नहीं कि ख़ौफ़ ख़तर में पड़ने ही से आदमी व्याकुल और दुखी रहे परन्तु हां जो उस डर भय से बचने के उपाय न जानता हो तो ज़रूर बिपत्ति के समय दुखी होना पड़ेगा देखो जब तुम्हारे पांव में सांप लपट गया था कैसे घबराये थे तुमने जाना कि बस अब यह काट ही लेगा तुम उस के छुड़ाने का उपाय नहीं जानते थे परन्तु हारी बख़ूबी जानता था कि उसकी गर्दन पकड़ लेने से वह कुछ भी नहीं बोल सकता बिलकुल बे क़ाबू हो जाता है वह कुछ भी न घबराया तुरन्त दूर फेंक दिया जो आदमी डरता है वही दुख पाता है और जो साहसी और धीरजवान होता है वह सदा ख़ुश रहता है ॥

तामी । बेशक साहिब मैंने बहुधा देखा है कि जब मेरे बाबाजान और अम्मांजान दोनों गाड़ी पर सवार होकर एक नाले से पार होते थे अम्माजान सदा मारे डरके चिल्लाने लगती थीं और बाबाजान हंसा करते थे, भला अब जो कभी सांप मेरे पांव में लपटेगा तो मैं भी दूसरे की सहायता का भूखा न रहूंगा अपने हाथ से उसकी गरदन पकड़ लूंगा यह कहकर फिर वह कहानी पढ़नेलगा॥

आग के लिये तो उनको लकड़ियां मिल गयी थीं परन्तु दीया बालने की फ़िकर में थे जहां महीनों की रात हो वहां अंधेरे में बिना उजेले बड़ी आफ़त है तेलकी जगह उनके पास शिकार के मारे हुए जानवरों की चर्बी मौजूद थी और बत्ती अपना कुर्त्ता या पाजामा फाड़ फाड़ कर बनाते थे सिवाय इसके किसी जहाज का एक रस्सा बहा हुआ समुद्र के किनारे उन्हों ने पड़ा पाया था वह भी बत्ती का काम देता था पर कोई ऐसा बरतन उनके पास न था जिसका दीया बनावें मिट्टी वहां की ऐसी दरदरी थी कि जो दीया बनाते तो जलाने के समय सारी चरबी पिघल कर उसके भीतर से रिस जाती तब उन्होंने यह डौल डाला कि थोड़ा बहुत जो कुछ आटा साथ लाया हुआ बच रहा था उसकी लेई पकाई और फिर मिट्टी के प्याले बनाकर और आग में तपाकर उसी लेई में बुझा लिये बरन कपड़े का एक एक टुकड़ा भी लेई से भिगो कर बाहर से उनके चौगिर्द मढ़दिया॥

तामी । दीया तो उन्हों ने बाल लिया पर यह मेरी समझ में न आया कि महीनों की रात कैसे होती है॥

बारलो साहिब } तुम रात किसको कहते हो ?

तामी । जब सूरज न दिखलाई देवे और अंधेरा हो जावे वही रात है जबतक सूरज दिखलाई देता है दिन रहता है जब वह नजरों से हट जाता है रात होजाती है॥

बारलो साहिब } बस, जिस जगह में इन रूसियों का जहाज डूब

गया था महीनों तक वहां सूरज दिखलायी नहीं देता और नज़रों से छुपा रहता है इसी लिये वहां महीनों की रात होती है और फिर जब महीनों तक सूरज बराबर दिखलायी देता है और नज़रों से छुपा नहीं रहता तो दिन भी कई महीनों का होता है भला कहानी तमाम करो ॥

चमड़े जानवरों के उन्हों ने पानी में भिगो भिगो कर और उन पर बारह सिंगों की चरबी मल मल कर ऐसे नर्म और ठीक कर-लिये कि उन से पहनने के कपड़ों का भी काम बखूबी निकल आया और जूते और मोजे भी अच्छे सुन्दर तय्यार हो गये कतरनी का काम छुरी से लेते और धागे की जगह पतली पतली तांत काम में लाते, सूई के लिये बड़ी दिक़्क़त उठानी पड़ी अर्थात् उसी तख़्ते में से एक छोटी सी कील निकाल कर आगमें लाल की और फिर छुरी से उसमें छेद करके पत्थर पर घिसते घिसते सूई बनायी ॥

निदान वे कागज़ जो बारलो साहिब ने किसी पुस्तक से नक़ल किये थे इस मुक़ाम पर तमाम हुए ॥

तामी । बेशक इस बयान से यह बात अच्छी तरह साबित होती है कि आदमी को कब कैसा संयोग आन पड़े इसका कुछ ठिकाना नहीं और जो लोग पूरे मिहनती हैं वे कैसी ही बिपत में क्यों न जा पड़ें कुछ न कुछ अपने गुज़ारे का उपाय निकालही लेते हैं परन्तु आप यह तो बतलाइये उन रूसियों पर वहां फिर क्या बीती ॥

बारलो साहिब } छ बरस वह सब वहां इसी ढब पड़े रहे सातवें साल संयोग से एक जहाज़ उस ओर आनिकला उसी पर चढ़ कर तीन आदमी उनमें से ज्यों के त्यों प्राण बचा कर आनन्द से अपने देस को पहुंचे ॥

तामी । चौथा क्या हुआ ॥

बारलो साहिब } चौथा आदमी उनमें थोड़ा सुस्त था चलने फिरने

में आसकत कर जाता आखिर बैठे बैठे एक प्रकार की ऐसी खुजली की बीमारी उसे होगयी कि उसने उसी टापू में जान दी साथियों ने बर्फ़ से दबा कर उसे दफ़न किया ॥

इतने में हारी भी अपने बाप के घरसे फिर आया और उस चिड़िया के बच्चे को अपने साथ लाया जिसे चील के पंजे से बचाया था वह हारी से ऐसा हिलगया था कि जिधर वह जाता उसी के पीछे २ दौड़ता और उसके हाथ पर बैठ कर रोटी के टुकड़े चुगता ॥

तामी । यह हाल देख कर बहुत खुश हुआ और अचरज में आकर पूछा कि यार तुमने इस चिड़िया के बच्चे को क्योंकर ऐसा परचालिया हारी ने कहा कि इसको चीलने घायल किया था मैं इसको जबतक कि अच्छा न होगया अपने हाथ से दाना पानी देता रहा इसके सिवा और कुछ नहीं किया ॥

तामी । बड़े अचरज की बात है कि जानवर आदमी से ऐसा हिल जाय, नहीं तो यह आदमी की सूरत क्या बरन आवाज से भी डरते हैं ॥

बारलो साहिब } आदमी से जानवरों के भागने का कारण क्या है ?

तामी । कारण यही कि जंगली जानवर आदमी से डरते हैं उनकी ऐसीही प्रकृति है और तो दूसरा कारण कोई समझ में नहीं आता ॥

बारलो साहिब } जो यही कारण होता तो फिर यह चिड़िया का बच्चा भी हारी से क्यों न भागता ॥

तामी । वह हारी से इसलिये नहीं भागता कि हारी ने उसकी जान बचाई और पाला पोसा ॥

बारलो साहिब } पस तुम्हारे कहने का यह मतलब कि जो जानवरों के साथ नेकी करता है उस्से वे नहीं भागते और जो उनको दुख देता है उससे भागते हैं ॥

तामी । बेशक साहिब ॥

बारलो साहिब } भला जो कोई शेर या दूसरा जानवर ऐसा यहां आजावे कि आदमियों को सताता है तो उससे भागोगे या उसके पास जाओगे ॥

तामी । मैं तो देखतेही भागूंगा ॥

बारलो साहिब } बहुत अच्छा अब हम तुमको भी जंगली जानवर कहें ॥

तामी । सुनते ही खिलखिला कर हंस पड़ा ॥

बारलो साहिब } जो तुम जानवरों को हिलाना चाहते हो तो प्यार और मिहर्बानी करते रहो जो तुम जानवरों को चाहोगे तो वह भी तुमे चाहेंगे और फिर कभी तुम्हारे पास से न भागेंगे ॥

हारी । आप सच कहते हैं मैंने एक छोटे से लड़के को देखा है हाज़िरी अर्थात् खाने के समय हमेश एक प्याले में दूध लेकर बाग़ में पेड़ के नीचे आकर बैठता और सीटी बजाता वहां एक बिल था उसमें से सांप निकल कर वह सारा दूध पी जाता ॥

तामी । और काटता नहीं ॥

हारी । कभी नहीं बरन जो वह सांप दूध को जल्द २ पीने लगता तो लड़का उसे चमचेसे ठोंक देता वह सिर भी न उठाता तामी नेक तो पैदाइश से था इस बात को सुन कर बहुत खुश हुआ और मन में पक्का मन्सूबा ठाना कि चल कर जानवरों के साथ कुछ नेकी कीजिये और उन को हिलाइये और परचाइये एक टुकड़ा रोटी का हाथ में ले लिया और घर से बाहर निकला क्या देखता है कि सूअर का एक छोटासा बच्चा धूप में पड़ा सोता है तामी ने उसे पुकारा बचे बचे बचे पुस पुस इधर आओ इधर आओ बच्चा काहे को इसके मन की बात जान सक्ता था आदमी की आहट पाते ही उठकर भागा ॥

तामी । ऐ बेसमझ जानवर तू अपना मित्र और शत्रु भी नहीं

पहचानता यह बात मैं तुझ को सिखलाऊंगा यों कह कर तामी दौड़ा और उसके पिछले दोनों पैरों को पकड़ही लिया चाहा कि उसे रोटी खिलावे पर वह बच्चा कभी काहे को इस तरह की आफ़त में पड़ा था इतना चिल्लाया कि उसकी मां सब अपने बच्चों समेत तामी की ओर दौड़ी नाचार तामी ने उस बच्चे को छोड़ दिया वह बच्चा छूटतेही तामी की टांगों में होकर इस तेज़ी के साथ भागा कि तामी उसका धक्का सम्हाल न सका औंधे मुंह ज़मीन पर गिर पड़ा कीचड़ वहां बहुत थी, इस बीच में उस बच्चे की मां वहां आन पहुंची तामी के ऊपर से उछल गई निदान तामी कीचड़ में ऐसा लथ पथ हो गया और कपड़े भी सारे उसके ऐसे ख़राब हो गये कि देखने से पहचाना नहीं जाता था सूअर सा बनगया तामी में चंचलता और चतुराई दोनों बहुत थीं भला करने से जो यह बुरा फल मिला सह न सका उठ कर उस बच्चे की मा के पिछले दोनों पैर धर दाबे वह बड़े ज़ोर से चिल्लाने लगी और सारे बच्चे भी उसके साथ चिल्ला पड़े उसने बल किया तामी भी उसके दबाने को अपना सारा बल काम में लाया वह इस को अपनी ओर घसीटती थी और यह उसे अपनी तरफ़ खैंचता था कहावत चली आती है कि काने चोट कनौड़े भेंट कहीं एक बतकों का झुण्ड भी उस रास्ते से निकला वह सूअर की मादा उन्हीं के बीच में से तामी को घसीटती हुई निकली बतकें छितर बितर होगयीं और पंख उठा २ कर बड़ा शोर मचाने लगीं एक उनमें नर बहुत बड़ा और साहसी था वह तामी पर झपटा और कई चोंचें भी उसके मारीं तब तो तामी घबराया सूअर की मादा को छोड़ दिया और आप भी उन सभों के साथ किलकारी मारने और चिल्लाने लगा और मदद के लिये लोगों को पुकारने, बारलो साहिब तुरन्त उसके पास आये देखा कि सिर से पैर तक कीचड़ में लथ पथ हो रहा है पूछा क्या हाल है तामी का जब चेत ठिकाने आया जवाब दिया साहिब यह आप की सीख मानने का फल है जो जानवरों के हिलाने परचाने और उनके साथ नेकी करने के लिये आपने दी थी ॥

बारलो साहिब } भला जो मेरी सीख से तुमे यह फल मिला तो मुझे बड़ा अफ़सोस है परन्तु कहीं चोट तो नहीं लगी ॥

तामी । नहीं, चोट तो ऐसी नहीं लगी ॥

बारलो॰ तो अब तुम जाकर मुंह हाथ धो डालो और कपड़े बदल कर हमारे पास आओ ॥

जब तामी मुंह हाथ धोकर और कपड़े बदल कर फिर बारलो साहिब के पास आया साहिब ने कहा लो अब ठीक ठीक ब्योरेवार अपना हाल बयान करो और जो कुछ तुम पर बीती हो मुझे कह सुनाओ तामी ने सारा अहवाल आदि से अन्ततक कह सुनाया तब बारलो साहिब ने कहा कि मुझे तुम्हारे इस अचानक बिपत्ति में फंस जाने से जरूर कुछ अफ़सोस हुआ परन्तु यह मेरी सीख का फल कदापि नहीं है क्या मैं ने तुम को यह भी सीख दी थी कि सूअर के पिछले पैरों को जा पकड़ना और फिर जिधर को वह घसीटे, घसिटते हुए चले जाना ॥

तामी । नहीं. यह तो आप ने नहीं कहा था परन्तु जानवरों के हिलाने परचाने के लिये उनको खिलाना और प्यार करना बतलाया था मैं उस सूअर के पास रोटी खिलाने को गया था ॥

बारलो साहिब } तुमने इस बात में बड़ी गलती की उसको क्या मालूम था कि तुम खिलाना चाहते हो जब तुम ने उसे पकड़ना चाहा तो उसने भागने का उपाय किया बस अब इसमें मेरी सीख का कुछ दोष नहीं है यह सब तुम्हारी नादानी और बिना जांचे काम करने का फल है अब जब कभी किसी जानवर के पास जाओ तो पहले उसका सुभाव और प्रकृति अच्छीतरह जान लिया करो नहीं तो किसी दिन धोखा उठाओगे इसीतरह एक लड़के ने मक्खी के धोखे भिड़ को पकड़ लिया था और फिर उसके डङ्क से बड़ी तकलीफ़ उठायी और एक दूसरे लड़के ने नदी किनारे मछली जान कर सांप पर हाथ रख दिया था उसने

वोही लपक कर काटा कुशल हुई कि दवा जल्द मिली नहीं तो मरही जाता॥

तामी। परन्तु हारी कहता है कि एक लड़का सांप को दूध पिलाता था और चमचे से उसे ठोकता था तो भी वह उसको कभी नहीं काटता॥

बारलो साहिब } इसमें संदेह नहीं कि जानवर जबतक भूखा न हो अथवा छेड़ा न जाय बरबस किसी को नहीं सताता परन्तु तौ भी उनमें बहुत से बिष भरे होते हैं और बहुतेरे, आदमी से इतने डरते हैं कि थोड़ी ही सी बात में भड़क जाते हैं कु-शल हुई कि तुमको किसी बलवान् सूअर से काम न पड़ा नहीं तो तुम्हारी जान का डर था फिर कभी बिना जाने बूझे किसी जानवर को न छेड़ना तुमने शायद उस दर्ज़ी का क़िस्सा नहीं सुना जिसने हाथी की सूंड़ में सूई चुभोई थी॥

तामी। नहीं, मैं ने नहीं सुना उसको आप मिहरबानी करके सुनाइये॥

बारलो साहिब } सूरत शहर में एक दर्ज़ी रहता था नव्वाब के हाथी नित्त उसी की दूकान के आगे होकर पानी पीने को जाते उनमें एक हाथी दंतैल कुंजर बहुत बड़ा था जब वह हाथी उसकी दूकान के पास से निकलता दर्ज़ी नित्त कुछ फल या मिठाई खाने को दिया करता मानो उसका नेम बंध गया था वह हाथी भी बिना उसकी दूकान में सूंड़ डाले आगे को न बढ़ता, एक दिन ऐसा संयोग हुआ कि हाथी ने अपने नेम अनुसार खाने के लिये दूकान में सूंड़ डाली दर्ज़ी उससमय कुछ क्रोध में झुंझलाया हुआ बैठा था खाने को तो न दिया बरन उस की सूंड़ में सूई चुभो दी हाथी कुछ न बोला सूंड़ समेट कर चलता हुआ परन्तु जब पानी पीकर फिरा तो खूब गंदे कीचड़ भरे पानी से अपनी सूंड़ भरता लाया और दूकान के भीतर देकर उस दर्ज़ी के ठीक सिर पर सारा पानी छोड़ दिया॥

तामी। देखो हाथी इतना बड़ा जानवर है कि उस

दर्ज़ी का जो चाहता कर डालता परन्तु वाहरे उसका धीरज और संतोष कि सिवाय ख़बर्दार करने के और कुछ सज़ा देना उचित न समझा बड़े शर्म की बात है कि लोग आदमी होकर इन जानवरों को नाहक़ और बेसबब सतावें और दुख पहुँचावें दूसरे दिन तामी और हारी उस क्यारी में जो तामी ने तैयार की थी हारी के लाये हुए गेहूं बोने को गये तामी ने पूछा यार तुमने वह भी कहानी सुनी है जो चार रूसी एक उजाड़ हिमालय टापू में जा पड़े थे और छ बरस तक वहां रीछ और बारहसिंगे मार मार कर पेट पालते रहे ॥

हारी। हां मैं ने सुनी है ॥

तामी। उस कहानी की याद आने से मेरे तो रोंघटे खड़े होते हैं ॥

हारी। क्यों उसमें रोंघटे खड़े होने की क्या बात है ॥

तामी। क्या तुम्हारा मन उस टापू में जाने को चाहता है, मैं तो जानता हूं कि जो अभी तुमको कोई वहां लेजाकर छोड़ दे तो फिर रोने और चिल्लाने के सिवा तुम को और कुछ भी न सूझे ॥

हारी। नहीं उस टापू में तो जाने को मेरा मन नहीं चाहता वहां सर्दी बहुत है और सिवाय इसके अभी मेरी उमर भी ऐसी नहीं कि रीछों का सामना करसकूं परन्तु जो कोई ज़बरदस्ती मुझे वहां लेजा कर छोड़ दे तो रोने चिल्लाने का तो कभी नहीं क्योंकि रोने चिल्लाने से क्या लाभ निकलेगा ॥

तामी। रोओ चिल्लाओगे नहीं तो क्या करोगे ॥

हारी। जहांतक बन पड़ेगा अपने बचाने का उपाय करूंगा ॥

तामी। बचाने का क्या उपाय करोगे ॥

हारी। जो कुछ सामान मिल जावेगा पहले अपने रहने के लिये घर बनाऊंगा ॥

तामी। घर बनाने के लिये तो बढ़ई संगतराश और राज मज़दूर सैकड़ों आदमी चाहियें ॥

हारी । घर कई तरह के होते हैं गरीबों का घर ऐसा नहीं होता जैसा तुम्हारे बाप का है ॥

तामी । बेशक वे बहुत छोटे और बड़े खराब और निकम्में होते हैं मैं तो उनमें घड़ी भर भी न रह सकूं ॥

हारी । परन्तु देखो गरीब उन्हीं मकानों में रहते है और जो निरामयता और प्रफुल्लता उनको मिलती है अमीरों को सपने में भी मयस्सर नहीं यदि कोई समय ऐसा आन पड़े कि अमीरों का सा मकान रहने को न मिले तो तुम भी नाचार उन्हीं घरों में जाकर रहोगे ॥

तामी । हां तबतो उन्ही में रहना पड़ेगा मैदान से तो फिर भी वह गनीमत है पर यह तो बताओ कि वह घर किस तरह बनते हैं ॥

हारी । बनाना उनका कुछ कठिन नहीं है जो मुझे एक बसूला मिले मैं अभी पेड़ों की मोटी मोटी टहनियां काट काट धरती में गाड़ दूं और फिर पतली पतली नर्म नर्म टहनियां उनके बीच में गूंथ कर बाहर और भीतर दोनो ओर मिट्टी से सुन्दर कहगिल करके लीप दूं अभी एक घर तयार हो जावेगा बहुतेरे ऐसे देस हैं कि जहां सिवाय इन घरों के अमीरों के से महल मकान और कोठी बंगलों का किसी ने नाम भी नहीं सुना ॥

तामी । खूब, तबतो घर बनाना बहुत ही सुगम है हमलोग भी बन सके तो एक घर बनावें ॥

हारी । जो बसूला और कुछ लकड़ी मिले मैं घर बनाने को तैयार हूं इसमें इन दोनों के पढ़ने का समय आगया था बारलो साहिब ने बुलाया और कहा कि आओ तुमलोग अभी जानवरों के हिलाने परचाने की बात चीत कर रहे थे मैंने आज इसी बात की एक कहानी तुम्हारे लिये ढूंढ़ रक्खी है और यह कह कर किताब तामी के हाथ में दी तामी ने बहुत खुश होकर किताब ली और बोला कि साहिब मेरा मन पढ़ने से बड़ा प्रसन्न रहता है जब से मैंने पढ़ना सीखा मानो एक दुनिया की

निअमत हासिल करली ऐसी खुशी तमाम उमर कभी मुझे न मिली थी अब जब मैं चाहता हूं खुद अपने आप अच्छीतरह अपना मन बहला सकता हूं ॥

बारलो साहिब } बेशक विद्या ऐसी ही चीज़ है इससे आदमी का मन कभी नहीं उकताता खुशी मानों उसके काबू में रहती है सचमुच यह एक ऐसी अद्भुत दौलत है कि जिसको न चोर चुरा सकते हैं और न भाई बन्धु बांट सकते हैं अमीरों को इसकी बहुत ही जरूरत है क्योंकि पहिले तो उनको पेट की फिकर न रहने के कारण काम बहुत कम रहता है और दूसरे उन्हें हर बात में सबसे बढ़ कर रहना चाहिये बड़ाई और खुशी तासबादले और ज़र जवाहिर के पहर लेने से नहीं हो सकती यह तो एक कमीना और सिफ़ला भी दस पांच हज़ार रुपये खरचने या उधार मांगने से हासिल कर सकता है बड़ाई विद्या ही से मिल सकती है बिना विद्या किसी भांति भी बड़प्पन की धजा नहीं फहरा सकती फिर तामी ने उस कहानी को साफ़ और ऊंची आवाज़ से बड़ी खुशी के साथ पढ़ना शुरू किया ॥

॥ अच्छा लड़का ॥

एक दिन एक लड़का सबेर के समय अपने घर से कोस दो एक के अन्तर पर किसी गाव को जाता था और अपना दिन भर का खाना रूमाल में बांध लिया था रास्ते में इसे एक कुत्ता मिला ,भूखों मरते ऐसा दुबला होगया था कि हड्डियां ही उसके बदन में बाक़ी रहगयीं इस लड़के के सामने आकर बड़े प्यार से पूछ हिलाने लगा पहले तो उसने सोचा कि जो मैं अपने खाने में से कुछ इस कुत्ते को दूंगा मुझ को भूखा घर फिरना पड़ेगा परंतु जब देखा कि यह कुत्ता बहुत भूखा है उस लड़के से न रहागया रूमाल खोल कर कुछ थोड़ा सा खाना उसे खाने को दिया, आगे बढ़ कर क्या देखता है कि एक बुड्ढा घोड़ा धरती पर पड़ा है उठने की ताक़त नहीं मारे भूख के कराह रहा है

लड़के को उस पर भी बड़ी दया आई परन्तु इस बात का भी ध्यान था कि जो घोड़े की खबर लूंगा तो फिर गांव तक पहुंचने में देर होगी और घर फिरने के समय अँधेरा हो जायगा और सिवाय इसके रास्ते में चोर उचक्कों का भी डर है पर परिणाम उस लड़के ने अपने मन में यही ठाना कि जो हो सो हो कुछ घास काट कर इस बेज़ुबान के सामने रखनी चाहिये मैं इस जानवर के साथ भलाई करता हूं और उसकी जान बचाता हूं भगवान् मेरा भला करेगा और मेरी जान बचावेगा निदान उस लड़के ने घास लाकर घोड़े के आगे रक्खी और पानी भी अपनी टोपी में भर के उसे पिला दिया उस घोड़े को मानो भूख ही की मांदगी थी, खाने पीने को जो मिला लोट पोट कर खड़ा हो गया और चरने चुगने लगा फिर कुछ दूर बढ़कर वह लड़का क्या देखता है कि एक अंधा आदमी तालाब में नहाने के लिये उतरा था परन्तु घाट भूल गया दुखी पानी में खड़ा है और चारों ओर इस डर से टटोल रहा है कि शायद कहीं गहरे पानी में न जा रहूं लड़के ने पूछा कहो भाई क्या हाल है उस अन्धे ने जवाब दिया कि बाबा भगवान् तेरा भला करे मुझे कुछ भी दिखलाई नहीं देता है आज सबेरे से मैं इसी तरह इस तालाब में हैरान खड़ा हूं लड़के ने कहा जो मैं तुम्हारे पास आऊंगा जरूर मेरे सब कपड़े भीग जावेंगे परन्तु कुछ चिन्ता नहीं तुम छड़ी इधर फेंक दो अंधे ने उस लड़के की बोली सुन कर उसकी ओर छड़ी फेंक दी वह लड़का छड़ी से पानी की थाह लेता हुआ उस अंधे के पास पहुंचा और हाथ पकड़ के बाहर निकाल लाया अन्धे ने उस लड़के को सौ सौ असीस दी और कहा कि बस बेटा अब मैं अपना रास्ता टटोल लूंगा फिर वह लड़का वहां से आगे चला देर होजाने के कारण दौड़ा हुआ जाता था संयोग से रास्ते में एक बुड्ढा सिपाही मिलगया उसके दोनों पांव तोप के गोले से उड़ गये थे लाठियों के सहारे से चलता था लड़के को देख कर कहने लगा कि बच्चे मैं अपने देस इंगलिस्तान के लिये कई बार फ़रासीसों से लड़ा हूं पर अब अपाहिज हो गया फूटी कौड़ी भी पल्ले नहीं खाने बिना भूखों मरता

हूं यह सुनकर लड़के ने जो कुछ खाना उसके पास था सब का सब हवाले कर दिया और कहा कि भगवान् का भरोसा रखिये और जो कुछ मौजूद है उसे खाइये निदान जब वह लड़का गांव में पहुंचा तो झटपट अपना काम करके घर को फिरा अपने जान बहुतेरी दौड़ मारी पर आधेही रास्ते में उसको रात ने आलिया और हर तरफ़ अंधेरा छागया इसमें एक बिपत्ति यह और हुई कि बेचारा रास्ता भूलगया पगडंडी छूटगयी जंगल में जा पड़ा वहां बहुतेरा घूमा फिरा पर राह न मिली एक तो चलने की मांदगी दूसरे दिनभर का भूखा नाचार थक कर जमीन पर बैठ गया और डाढें मार कर रोने लगा परन्तु थोड़ी देर पीछे क्या देखता है कि वही कुत्ता जिसे उसने खाने को दिया था और बराबर पीछे लगा चला आता था एक गठरी मुंह में दबाये सामने आकर पूंछ हिलाता है लड़के ने जो उस गठरी को खोला तो उसमें रोटी और कबाब पाया कोई राह चलता धोखे से गिरा गया था खूब पेट भर कर खाया और भगवान् की यह लीला देख कर धन्यवाद करने लगा सचमुच नेकी का फल सदा नेकही मिलता है कुत्ते के साथ भी जो नेकी की तो वह भी निष्फल न गयी लड़के ने कुत्ते का उदर पूर्ण किया था कुत्ते ने भी लड़के को पेट भर खिला दिया॥

फिर वह लड़का जंगल में इधर उधर दौड़ने और रास्ता ढूंढ़ने लगा हाथ पांव तो कांटों से छिल गये पर रास्ता उसे न मिला थक कर चाहता था कि फिर जमीन पर बैठे इस बीच में चन्द्रमा आकाश में ऊंचा हो आया था, क्या देखता है कि वहां जंगल में एक घोड़ा चर रहा है पास जाकर ध्यान किया तो वही घोड़ा था जिसको उसने आते समय घास पानी दिया था लड़के ने उस पर हाथ फेरा और बिना लगाम ही उसकी पीठ पर हो बैठा वह घोड़ा चर चुका था घर की ओर जाता था जंगल से बाहर निकला तब लड़के ने सहज में अपना रास्ता ढूंढ लिया और मनमें यक़ीन किया कि नेकी का फल सदा नेकही है देखो थोड़ा सा चारा पानी देने के पलटे आज इस समय इस

ने मुझ को कैसी बिपत्ति से बचा लिया पर वह लड़का बहुत दूर न गया था कि दो चोरों ने उसे आ घेरा और पकड़ कर चाहा कि उस के सब कपड़े छीन लेवें तब उस वफ़ादार कुत्ते ने जिसने अबतक पीछा न छोड़ा था लपक कर एक के पावं को ऐसे जोर से खींचा कि वह पत्थर लेकर उस कुत्ते के मारने को दौड़ा कुत्ता भूंकता हुआ भागा इसी अर्से में एक शोर सुन पड़ा चोर चोर मारियो मारियो जाने न पावे कि वह दूसरा अपनी जान लेकर भागा लड़के ने जो आंख उठायी तो क्या देखता है कि वह बिना पावं का सिपाही जिसे खाने को दिया था उसी अंधे के कंधे पर सवार जिसको तालाब से निकाला था हू हल्ला मचाता चला आता है जब पास पहुंचा कहने लगा कि धन्य ईश्वर की माया जो हम भी तेरे काम आये जब ये दोनों चोर तेरे कपड़े छीनने की सलाह कर रहे थे मैं झाड़ी के बीच खड़ा सुनता था उनकी बात चीत से मुझे यक़ीन हो गया कि वह तेरेही कपड़े छीनने के उपाय में हैं सोचा कि जो मैं लाठी टेकता टेकता चलूंगा तो तुझ तक पहुंचने में देर लगेगी इतने में वह बदमआश तो अपना काम करलेंगे परन्तु सामने यह अन्धा दिखायी दिया तब हम दोनों ने तेरे बचाने को यह उपाय निकाला कि अन्धा तो राह चले और मुझको तुझ तक पहुँचावे और मैं उसको राह बतलाऊं और ठोकर न खाने दूं निदान वहां से उस लड़के का घर बहुत पास था दोनों को साथ ले गया खूब खिलाया और सोने के लिये बिस्तर दिया कुत्ता जबतक जिया लड़के ने उसका पालन किया और तमाम उमर याद रक्खा कि जो कोई दूसरों से नेकी की आस रक्खे आप भी उनके साथ नेकी करे बेशक नेकी का फल नेकी है ॥

तामी। क्या खूब कहानी है मेरा दिल इस कहानी के सुनने से बहुत खुश हुआ और अचरज नहीं कि यह बात सच हो क्योंकि देखो जितने जानदार क्या हैवान और क्या इन्सान जो इस जगह मौजूद हैं ऐसा कोई नहीं कि हारी से प्यार न रखता हो और कारण उसका केवल यही है कि वह उनके साथ



नेकी करता है वह बड़ा कुत्ता जिसके पास मैं कभी मारे डर के नहीं जासकता हारी के तलुए चाटा करता है और कूद कूद कर उस पर मोरछल की नाईं अपनी पूंछ हिलाता है मैं जब उसे इस ढंग पर देखता हूं शेर और अन्द्रोकलीस की कहानी याद आती है ॥

बारलो साहिब } जो तुम इस कुत्ते को प्यार करो तो तुमको भी वह कुत्ता उसी तरह प्यार करेगा जैसे हारी को करता है कुत्ते की ज़ात बड़ी वफ़ादार होती है परन्तु हारी तुम एक बदमिज़ाज लड़के की कहानी पढ़ो हारी ने किताब उठाकर पढ़ना शुरू किया ॥

बुरा लड़का।

किसी गांव में एक ज़मींदार के छोटा सा लड़का था पर वह ज़मींदार ऐसा बदमिज़ाज और निकम्मा कि उसको जिसने देखा मुंह फूला हुआ और रोती सूरत पाया त्योरी सदा चढ़ाये रहता लड़के के सिखाने पढ़ाने का कुछ भी ख़याल न करता संगति का बड़ा असर है जो देखता है वही सीखता है बेचारा वह लड़का भी अपने बाप की नाईं ख़राब और बदमिज़ाज हो गया हिम्मत का बहुत हेठा था लड़कों को छेड़ता, जब वह मारने को दौड़ते भाग जाता जो कभी उनके हाथ लगता तो फिर उसकी आधी उमर वाले भी उसको जूती मार लेते उससे कुछ भी न बन पड़ता उस छोकरे के पास टैगर नाम एक बाज़ारी कुत्ता था परन्तु वह कुत्ता उससे भी बढ़कर बुरा था सवारों को देखकर इतना भूकता कि बहुतों के घोड़े भड़क जाते भेड़ों के पीछे ऐसा मुँह निकाल कर दौड़ता कि सारा गल्ला बिखर जाता और गड़रिया बेचारा चारों ओर से उन्हें इकट्ठा करने में हैरान होता निदान उस छोकरे और कुत्ते की सूरत से सबलोग दुखी थे अब एक दिन का समाचार सुनो कि कोई त्यौहार आ पड़ा था काम काज कुछ न था उस छोकरे का बाप बड़े तड़के उठकर शराबख़ाने को चलता भया और अपने छोकरे को कुछ रोटी और कबाब और

चार टके पैसे देकर कह गया कि मैं सांझ तक नहीं आनेका तुजको इख़्तियार है जहां तेरा जी चाहे जा खेल कूद और अपना मन बहला वह छोकरा दिन भर की छुट्टी पाकर अपने मन में बहुत मगन हुआ और टैगर को साथ लेकर घर से बाहर निकला थोड़ी दूर गया होगा कि रास्ते में किसी के दर्वाजे पर एक छोटासा लड़का भेड़ों का गल्ला लिये चाहता था कि समेट कर उस मकान के भीतर लेजावे बड़ी बिनती से प्रार्थना की कि भाई आप ज़रा एक पलभर के लिये अपने कुत्ते को रोक रक्खें और इस ओर न आने दें नहीं तो यह भेड़े सारी बिखर जायेंगी ॥

बुरा लड़का } ख़ूब, मै आप के लिये राह खोटी करूं और कुत्ते को लेकर जबतक सारी भेड़े घर में न घुस जावें यहां सड़क पर खड़ा रहूं यह कह कर कुत्ते को एक सीटी का जो इशारा किया तो वह बिजली की नाई लपक कर उन भेड़ों के बीच में कूद पड़ा और भूक भूक कर उन बेचारी बे ज़बानों को काटने लगा भेड़े उस कुत्ते की दहशत से सारी तित्तर बित्तर होगयीं और जिधर राह पाई भागने लगीं संयोग से उनमें लड़ाई का एक मेढ़ा था जब कुत्ता उस पर झपटा उसने एक ऐसी टक्कर मारी कि टैगर चित्त गिर पड़ा और रोता हुआ दुम दबा कर वहां से रफूचक्कर हुआ दया और प्यार का तो वह छोकरा नाम न जानता था कुत्ते का दुख देखकर और भी अपने मन में मगन हुआ बरन यह तो उसके लिये मानो एक तमाशा हुआ खिल-खिला कर हस पड़ा परन्तु जब उस गड़रिये के लड़के ने देखा कि यह छोकरा किसी तरह नही मानता भेड़ों को भगाये ही देता है एक ढेला ऐसा घुमा कर उसकी कनपटी पर मारा कि बचाजी का सिर भिन्ना गया रोता कराहता वहां से आग को चला लेकिन चोट से जब कुछ चेत हुआ तो फिर उसे भूत चढ़ा एक ग्वालन की लड़की दूधभरी हांडी घर को लिये जाती थी रास्ते में एक चबूतरे पर दम लेने के लिये उतारी थी इस छोकरे को देख कर बहुत आधीनता से कहने लगी मुझ पर मिहरबानी करके यह हांडी सिर पर रखा दो मैं आध कोस से चली आती

हूं सबेरे की घर से निकली हू थक गयी थी इसलिये सुस्ताने को यहां ठहरी थी जो दूध लेकर जल्द न पहुँचूगी तो मेरी मा बहुत खफ़ा होगी और आज खीर भी न पक सकेगी एक ज़रासा तुम सहारा देदो तो मै इस हांडी को उठा लू ॥

बुरा लड़का } आज तुम्हारे घर खीर पकेगी ?

ग्वालन की लड़की } हां आज हमारे घर सारे कुनबे का नेवता है बड़ी खुशी से दिन कटेगा मुझे जाने की जल्दी है आओ हांडी उठवादो ॥

बुरा लड़का । बहुत अच्छा, मै तुम्हारी हांडी उठा देता हू ॥

यह कह कर हांडी उठायी पर रखने के बदले उस लड़की के सिर पर उलटी औधा दी बेचारी सारी दूध से भीग गयी ढाढ़े मार कर रोने लगी छोकरा खूब हसा और यह कह कर कि बीबी साहिब सलाम अपने सारे कुनबे की खिदमत मे भी सलाम पहुँचाइयेगा और जब खीर पके तो थोड़ीसी मुझे भी भिजवा दीजियेगा वहां से चल दिया॥

इन दोनो जगह से जब वह बिना कुछ सज़ा पाये बचगया तो मन में और भी शेर हुआ और समझा कि मैं अपनी हिक्मत और चतुराई से जिस किसी को चाहूं छेड़ सक्ता हू यह तो खूब ही तमाशा है सेंत मेंत का मन बहलाव है थोड़ीही दूर गया था कि एक हरे भरे मैदान में बहुत से छोटे छोटे लड़के गेंद खेल रहे थे इसने भी उनके साथ खेलने की इजाज़त मांगी उन्हों ने तुरन्त कहा कि आओ तुम भी खेलो, जब इसकी पारी आयी दुष्ट नटखट ने ऐसे ढब गेंद उछाली कि एक कीचड़ भरे नाले में जा पड़ी लड़के जब उसके देखने के लिये नाले पर गये और झुक झुक कर देखने लगे उसने एक लड़के को ऐसी उस्तादी से धक्का दिया कि उसका धक्का दूसरे को लगा और दूसरे का तीसरे को इसी तरह सब के सब लड़के एक संग उस नाले में गिर पड़े कीचड़ में लथपथ हो गये बड़ी मुशकिल से बाहर निकले चाहा कि उसको पकड़ें और सज़ा दें पर कुत्ता

भूकने और उनको घूरने लगा लड़के डर गये और वह बदमिज़ाज छोकरा उनके हाथ से भी साफ़ बच गया ॥

आगे बढ़कर क्या देखता है कि एक गधा जंगल में चर रहा है इस पलीद से बिना छेड़े कब रहा जाता था एक कांटों का गुच्छा उसकी पूंछ में बांध दिया और टैगर को इशारा किया कुत्ते ने उस बेचारे गधे को बहुत सताया चारों ओर से दौड़ दौड़ कर उसे भंभोड़ने लगा परन्तु कुत्ते के भी दिन पूरे हो चुके थे कहीं जो एक दुलत्ती उस गधे की टैगर के माथे पर लग गयी तो फिर उसने सांस न ली उसी जगह सर्द होकर रह गया उस बदमिज़ाज छोकरे को कुत्ते के मरने की भी क्या परवाह थी कुछ भी सोच न किया आगे को चलता हुआ दिन चढ़ आया था भूख बहुत लगी सड़क के किनारे बैठ कर खाना खाने लगा इस अर्से में एक अन्धा लाठी टेकता वहां आ निकला ॥

बुरा लड़का। क्यों बाबा बटोही आप ने कोई छोटी सी लड़की भी सड़क पर जाते देखी है हरी छींट का कपड़ा पहने हुए और अण्डों की टोकरी सिर पर लिये ॥

अन्धा। भगवान् तुमको जीता रक्खे मैं तो दोनों आंखों से अन्धा हूं बीस बरस से आंखें जाती रहीं कुछ भी नहीं देख सकता ॥

वह अन्धा सब तरह से दयापात्र था पर वह छोकरा बदमिज़ाज झूठा दग़ाबाज़ कब अपनी दग़ाबाज़ी छोड़ सकता था बोला कि सूरदासजी मुझे आप की आंखों के जाने का बड़ा अफ़सोस है मैं इस समय कलेवा करता हूं जो आप का मन चाहे तो आप भी आकर शरीक हूजिये जो कुछ हाजिर है आप की नज़र है ॥

अन्धा। भगवान् तेरी एक सौ बीस बरस की उमर करे कहां बैठूं जो तू हाथ पकड़ के अपने पास बैठाले तो बड़ी मिहरबानी है ॥

छोकरे ने उसका हाथ पकड़ कर बड़े से गोबर के एक ढेर पर बैठा दिया बेचारा अन्धा कमर तक गोबर में धस गया ॥

बुरा लड़का } क्यों सूरदास कैसे बैठे ?

अन्धा कुछ न बोला मानो गोकर से बिलकुल बेखबर था परन्तु छोकरे को इस पर भी दया न आयी वहीं गोबर उंगली में लगा कर उसके मुँह के पास ले गया और कहा लो सूरदास खाओ उसमें मुँह खोला छोकरे ने उंगली दी उसने हबक कर जोर से दांतों तले दबा ली तब तो बचाजी की नसें ढीली हुई गिड़गिड़ाने लगा हाथ जोड़े पांव पड़ा सौ सौ बिनती की अन्धे ने उंगली तो छोड़दी पर उस छोकरे को सीख दी कि अभागे तुझे दुखियों को भी दुखाते शर्म नहीं आती मैंने तेरा क्या बिगाड़ा था जो तूने मुझे इस ढब छेड़ा जा मैंने तुझे इस समय छोड़ दिया पर फिर किसी को इसतरह सतावेगा तो अपने किये की सजा पावेगा ॥

इस किताब के पढ़नेवाले सोचेंगे कि फिर तो उस छोकरे ने किसी के साथ ऐसी छेड़ छाड़ न की होगी परन्तु याद रक्खें कि जो जिस की कुटेव पड़ जाती है कब उस की जड़ जाती है। थोड़ी ही दूर आगे गया था कि एक लंगड़े बैरागी से मुलाकात हुई बैरागी ने छोकरे से सवाल किया छोकरे ने एक पैसा खीसे से निकाल कर जमीन पर फेंक दिया लंगड़ा पैसा उठाने को जब नीचे झुका छोकरे ने उसकी लाठी कि जिस के सहारे से वह झुका था ऐसे जोर से खींच ली कि वह धड़ाम से मुँह के बल जमीन पर गिर पड़ा छोकरा अपना पैसा उठाकर खिलखिलाता हुआ घर को भागा परन्तु कुछ दूर जाकर जो फिर निगाह की तो देखा कि वह लंगड़ा दो आदमियों से कुछ बातें कर रहा है मन में डर पैदा हुआ कि कहीं मेरा पीछा न करें जान छोड़ कर दौड़ा सड़क छोड़ दी खेतों की राह ली संयोग से एक जमींदार के बाग में अंगूर की टट्टियां दिखायी दीं छोकरे ने चाहा कि खाबें पर चढ़ कर फांद जावे परन्तु एक बड़े से कुत्ते ने जो उस बाग का रखवाला था लपक कर उसका पल्ला पकड़ लिया छोकरा चिल्लाया जमींदार घर से निकल आया और उसे कुत्ते से छुड़ाया पर गले में हाथ देकर कहने लगा कि साहिब आपही मेरे सेब

नित्त चुरा लेजाया करते थे बहुत दिनों से मैं आप के खोज में था अब कहिये कि आप को क्या मज़ा चखाऊं और किस सज़ा को पहुंचाऊं यह कह कर कोड़ा उसकी पीठ पर मारने लगा छोकरा चिल्लाया कि मैं बेगुनाह हूं मैंने आप के सेबों की सूरत भी नहीं देखी मेरा यह नाम है और उस जगह का रहने वाला हूं मैं चोर नहीं हूं माफ़ कीजिये वह ज़मींदार उसका नाम सुनतेही और भी कोप में आया और बोला कि बदज़ात तू वही दुष्ट छोकरा है जिसने आज सबेरे मेरी भेड़ें तित्तर बित्तर की थीं दिनभर मैं उनके पीछे हैरान रहा अबतक कई का पता नहीं लगा, जब देखा कि अब ज़ियादा मारने से यह मरही जायगा तब अपने बाग से बाहर निकाल दिया और कहा कि जा अभागे अब फिर किसी की कभी भेड़ें तित्तर बित्तर न कीजो छोकरा रोता सिसकता घर की ओर चला और मन में अपने किये से पछताने लगा पर खावें से कूदा तो अचानक उस बैरागी के आगे जा पड़ा जिसको पैसा दिखलाकर गिराया था वह बैरागी उस खावें के सहारे से बैठा धूप खा रहा था छोकरा ठीक उसकी गोद में जागिरा बैरागी ने तुरन्त दबा लिया छोकरा बहुतेरा गिड़गिड़ाया पर उसने बिना पलटा लिये न छोड़ा जब वह छोकरा उस लंगड़े के भी हाथ से पिट कर झीखता पीटता आगे को बढ़ा तो एक ठीक मोड़ पर उन लड़कों के साथ मुंह भेर हुई जिनको कीचड़ से भरे नाले में गिराया था उन्हों ने देखतेही चारों ओर से इसे घेर लिया, किसी ने बाल नोचे, किसी ने खाल खींची किसी ने चुटकियां काटीं किसी ने इसके पांव में रूमाल के कोड़े बट के मारे फिर सबके सब धौल धप्पा मारने और कूड़ा मिट्टी उस पर डालने लगे जिधर वह भागता था वे उसका पीछा करते थे संयोग से वह उस जगह पहुंचा जहां उस गधे की दुम में कांटे बांधे थे गधा तबतक उसी जगह चर रहा था लड़कों से अपना पिंड छुड़ाने के लिये कूद कर गधे की पीठ पर जा बैठा परन्तु गधा एड खातेही ऐसा भागा कि उसके बूते से बाहर हो गया और, अब गिरा, तब

गिरा, हो रहा था कि वह गधा एक ग्वाले के दरवाजे पर जाकर अड़गया और दुलत्तियां फेंकने लगा छोकरा गिर पड़ा सिर फूट गया उठने की ताक़त न रही रोने लगा ग्वाला इसके रोने की आवाज़ सुनकर बाहर निकला उसके साथ वह छोटी लड़की भी निकली जिसका इस बद मिज़ाज ने दूध गिराया था पर वह लड़की नेक थी इससे बदला लेने का कुछ बिचार न किया बरन अपने बाप के साथ उसे उठा कर भीतर लेगयी और सोने के लिये एक चारपाई बिछौने समेत बिछादी छोकरा अपने मन में बहुत पछताया और अत्यन्त लजाया, उस दिन से प्रण किया कि जो मेरा पांव अच्छा हो जाय तो फिर आगे कभी किसी के साथ बदी न करूंगा बरन जहांतक बन पड़ेगा सब के साथ नेकी करूंगा । जब कहानी पूरी हुई तामी बोला कि देखो इस बदज़ात लड़के में और उसमें जिसकी कहानी मैंने पढ़ी थी कितना बीच है दोनों छोटे छोटे लड़के थे पर एक नेक था और दूसरा बद नेक जहां गया उसे मदद मिली बद ने जिसको पाया अपना बैरी बनाया, शाबाश, उस लड़की की भलमनसाहत पर कि उसका सारा दूध गिरा दिया तिसपर भी उसने इसके साथ ऐसी भलाई की और उसे चारपाई दी ॥

बारलो साहिब । बेशक यह नीत बहुत अच्छी है जबतक आदमी दूसरों के साथ भलाई नहीं करता और प्यार से नहीं बोलता दूसरे लोग भी उसके साथ भलाई और प्रेम नहीं करते और कोई नहीं कह सकता कि कब किसकी सहायता का काम पड़जाता है बुद्धिमान् लोग इसीलिये हर आदमी के साथ भलाई करते हैं, भलाई का करना हमलोगों का एक उत्तम कर्म है, दूसरे भलाई करने से मनको बड़ा आनन्द होता है और तीसरे औरों के साथ भलाई करने से अपनी भलाई भी प्रगट होती है, आदमी कैसाही धनवान्, दबदबे वाला कितनी ही सामर्थ्य रखता हो परन्तु बहुधा ऐसा संयोग पड़जाता है कि छोटे से छोटे आदमी की मदद दर्कार होजाती है, इसी किताब मे एक कहानी लिखी है, परन्तु आज तुमने बहुत पढ़ा अब थोड़ी देर बाहर जाकर हवा खाओ ॥

तामी । ऐ साहिब उस कहानी को भी पढ़ लेने दीजिये अब तो मेरा मन ऐसा चाहता है कि दिन रात कहानी ही पढ़ा करूं ॥

बारलो साहिब । नहीं, हर काम के लिये समय ठहरा लिया गया है और जिस समय का जो काम है उसको उसी समय में करना चाहिये अब चल के बाग़ में काम करो कल फिर कहानी पढ़ना ॥

तामी । बहुत अच्छा जैसी आप की मर्ज़ी परन्तु आप मिहरबानी करके एक चीज़ दीजिये ॥

बारलो साहिब । हां, जो देने लायक़ होगी दीजायगी ॥

तामी । हाल यह है कि आदमी दुनिया में जहां तक बन पड़े सब तरह के काम सीखे ॥

बारलो साहिब । तुम्हारी समझ बहुत ठीक है जितने काम आदमी सीखता है उतना ही उसके लिये अच्छा होता है ॥

तामी । अब हम और हारी दोनों मिलकर चाहते हैं कि एक घर बनावें ॥

बारलो साहिब । घर बनाना चाहते हो तो ईंट और सुर्ख़ी चूना कहां है ॥

तामी । नहीं साहिब हम बिना सुर्ख़ी चूना और ईंट के घर बनावेंगे ॥

बारलो साहिब । ख़ूब, तो मालूम होता है कि आप लोग काग़ज़ का घर बनावेंगे ॥

तामी । साहिब आप तो हंसी करते हैं अब हम दोनों ज़रा ज़रा से बच्चे नहीं हैं कि काग़ज़ का घरौंधा बनावें, हम ऐसा घर बनाना चाहते हैं जिसमें आदमी रह सके किसलिये कि जो कभी संयोग से उन रूसियों की नाईं किसी उजाड़ टापू में जा पड़ें तो अपने रहने के लिये हम भी वहां घर बना सकें ॥

बारलो साहिब । फिर तुमको चीज़ क्या चाहिये ॥

तामी । कुछ लकड़ी और एक बसूला ॥

बारलो साहिब । लकड़ी जितनी तुमको चाहिये यहां मौजूद

है परन्तु बसूले से कभी तुम ने पहले भी कोई चीज काटी है ॥

तामी । नहीं साहिब अब तक तो मैंने बसूला कभी हाथ से भी नहीं छूआ ॥

बारलो साहिब । मुझे डर है कहीं तुम अपना हाथ न काट डालो, वह बहुत तेज होता है परन्तु चिन्ता नहीं तुम को जैसी लकड़ी चाहनी हो मुझे बतला दो मैं बसूले से छील दूंगा ॥

तामी यह बात सुनकर बहुत खुश हुआ और दोनों लड़के बारलो साहिब के साथ उठकर बाग में गये बारलो साहिब ने हारी के बतलाने बमूजिब कुछ लकड़ियां पहुँचे बराबर मोटी और आठ आठ फुट लंबी एक सूखे पेड़ से काट दीं और एक एक सिरा उनका मेख की तरह नुकीला करदिया जिसमें आसानी से जमीन में गड़ सकें घर का बनाना लड़कों के चित्त पर चढ़ गया था तामी अपनी सारी अमीरी भूल गया मजदूरों की तरह लकड़ी ढोने लगा देखते ही देखते उन दोनों लड़कों ने सारी लकड़ी वहां से उठा कर बाग के एक कोने में जहां घर बनाने की मन में ठानी थी पहुँचा दी जब लकड़ी इकट्ठी होगयी हारी ने एक एक फुट के अन्तर से बड़ी मजबूती के साथ गाड़ना शुरू किया, अनुमान दस फुट लम्बी और कोई आठ फुट चौड़ी जगह घेर ली बीच में उसके तीन फुट का चौड़ा एक दरवाजा छोड़ दिया और उन लकड़ियों के बीच में जगह जगह पेड़ों की पत्ती और पतली पतली टहनियां इस ढब से गूंथ दीं कि वह अच्छी खासी टट्टियां बन गयीं निदान दो तीन दिन तक इसी तरह वह दोनों लड़के उस घर के बनाने में बड़ी मिहनत करते रहे और ज्यों ज्यों वह घर बनता और तयार होता जाता था तामी का मन अंग में फूला न समाता था एक दिन के समाचार हैं कि वे तीनों अर्थात् तामी हारी और बारलो साहिब जब बाग के काम से निश्चिंत होकर अपने हवादार बंगले में बैठे तामी ने बारलो साहिब को उस कहानी की याद दिलायी जिसका उन्हों ने एक दिन वादा किया था बारलो साहिब ने किताब खोल कर कहानी निकाल दी तामी ने पढ़ना शुरू किया ॥

वफ़ादार तुर्क ।

अफ़सोस की बात है कि बहुत सी क़ौमें आपस में लड़ती झगड़ती रहती हैं और बिना सोच बिचार झटपट ख़ून ख़राबा मचा देती हैं और जब एक क़ौम के आदमी दूसरी क़ौमवालों को इस नित की लड़ाई भिड़ाई में पकड़ ले जाते हैं तो उन बेचारों के पांव में बेड़ियां डालकर बन्दीख़ानों में क़ैद करदेते हैं और रुपये वालों के हाथ गुलामी में बेच डालते हैं जब वीनिस के शहर वालों की तुर्कों के साथ दुश्मनी पड़गयी थी संयोग से एक बार वीनिस के जहाज़ वालों ने बहुत से तुर्कों को गिरफ़्तार कर लिया और शहर में लाकर लोगों के हाथ गुलामी में बेच डाला उनमें एक तुर्क का नाम हामिद था वह बहुधा अपने मालिक की ड्योढ़ी पर बैठा रहता सामने फ़्रांसिस्को नाम एक बड़े सौदागर की दूकान थी और उस सौदागर के एक छोटा सा लड़का था, जब वह लड़का दूकान से निकलता तो देर तक अजनबी होने के कारण उस तुर्क की सूरत शकल, पोशाक, और चालढाल देखा करता वह भी एक ही आदमी का परखने वाला था उस छोकरे की सूरत में आदमियत और शील संकोच के चिह्न पाकर सदा उसे सलाम किया करता और जो कुछ बात वह पूछता बहुत प्यार के साथ जवाब देता अंत को धीरे धीरे उस लड़के की तुर्क से ऐसी प्रीति होगयी कि घड़ियों उसके पास बैठा रहता, और बातें किया करता जो कुछ छोटी मोटी चीज़ उसके पास होती और समझता कि तुर्क के काम की है तुरन्त उसे दे देता ॥

यद्यपि हामिद उस लड़के के साथ ख़ुशी की बातें किया करता परन्तु वह लड़का उसे सदा मुखमलीन और तनछीन पाता और चिहरे पर चिह्न व्याकुल और शोकाकुल होने के देखता कभी कभी कोई बूंद आंसू की भी आंखों से टपक पड़ती, लड़का बड़े अचरज में आया उसका मन न रुक सका एक दिन अपने बाप से कहने



लगा बाबा जान आप क्या किसी ढब से इस तुर्क का दुख नहीं दूर करसकते उसको उदास देख कर मेरा भी जी उदास होता है सौदागर को अपना लड़का प्राण से अधिक प्यारा था कहने लगा कि बेटा कल मैं उसे जाकर आप देखूंगा और हाल पूछूंगा ॥

दूसरे दिन बड़े तड़के वह सौदागर उस तुर्क के पास गया और देर तक चुपचाप देखता रहा भलमनसाहत और सचाई उसके चिहरे पर बरसती थी पूछा कि आया साहिब हामिद तुम्हारा ही नाम है ?

तुर्क । हां साहिब हामिद इसी ग़रीब को कहते हैं ॥

सौदागर । मेरा लड़का तुम से बहुत हिल गया है और सदा तुम्हारी बड़ाई किया करता है ॥

तुर्क । मैं किस लायक़ हूं आज तीन बरस से यहां फंसा हूं और गुलामी करता हूं पर इतने दिनों में केवल आपही का वह छोटा लड़का आदमी जान पड़ा है वही मेरी इस बुरी दशा को देख कर मन में तरस खाता है और बाक़ी तो सब को इस देश में निरा पशु बरन पत्थर कहना चाहिये उस सर्वशक्तिमान् कृपानिधान भगवान् की सृष्टि में सब हिन्दू मुसल्मान और ईसाई पलते पुसते हैं रात दिन आप के बेटे के लिये यही दुआ मांगा करता हूं कि अपनी कृपादृष्टि से उसका कुशल मंगल करे और मेरी तरह उसे किसी बिपत के चंगुल में न फसने दे ॥

सौदागर । मैं उस बच्चे के लिये तुम्हारे दुआ करने से बहुत इहसानमन्द हुआ परन्तु दौलत और हुकूमत हम लोगों को भगवान् ने इतनी दी है कि कोई सामान ऐसा नहीं दिखलायी देता जिस से उसको किसी तरह की बिपत् वा दुख दर्द पड़ने का भय हो पर यह तो बताओ कि तुम मुझ से किस बात की मदद चाहते हो मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूं वह लड़का कहता था कि तुम सदा सोच सागर में डूबे रहते हो यह सुन कर तुर्क का जी भर आया बेधड़क बोल उठा कि साहिब मेरा मन दुख दर्द से भरा है तो इसमें अचरज कौन सा है दुनिया में प्यारों की जुदाई से बढ़के कोई बात दुखदाई नहीं है जब वही न मिटसकी तो फिर खुशी कैसी ॥

सौदागर । यही बात है तो फिर तुमने हमारी क़ौम के हजारों आदमी क्यों ग़ुलाम बना रक्खे हैं ॥

तुर्क । मैं कुछ सारी दुनिया का जिम्मेदार नहीं हूं हां इतना कह सकता हूं कि मैंने उमर भर कभी किसी आदमी को गुलाम या लौंडी नहीं बनाया और न कभी अपने फ़ायदे के लिये तुम्हारे सौदागरों का माल असबाब लूटा बरन इसीकारण यह दुख मुझसे सहा नहीं जाता ॥

उसकी आंखों से आंसू टपक पड़े पर उसने अपने मन को सम्हाला और आस्मान की ओर आंख उठा कर बोला ऐ ख़ुदा मैं इस हालत में भी तेरा शुक्रगुजार हूं ॥

सौदागर ने उस तुर्क की सूरत और हिम्मत देख कर बड़ा तरस खाया और कहने लगा कि हामिद तेरी यह दशा देख कर मुझे बड़ी दया आती है भगवान् की शान से दूर नहीं कि वह मेरे सबब से तेरा छुटकारा कर दे परन्तु यह तो बता कि जो मैं तुझे छुड़ा दूं तू मेरे लिये क्या करेगा ॥

तुर्क । भगवान् साखी है मैं अपने छुड़ाने वाले के लिये अपनी जान तक भी होम सकता हूं जिस के सुनने से लोगों का पित्ता पानी हो मैं उसके करने के लिये भी मौजूद हूं ॥

सौदागर । तुम्हारे छूटने में अब कुछ भी शक नहीं है परन्तु जो तुम नामर्दी न करो ॥

तुर्क । बताओ तो सही कि वह काम कौनसा है जो काल को भी मेरे सामने लेआओ क़सम है उस ख़ुदा की जो हर जगह अंधेरे उजाले में मौजूद रहता है मैं कदापि मुंह न मोड़ूंगा ॥

सौदागर । जरा धीरे बोलो लोग सुन लेंगे तो फिर मतलब हाथ से जाता रहेगा धीरज से सारी बातें बन पड़ती हैं ख़ैर जो तुम अब पूछते हो तो मैं कहता हूं इस शहर में मेरा एक दुश्मन है और वह मुझ को सदा छेड़ता और सताता रहता है मैं ही ऐसा हूं कि अबतक उसकी जियादती सहता हूं जैसा वह साहसी और बलवान् है वैसाही उसे घमण्ड भी है मैं सदा उससे डरता रहता हूं तुम्हारी सूरत शकल और बोल चाल शूर बीरों की सी है इस तल्वार को

लो और रात के समय उसके घर में पहुँच कर एक बार ऐसा करो कि फिर वह पानी न मांगे उसके दर्वाजे तक तुमको मैं पहुँचा दूंगा ॥

इस बात के सुनतेही हामिद की गैरत जोश में आई पहले तो कुछ हक्का बक्का सा होगया पर फिर आकाश की ओर हाथ उठाकर पुकारा ऐ खुदा ! हम बिना अपराध इन बेईमान कसाइयों के हाथ गुलामी में बेचे जावें ? इतना कह कर सौदागर से बोला कि चल कमीने सामने से दूर हो फिर कभी ऐसी बुरी बात अपने मन में न लाइयो छूटना तो एक ओर जो बादशाही भी मिले तो मैं ऐसा पाप अपने सिर न लूंगा ॥

सौदागर का चिहरा इन बातों से कुछ भी न बदला धोखा देकर बहुत प्रकार से समझाता रहा बोला कि आप मेरी बात का बुरा न मानिये मैं ने जाना था कि आप अपना इस महादुःख से छुटकारा चाहते हैं इसलिये इतना कहने में आया कुछ चिन्ता नहीं आप मेरी बात को फिर किसी समय अच्छी तरह सोचियेगा जो कलतक भी आप के मन में यह बात आजाय तो मैं अपना क़ौल पूरा करने को मौजूद हूं हामिद ने कुछ जवाब न दिया ॥

दूसरे दिन सौदागर अपने लड़के को साथ लेकर फिर हामिद के पास आया बहुत नर्मी के साथ कहनेलगा कि शायद मेरे कल के कहने में कोई बात ऐसी मुँह से निकल गई हो जो आप को बुरी मालूम हुई हो पर अब आप मेरे मतलब को अच्छी तरह अपने मन में सोचिये और ऐसे मौक़े को अपने हाथ से न जाने दीजे ॥

तुर्क । ऐ ईसाई ! बस अब बहुत मुझ को मत छेड़ यह बेईमानी की बातें मेरे कलेजे के घाव में नमक से जियादा खटकती हैं जो तेरे मत में ऐसे कामों का करना उचित हो तो हो परन्तु हमारे शहर के मुसल्मान कभी ऐसा बुरा काम न करेंगे अब यही बात अच्छी है कि तू हमारे पास न आवे और हम को अपना मुँह न दिखावे ॥

तब तो सौदागर ने उस तुर्क को छाती से लगाया और कहा कि शाबाश भाया तुम मेरे कहने का कुछ भी बुरा न मानो मैं इन

बातों से आप को परचाता न था बरन आप का परिचय लेता था तुम्हारी मिलनसारी और बातें ऐसी प्यारी हैं कि दुश्मन भी तुम्हारे दोस्त हो जायेंगे अपने लड़के की खातिर मैं तुम्हें देखने आया था, जब से तुम में इस तरह का ईमान और भलमनसाहत पाई मेरा मन गद्गद हो गया सच जानो कि जैसा तुम धोखा धड़ी और छल छिद्रों को अपराध समझते हो मैं भी उसी तरह ऐसे कामों को महापाप जानता हूं वह बात केवल तुम को आज़माने के लिये मैंने कही थी यह अपने छूटने का कागज़ लो और जहां जी चाहे चल दो मैंने तुम्हें खुशी से छोड़ दिया है जब अपने देश में पहुंचो मुझ को चिट्ठी लिखना और ईसाइयों को खुश रखना ॥

हामिद को इस खबर के सुनने से जैसी खुशी हासिल हुई और अपने मन में उस सौदागर का इहसान मान कर जिस ढब उस का शुक्र अदा करने लगा बयान से बाहर है सौदागर ने उसे वहां से ले जाकर एक जहाज़ पर जो उस के देश की ओर जाता था सवार करा दिया और राह खर्च के लिये एक तोड़ा रुपये का हवाले किया फिर बड़ी खुशी से दोनों आपस में मिले और बिदा हुए, तुर्क ने जब उस लड़के से जो उसके छूटने का कारण हुआ था बिदा मांगी आंख से आंसू बहने लगा और आकाश की ओर देख कर हज़ारों असीस देने लगा ॥

इस बात को छ महीने हुए होंगे एक दिन दैवात् पिछली रात को जो समय गहरी नींद आने का है फ्रान्सिस्को के घर में आग लगगई बड़ी हड़बड़ी पड़ी नौकरों ने जगाने के लिये फ्रान्सिस्को को खूब चिल्ला कर पुकारा वह नींद में आंखें मलता घबरा कर नीचे उतर आया इधर उसका उतरना और उधर आग का ऐसा भड़कना था कि सीढ़ी भी सारी गिर पड़ी सौदागर का बेटा उस दिन अपने बाप के साथ उसी कमरे में सोया था जब सौदागर को अपने बेटे की सुध आयी अपने बच जाने की खुशी तो जाती रही लड़के के लिये बिन पानी मछली की तरह तड़पने लगा, चाहा कि उस जलती हुई आग में कूद पड़े परन्तु नौकरों ने रोका और सम-

झाया कि आप यह क्या करते हैं अपनी जान सेंत मेंत क्यों खोते हैं धीरज धरिये और ढाढ़स पकड़िये भगवान् का ध्यान कीजिये और निरास न हूजिये लोग उस लड़के को कोठे पर से उतारने के लिये उपाय करने लगे और सौ सौ तरह पर अक़्ल दौड़ाने कोई काठ की सीढ़ियां लगाता था कोई लकड़ी और रसी लेकर पाड़ बांधता था पर आग की लौ जो खिड़की की राह से बाहर निकलती थी इन सब का मुँह फेर देती थी, फ़ान्सिस्को पुकार पुकार कर लोगों से यही वादा करता था कि जो मेरे लड़के को इस आफ़त से बचाये बेखटके मेरी आधी दौलत बांट लेवे वह लड़का भी छत की मुंडेर पर खड़ा हुआ हाथ फैला कर सब से मदद मांगता था निदान सब तरफ़ हाय हाय मचगई और प्रलय कीसी सूरत बनी कि अचानक एक जवान दौड़ कर भीड़ को चीरता हुआ वहां पहुँचा और तुरन्त एक काठ की सीढ़ी लेकर खिड़की की राह से मकान के भीतर कूद पड़ा लोग उसे सिड़ा बावला समझे और जला जानकर उसके जान देने पर अचरज करने लगे परन्तु छिनमात्र में क्या देखते हैं कि वही आदमी जिसे सिड़ा बावला समझा था अपनी जान को होमकर उस सौदागर बच्चे को गोद में लिये उतरा आता है चारों ओर से शोर वाह वाह और शाबाशी का मचगया सौदागर की खुशी का तो क्या ठिकाना था सच कहा है जिसने हिम्मत के समुद्र में गोता लगाया मुराद का मोती हाथ में पाया ॥ " साहस करें बिपति में भाई । तिनहीं के प्रभु होंहि सहाई ॥" फ़ान्सिस्को ने अपने लड़के को छाती से लगाया और फिर उसकी ओर फिरा जिसने उसे जलने से बचाया देखा कि एक लम्बा जवान पछुवा कि जिसके चिहरे पर भलमनसाहत के चिह्न चमक रहे हैं बड़े मैले कुचैले कपड़े पहने खड़ा है फ़ान्सिस्को ने उसका धन्यवाद किया और एक थैली अशरफ़ियों की देकर कहा कि आप कल आइये और वादे कबूलिये मेरी आधी दौलत नक़द लीजिये वरन मैं और भी उससे कुछ सिवाय दूंगा उस जवान ने अशरफ़ियों के लेने से इन्कार किया और कहा कि आप की दौलत आप को फूले फले और मुबारक रहे ॥

सौदागर ने सूरत तो न पहँचानी परन्तु आवाज़ पहचानी बोला

कि इसको तो मने पहले भी कहीं देखा है कि इतने में उसका लड़का चिल्लासी उठा बाबाजान . यह तो हामिद है और झट झपट कर उसकी छाती से लिपट गया फ्रांसिस्को बड़ा अचरज में आया परन्तु उससमय वहां बड़ी भीड़ थी कुछ हाल न पूछा हाथ पकड़ कर सीधा अपने एक दोस्त के घर लेआया जब दोनों अकेले हुए दिल के दर्वाजे खुले, सौदागर ने पूछा फिर तू दूसरी बार गुलामी में क्योंकर आया और यह कैसी भूल थी कि मुझ को बिलकुल बेखबर रक्खा ॥

हामिद ने कहा मैं इस क़ैद और गुलामी को जिससे अपने उपकारी को बचा सका हजार दर्जे अपने वतन के रहने से बिहतर समझता हूं परन्तु जो आप ने अहवाल पूछा तो अब मुझ को भी उसका ठीक ठीक कहना उचित हुआ ॥

जब, मुझ अभागे को आप के मुल्कवालों ने पकड़ा था तो मेरे साथ मेरा बुड्ढा बाप भी था आपके साहिबजादे ने जो मेरा रोना और कराहना देखा था सो वह केवल उस बुड्ढे बाप के लिये था, जब आप मुझे जहाज पर छोड़ आये मैं वहां से उठ कर उस ईसाई के पास गया जिसने मेरे बाप को खरीदा था और समझाया कि यह तो बुड्ढा है तेरे किसी काम का नहीं तू इसे छोड़ दे और उसके बदले मुझे अपना गुलाम बना बरन सब रुपये भी जो आपने मुझे दिये थे मैंने उसकी नजर किये वह इस बात पर राजी होगया निदान मैंने अपने बाप को तो उस जहाज पर जिसका आप ने किराया चुका दिया था अपने देश की ओर रवाना किया और मैं उस ईसाई की तब से बराबर गुलामी करता हूं परन्तु मेरे बाप को इस बात की कुछ भी खबर नहीं ॥

हारी ने अब तक तो अपना आंसू किसी ढब थाम रक्खा था परन्तु जब कहानी यहां तक पहुंची न रहा गया रोने लगा तामी के आंख से भी आंसू बहा बारलो साहिब ने उनकी किताब बन्द करवा दी और हुक्म दिया कि जाओ अभी किसी दूसरे काम में अपना मन बहलाओ हारी और तामी वहां से उठ कर बाग

में अपना बनाया हुआ घर देखने को गये दीवारें तो बन कर तैयार हो गई थीं हारी ने बांह चढ़ाई छप्पर के डौल पर एक ठाठ बांधकर और घास फूस से छाकर उन दीवारों के ऊपर रखदिया और मजबूती के लिये जगह जगह रस्सियों से कस दिया निदान वह अच्छा खासा बैठने लायक एक झोंपड़ा बनगया, और हारी ने बाक़ी काम यों पूरा किया कि टट्टियों में जहां जहां छेद रह गये थे वह मिट्टी से बन्द कर दिये निदान हवा पानी का बचाव और उन दोनों लड़कों का वहां बड़ा दिललगाव हुआ इस अर्से में तामी ने जो गेहूं बोये थे उनके अंखुवे भी निकल आये दिन पर दिन बढ़ने लगे तामी रोज सबेरे के समय उन को जाकर देखता और अपने मन में बहुत खुश होता एक दिन हारी से कहने लगा कि यार जो हम लोग किसी उजाड़ टापू में भी जा पड़ें तो यक़ीन है कि कुछ बहुत दुख न झेलना पड़े देखो घर तो हमलोगों ने अपने हाथ से तैयार ही कर लिया है और रोटियां खाने को हुई जाती हैं केवल गेहूं पकने की देर है एक दिन तामी के मन में यह आया कि अपने घर के पास एक दो पेड़ भी लगावे और छाया और फल दोनों का सुख पावे जाकर बारलो साहिब से पौधे मांगे उन्हों ने परवानगी दी कि बाग़ के पिछवाड़े जख़ीरे में से जिस भांति के चाहो दो पौधे उखाड़ लो तामी ख़ुशी ख़ुशी हारी के साथ जख़ीरे में गया और अच्छे से अच्छे चुन कर दो पौधे बड़े बड़े थालों समेत खुरपी से इस हिकमत के साथ खोद लाया कि उनकी जड़ें न कटीं और उस झोंपड़े के सामने बड़े बड़े दो गढ़े खोद कर उन्हें उन में बैठादिया और फिर नर्म नर्म मिट्टी उन गढ़ों में भर कर तामी पौधों को सीधा थामें रहा हारी ने पांव से मिट्टी को दाब दिया उनके गिर्द क्यारी सी बना दी और एक एक लकड़ी गाड़ कर उन पौधों को उनके साथ बांध दिया जिसमें आंधी तूफ़ान के झोंकों से टूट न जावें पासही पानी का एक सुन्दर कुण्ड था उसी से बारलो साहिब का सारा बाग़ सिंचता था ये दोनों लड़के अपने पौधों के लिये उस कुण्ड से कई दिन की मिहनत में एक छोटी सी नहर काट

जाये जिसमें वह उसके पानी से सदा सुन्दर और हरे बने रहें सूखने कभी न पावें ॥

बारलो साहिब उन दोनों लड़कों को अपने काम में ऐसे तत्पलीन देखकर बहुत खुश हुए और कहने लगे कोई मुल्क ऐसे गर्म हैं कि जो वहां ज़मीन को इस रीति से न सींचें तो कुछ भी पैदा न होवे, मिसर और हिन्दुस्तान में धरती बड़ी उपजाऊ है और इसका कारण यह है कि नील और गंगा की बाढ़ से खेती को बड़ा लाभ होता है जहां नदियों का पानी नहीं पहुंचता कूआ खोद कर बैलों से लाव और रहट चलाते हैं ॥

हारी । मिसर वही देश है जहा बड़े बड़े मगर होते हैं ॥

बारलो साहिब । हां ॥

तामी । मगर भी क्या कोई खाने का फल है ?

सुनतेही हारी खिलखिलाकर हंस पड़ा ॥

बारलो साहिब । मगर एकप्रकार का जलजन्तु है सूरत उस की छिपकिली से मिलती है परन्तु बीस बीस हाथ लम्बे होते हैं ॥

तामी । वह क्या किसी का कुछ नुक़सान भी करते हैं ?

बारलोसाहिब । हां वे बहुधा नदियों से निकल कर बड़ी बड़ी शहतीरों की नाईं किनारों पर पड़े रहते हैं और जब कोई जानवर उन के पास आजाता है तो तुरन्त उछल कर उसको पकड़ लेते हैं और फिर खाही जाते हैं ॥

तामी । क्या आदमी पर भी चोट करते हैं ?

बारलोसाहिब । हां जो आदमी उस के काबू में पड़ जायगा तो वह ज़रूर उसको भी निगल जायगा परन्तु यह कलसिरा आदमी बड़ा हिकमती है जब कभी उस देश में कोई मगर की चपेट में आजाता है ऐसा जल्द फिरकी की तरह उस के गिर्द घूम कर भाग जाता है कि मगर को मुंह चलाने की फुर्सत नहीं मिलती क्योंकि जानवर को मुड़ने में बहुत देर लगती है और बड़ी कठिनाई पड़ती है ॥

तामी । बड़े डर की जगह है आदमी भाग तो बेशक जासकते हैं परन्तु ऐसे जानवर का सामना करना बिन्त से बाहर है ॥

बारलोसाहिब। हिम्मत और ताक़त से कुछ भी बाहर नहीं मिसरवाले बहुधा भालों से उन्हें मार लेते हैं जब मगर उनके निगलने के लिये मुँह खोलता है वह ऐसा एक भाला उस के तालू में मारते हैं कि बस वह उसी जगह बेदम हो जाता है बरन वहलोग मगर के शिकार के लिये पानी में भी उतर जाते हैं और हिकमत यह करते हैं कि एक फुट का लम्बा मज़बूत सा डंडा दोनों तरफ़ नुकीला तीर के फलों की तरह तेज़ और बीच में एक रस्सी से बँधा हुआ हाथ में रखते हैं जब मगर उनके खाने को मुँह फैला कर पास आता है तो वह उस डंडे को इस ढब से उसके मुँह में दे देते हैं कि ज्योंही वह मगर ज़ोर से अपना मुँह बन्द करता है डंडा तालू तोड़ कर तराज़ू हो जाता है और मुँह में उसके नीचे ऊपर दोनों ओर मेख़ सी निकल आती है मुँह के छिदने से फिर वह बिलकुल बेक़ाबू हो जाता है तब उसे रस्सी से खींच कर किनारे पर ले आते हैं॥

तामी। यह जानवर किसी ढब से आदमी के साथ हिल भी सकता है?

बारलोसाहिब। हां हिल भी सकता है मैं तो तुम से पहले ही कहचुका हूं कि ऐसा कोई जीव नहीं जिसके साथ तुम भलाई और प्यार करो और वह तुम से न हिले मिसर में तालाबों के भीतर मगर आदमियों से ऐसे हिल गये हैं कि बहुधा लड़के खेलते खेलते उनकी पीठ पर भी चढ़ बैठते हैं तो वे कुछ नहीं बोलते॥

तामी इन बातों के सुनने से बहुत खुश हुआ और कहने लगा कि मेरे मन में ऐसी उमंग आती है कि सारी दुनियां के जानवरों को देखूं बारलो साहिब ने कहा कि ऐसा हो नहीं सकता देस देस में नई नई भांति के जानवर हैं कहां तक कोई देखने के लिये फिरता फिरेगा और देशाटन करेगा॥

एक दिन संयोग से हारी और तामी अपने नियम अनुसार हवा खाने के लिये बड़े तड़के उठ कर चले गये कलियों का खिलना फूलों का महकना बुलबुलों का चहचहाना इनके मन

को ऐसा लुभाता था कि टहलते टहलते दूरतक निकल गये और आखिर को थककर एक पेड़ के नीचे बैठकर सुसताने लगे उस जगह एक औरत भी जिसका नाम मर्यम् था साफ़ सुथरे कपड़े पहने हुए किसी काम को आ निकली और इन दोनों को कुछ देरतक ध्यान देकर देखती रही फिर बोली कि लड़को तुम शायद रस्ता भूल गये हो हारी ने जवाब दिया कि नहीं मेम साहिब हम रस्ता नहीं भूले हैं केवल थोड़ा सिवाय चलने में आगया है इस कारण थक गये हैं औरत ने कहा कि लड़को यहां से बीस पचीस क़दम पर वह मेरा घर दिखाई देता है जो तुम वहां चलो तो आराम से बैठो मेरी लड़की ने गाय भी दुही होगी वह तुम को दूध रोटी खाने को देगी ॥

तामी को भूख ने सताया था हारी से कहा जो तुम्हारी सलाह हो तो चलो इस दयावान् के मिहमान हों, हारी ने कहा बहुत अच्छा दावत क़बूल है दोनों उठकर उस औरत के घर गये देखा कि उसका बावर्चीख़ाना बहुत साफ़ है बरतनों के ढेर और जिन्सों के गंज जैसे अमीरों के यहां होते हैं वैसे तो नहीं हैं परन्तु जरूरत के मुवाफ़िक़ हर एक चीज सादी थोड़े दाम की और बड़े काम की सफ़ाई के साथ अच्छे ढंग से चुनी हुई रखी है, आग भी आतिशदान में सिलग रही है हवा उससमय सर्द चल रही थी तामी आग के पास बैठगया पूछा कि तुम पत्थर के कोयले क्यों नहीं जलातीं इस मन्दी आग में तुम्हारा सारा खाना क्योंकर पकता होगा औरत ने जवाब दिया कि बाबा हम ग़रीब लोग पत्थर के कोयले कहां पावें वह यहां केवल उन्हीं के बावर्चीख़ानों में जलते हैं जो धनी हैं और जिनके यहां बहुतभांति के खाने पकते हैं हम ग़रीबलोग जंगल में जाकर जो कुछ बेल बूटे झाड़ झंखाड़ वहां पाते हैं जड़ समेत उखाड़ कर उसी जगह छोड़ आते हैं जब वह गर्मी के दिनों में धूप खाकर अच्छीतरह सूख जाते हैं तब काट काटकर उठा लाते हैं और छप्पर की छाया में इकट्ठा कर रखते हैं उसी से बरस दिनतक अपना काम चलाते हैं इस अर्से में उस औरत की लड़की एक चीनी के पियाले में दूध और रकाबी में रोटी

ले आई तामी को भूख बहुत थी वह ऐसी अच्छी लगी कि सब की सब खागया नाम के लिये हारी ने भी उसका साथ दिया जब खाने पीने से निश्चिन्त हुए और सुसता भी चुके उस औरत का दोनों ने शुकराना अदा किया और जाने के लिये तैयार हुए तामी एक अठन्नी जेब से निकाल कर उस औरत को देने लगा परन्तु उसने न ली कहा कि बेटा भगवान् तुम को जीता रक्खे मैं तुम से एक कौड़ी भी न लूंगी यद्यपि मैं ग़रीब हूं परन्तु काम धन्धे से खाने को बहुत मिल जाता है तुम को एक टुकड़ा रोटी और एक पियाला दूध देने से मेरा कुछ नुक़सान नहीं हुआ ॥

तामी ने फिर शुकराना अदा किया और चलने को क़दम उठाया वोंही दो चपरासी नाज़िर के अचानक जमदूत की तरह आन खड़े हुए और उस औरत से पूछा कि मर्यम् तेरा ही नाम है उसने जवाब दिया कि हां मेरा ही नाम है परन्तु तुम्हारा मुझ से क्या काम है उन्होंने अपने जेब से हाकिम का मुहरी दस्तख़ती हुकमनामा निकाला और दिखलाकर कहा कि रिचार्ड साहिब ने तेरे मालिक पर तीन सौ साढ़े बानबे रुपये की डिकरी हासिल की है यातो इसी दम बिलकुल रुपया ब्याज और ख़र्चे समेत चुकादे और नहीं तो तेरी सारी जायदाद हम कुर्क करके नीलाम करालेंगे ॥

वह औरत बहुत घबरायी और चपरासियों से कहने लगी कि मैंने उमर भर कभी रिचार्ड का नाम भी नहीं सुना और न मेरी जान में मेरे स्वामी को किसी का एक पैसा देना है ज़रूर तुमलोग भूलकर मेरे मकान पर आये हो अदालत में जाकर मुद्दआअलैह का नाम बख़ूबी दर्याफ़्त करो चपरासियों ने गर्दन हिलाई और कहा बीबी साहिब जो हमलोग इसी तरह मुद्दआअलैहों के नाम में ग़लती किया करें तो फिर जीने क्यों पावें ख़ैर जो आप रुपया नहीं देतीं तो हम नीलाम के लिये जायदाद कुर्क करेंगे और यह कह के लगे असबाब की फ़िहरिस्त बनाने इसी अर्से में उसका पति भी एक अच्छा ख़ासा

जवान आदमी चिहरे पर उसके भलमनसाहत के निशान वहां आगया और अपनी बीबी से पूछने लगा कहो हाजिरी तैयार है मर्यम् ने कहा कि यहां तुम्हारे वास्ते बड़ी हाजिरी हो रही है नाज़िर के चपरासी सारी जायदाद का तालीक़ा कर रहे हैं और कहते हैं कि रिचार्ड ने तुम पर डिकरी जारी कराई है मैं नहीं जानती कि तुम को एक कौड़ी भी किसी की देनी है. उसका मालिक रिचार्ड का नाम सुनते ही पीला पड़गया बोला कि बेशक मैं किसी का ऋणी नहीं हूं परन्तु तुम को याद होगा कि जब तुम्हारे भाई पीतर ने दिवाला निकाला और लोगों ने जिन का उस्से लेना पाना था उसकी सारी जायदाद कुर्क और नीलाम कराडाली यह रिचार्ड उसे पकड़ के जेलख़ाने में ले जाता था। मुझे याद नहीं कि उस का कितना रुपया पीतर के यहां बाक़ी था परन्तु मैं जिम्मेदार होगया और पीतर को छुड़ा दिया उस ने क़रार किया था कि जहाज़ पर जाकर नौकरी करता हूं जो कुछ तनख़ाह मिलेगी क़िस्तबन्दी कर के भेजता रहूंगा सो आज तीन बरस बीते उस का कहीं कुछ पता भी नहीं मिलता ॥

मर्यम्। हाय इस मेरे भाई ने तुम्हारा सारा घर बर्बाद किया अब यह बचे क्या खायेंगे और कैसे जीवेंगे नाज़िर के चपरासी सारी जायदाद का तालीक़ा कर रहे हैं ॥

और उसकी आंखों से बे परिमान आंसू बहने लगे ॥

घर की ख़राबी का हाल सुनकर उसके मालिक के मन में जोश आया चिहरा लाल होगया पुकारा कि चिन्ता नहीं मैं इन अभागों को अभी बतलाये देता हूं कि ईमानदार और नेकों के घरका तालीक़ा करना कैसा होता है यह कह कर एक पुरानी सी तलवार जो खूंटी पर लटकती थी उठा ली और नयाम से खींच कर चाहता था कि सिड़े बावलों की तरह उन चपरासियों पर वार करे, परन्तु मर्यम् उसके पाओं से लिपटगई और बिनती कर के कहने लगी कि साहिब भला यह क्या करते हो चेत सम्हालो और अपने आपे में आओ इस बिपत् में तलवार चलाने से क्या लाभ निकलेगा जो कहीं किसी चपरासी

पर वार बैठ जायगा बैठे ठाले नाहक़ ख़ूनी बन जाओगे उसके लड़के भी छोटे छोटे से अपनी मा का हाल देख कर उसके गले से लिपट गये और सिसकने लगे हारी से और उन लोगों से कुछ वास्ता और सम्बन्ध न था पर उस से भी यह दुख देखा न गया वह भी उसका हाथ पकड़े हुए सिसकी भर भर रोता रहा यहां तक कि उस के मर्द के लोहू को अपने आंसुओं से ठंढा किया वह मर्द भी सोच गया कि यह समय मरने मारने का नहीं है तलवार को नयामं किया और इतना कहा कि या भगवान् जो मर्ज़ी तेरी, सिर पर हाथ रख चुप चाप एक कोने में जा बैठा ॥

तामी खड़ा खड़ा यह सारा हाल चुप चाप देख रहा था कुछ भी न बोला केवल हाथ से हारी को चलने का इशारा किया रस्ते में भी तामी ने मुँह न खोला मनही मन में सोच बिचार करता रहा जब घर पर पहुंचा तुरन्त बारलोसाहिब के पास गया और कहा कि मुझ को अभी मेरे बाप के पास भिजवा दीजिये बारलोसाहिब यह बात सुन कर बहुत चौकन्ने हुए और पूछा कि ऐसा कौन सा कारण हुआ जो आप इतने ही यहां रहने से उकता गये ?

तामी । उकताने की क्या बात है मैं तो आप की यह मिहर्बानियां उमर भर न भूलूंगा केवल मुझे अपने बाप से एक बात बहुत ज़रूरी कहनी है सो कह कर फिर आप के पास आता हूं बारलोसाहिब ने उसी दम घोड़ा कसने का हुक्म दिया और एक मोतबर नौकर से कहा कि तामी को सवार करके उसके घर लेजाओ ॥

मरटन साहिब और उनकी बीबी अपने लड़के को देख कर बहुत फूलीं आंखें चूमीं छाती से लगाया और कुसल पूछी तामी के मन में तो उससमय और ही समायी थी ज्यों ही उनकी बातों के जवाब देने से खाली हुआ अपने बाप से हाथ बांध कर निवेदन किया कि बाबा जान जो आप ख़फ़ा न हों तो मैं एक चीज़ मांगूं ॥

मरटन साहिब । बेटा ख़फ़गी की कौनसी बात है ईश्वर ने सब कुछ दिया है जो तेरा मन चाहे मांग ॥

तामी । मुझको कुछ रुपये दर्कार हैं ॥

मरटन साहिब । कितने ?

तामी । मुझको रुपये बहुत दर्कार हैं मैं आप से मांगने में डरता हूं परन्तु जो आप मुझ को प्यार करते हैं तो ज़रूर देंगे क्योंकि आप को रुपयों की कुछ कमी नहीं है ॥

मरटन साहिब । दस ? पन्द्रह ? बीस ? सुनैं तो सही कितने दर्कार हैं ॥

तामी । रुपये मुझको कम से कम चार सौ चाहियें ॥

बीबी मरटन । बारलो साहिब ने तो अच्छी तालीम दी यह तो दोही दिन में अपने बाप की सारी दौलत लुटा देगा ॥

तामी । अम्माजान बारलो साहिब को तो इस बातकी खबर भी नहीं है आप उनको नाहक़ क्यों बदनाम करती हैं ॥

मरटन साहिब । परन्तु यह तो बता कि तू इतने रुपये लेकर करेगा क्या ॥

तामी । यह बात मैं अभी नहीं बता सकता परन्तु इतना कह सक्ता हू कि जब आप उसको सुनेंगे ज़रूर पसन्द करेंगे ॥

मरटन साहिब । मुझे इस में शक है ॥

तामी । जो आप को शक है तो आप यह रुपये मुझ को उधार समझ के दीजिये मैं आप को धीरे धीरे चुका दूंगा ॥

मरटन साहिब । तू इतना रुपया कहां से चुका देगा ॥

तामी । क्यों चुका देने को क्या हुआ आख़िर आप हर महीने में मुझ को खेलने के लिये कुछ देते हैं सिवाय इस के नये कपड़े भी सदा भेजते रहते हैं चाहे उन्हीं में इन रुपयों को काट लीजियेगा जबतक कि आप के सब रुपये चुक न जावें मैं आप से पहरने को कोई कपड़ा न मांगूगा और न खेल तमाशे के लिये रुपया लूंगा ॥

मरटन साहिब । परन्तु यह तो बता कि तू इतने रुपये लेकर करेगा क्या ॥

तामी । यह बात अभी न पूछिये थोड़े दिन में आप को

अपने आप मालूम होजावेगी जो आप को साबित हो कि मैंने आपका रुपया बेजा खर्च किया है तो फिर कभी उमर भर मेरी बात का विश्वास न कीजियेगा॥

मरटन साहिब के पास दौलत तो ईश्वर की दया से बहुतेरी थी जब देखा कि लड़का रुपये के लिये ऐसा गिड़गिड़ा रहा है, विचारा कि खैर इसी बात में लड़के की आजमाइश कर लेनी चाहिये देखें यह ज़रासा बच्चा इतना रुपया ले कर क्या करता है तुरन्त कोठड़ी के भीतर गये और झोली भर कर रुपये ले आये, तामी के हवाले किये और कहने लगे कि रुपये तो मैं तुझे देता हूं परन्तु याद रखना कि मुझे इस बात की खबर जल्द मिले कि तूने यह रुपये किस काम में खर्च किये जो मैं जानूंगा कि तूने भूल के किसी ऊलजलूल काम में धूल किये तो फिर कभी उमर भर तेरी बात न मानूंगा। तामी ने झुक-कर सलाम किया और धन्यवाद दिया मारे खुशी के बात भी मुँह से निकलनी कठिन होगई रुपयों को खीसे में रक्खा और फिर बापसे बिदा होकर घोड़े पर सवार बारलो साहिब के मकान को रवाना हुआ॥

जब वहां पहुंचा कुछ सुस्ताया भी नहीं तुरन्त हारी को साथ लेकर उसी औरत के घर की ओर चल दिया जहां दूध रोटी खाई थी जल्द जल्द क़दम उठाता हांपता हांपता जब उस मकान में पहुंचा देखा कि नाज़िर के चपरासी अभी असबाब का तालीक़ा ही कर रहे हैं और वह औरत कोने में मुँह दिये सिसक रही है तामी उसके पास गया और धीरे से हाथ थाम कर कहने लगा कि बीबी तुमने मुझपर बड़ी मिहरबानी की सबेरे जब मैं थका मांदा और भूखा था तुमने मुझको रोटी और दूध दिया मैं भी चाहता हूं कि उसके बदले तुम्हारी कुछ टहल करूं और तुम्हारे किसी काम में आऊं॥

औरत। बेटा तुमको भगवान् जीता रक्खे तुम्हारी मिहर्बानी में कुछ शक नहीं पर हमारा काम इस वक़्त तुम्हारे बूते का नहीं है॥

तामी। यह तुम ने क्यों कर जाना कि मेरे बूते का नहीं क्या मैं तुम्हारा कुछ भी काम नहीं करसकता॥

औरत । बेटा तू तो सारे काम करे पर जो तेरे क़ाबू में हों नाज़िर के चपरासी एक दम् में हमारा सारा घरबार असबाब नीलाम कर डालेंगे और हमको हमारे बच्चों समेत हाथ पकड़ कर बाहर निकाल देंगे ऐसा कौन इस आफ़त में हमारा प्यारा है कि चार सौ रुपये दे और चपरासियों का मुँह काला करे हम तो मरही चुके पर तरस इन निरपराधी बेगुनाह बच्चों का आता है और जो मर्ज़ी भगवान् की ॥

उस औरत की बिपत् देखकर तामी के मन को इतनी धीरज न रही कि और कुछ बातें करे खीसे से रुपयों की पोटली निकाल कर उस औरत के हाथ में दी और कहा कि लो अपना देना चुका दो और अच्छीतरह से अपने बालबच्चों के साथ घर में बैठी रहो इतने रुपये अचानक हाथ लगने से वह औरत पहले तो देरतक तामी का मुँह देखती रही और फिर मूरछा सी खाकर गिरपड़ी उसका पति दूर से उसे गिरते हुए देखकर उठाने को दौड़ा परन्तु उतने ही में औरत को कुछ सुध आगयी तो उठकर तामी के पावों से लिपट गई उसकी जूतियां चूमती थी कभी बलिहारी जाती थी कभी असीस देती थी कभी उसका मुँह देखती उसके पति को रुपयों का हाल मालूम न था क्योंकि जब तामी ने औरत को रुपये की पोटली दी वह दूसरे कमरे में था अपनी औरत का यह हाल देखकर बहुत घबराया और बड़ा हैरान हुआ कि यह क्या बात है समझा कि सोच के मारे पागल हो गई है बच्चे भी अपने मा बाप का यह हाल देखकर इधर उधर से उस औरत का दामन पकड़कर प्यार से उसकी छातीपर हाथ रखने लगे लड़कों को देखकर वह बोली कि अभागो मुझे क्या प्यार करते हो इस दयावान् के हक में दुआ करो और अपने सच्चे मन से उसे धन्यवाद दो जो वह तुमको इससमय न बचा लेता तो तुम्हारा कहीं पता भी न लगता दोही दिन में मारे भूखों के रोते रोते मरजाते ॥

पति । मर्यम तुझे क्या होगया है अपने होश हवास

ठिकाने ला और अपने आपे में आ आफ़त सबपर पड़ती है पागल मत बनी जा बिना बात की बात मुँह पर न ला यह साहिबज़ादा हमारे बच्चों का क्या पालन कर सकता है और कैसे उनकी जान बचा सकता है ॥

औरत । ऐ विलियम न मैं पागल हुई और न मैं सिड़ी बनी कहने को जो तुम चाहो कहलो परन्तु इन रुपयों पर निगाह करो जो भगवान् ने दया कर के इसी साहिबज़ादे के हाथ हम लोगों की जान बचाने के लिये इस जगह भेज दिये हैं मैं नहीं जानती कि क्योंकर इसका शुक्राना अदा करूं एक ज़बान से तो क्या मुमकिन है हज़ार भी हों तो शायद न बनपड़े जो मैं इसके पांव न चूमूं तो किसके चूमूं ॥

रुपये की पोटली देखतेही मर्द का भी वही हाल हुआ जो उस औरत का था परन्तु तामी उसका हाथ पकड़ के बहुत नर्मी से बोला कि भाईजान इसमें अचरज और घबराहट की क्या बात है आदमी का .काम आदमी ही से निकलता है मैंने अपनी खुशी और राज़ी से तुम को ये रुपये दिये, तुम बेशक अपना क़रज़ चुकाओ और अपने बाल बच्चों समेत घर में बैठे रहो इस घड़ी तक तो वह मर्द अपना मन पक्का किये हुए था परन्तु तामी का यह मीठा बोल सुन कर उससे न रहागया रोने लगा, तामी ने उनका जब यह हाल देखा चुपके से उनकी आंख बचाकर हारी के साथ अपने घर को चल दिया और बारलो साहिब के सामने आया, उन्हों ने बड़े प्यार से उसके बाप की कुशल छेम पूछी और फिर कहा कि वह तुर्कवाली कहानी भी याद है जो पढ़ते पढ़ते अधूरी छोड़ गये थे या बिलकुल दिल से उतर गई ॥

तामी । मुझ को वह कहानी अच्छी तरह याद है मैं अभी आप से कहने ही को था, जो आप मिहरबानी कर के किताब दें तो जितनी बाक़ी रहगयी थी वह भी पढ़ डालें ॥

बाक़ी कहानी वफ़ादार तुर्क की ॥

जब हामिद ने यह सारा हाल कह सुनाया वह सौदागर उसकी असालत और हौसिले और हिम्मत से अचरज में आया फिर बहुत सी शुक्रगुज़ारी और बिनती कर के कहने लगा कि भला जो हुआ सो तो होगया, अब आप मेरी दौलत आधी बांट लीजिये और इसी शहर में मेरे घर के पास कोई अच्छा मकान लेकर चैन आराम से तमाम उमर काटिये, हामिद ने हाथ जोड़े और बिनती की कि दौलत आप की आप को मुबारक रहे मुझ को उसमें से एक कौड़ी भी लेना हराम है आप फिर ऐसा कलाम अपने मुँह से न निकालिये मिहरबानी करके इस बात से मुआफ़ रखिये आपने मुझ को उस चण्डाल की ग़ुलामी से छुड़ाया जो मेरी जान भी आप के लिये जाती तो मैं अपने बड़े भाग समझता, आप के लड़के को कोठे पर से उतार लाया कौनसा बड़ा काम किया बरन मुझ को ऐन ख़ुशी हुई कि भला यह एक मौक़ा अपने हितू के हक़ से कुछ थोड़ा बहुत अदा होने का हाथ आगया भला इस हामिद को बे वफ़ा और नाशुक्रा तो न समझियेगा। यद्यपि हामिद ने उस सौदागर के लड़के को जलती हुई आग से निकाल लाना कुछ बड़ा काम न समझा परन्तु वह सौदागर कब उसके इतने बड़े इहसान को भूल सकता था जब देखा कि दौलत तो मेरी कभी नहीं लेगा और न इस शहर में रहना क़बूल करेगा, इरादा किया कि जितनी इसके साथ बन पड़े उतनी ही नेकी करनी चाहिये निदान उस ईसाई को जिसका अब वह तुर्क ग़ुलाम था अपने पास से रुपये देकर उसे ग़ुलामी से छुड़ाया और एक जहाज़ किराये करके उसको उसके देश की ओर बिदा किया जुदाई का दोनों को दुख हुआ देरतक सौदागर और सौदागर बच्चा हामिद के जहाज़ को किनारे से देखते रहे जब नज़रों से लोप हुआ अपने घर को चले, इस बात को बहुत दिन बीत गये न कभी हामिद की ख़बर सौदागर ने पाई न सौदागर की हामिद ने,

सौदागर बच्चा अर्थात् छोटा फ्रान्सिस्को इस अर्से में जवान हो गया था मिलनसारी मानो उसकी प्रकृति थी, लिखना पढ़ना भी जैसा चाहिये सीखलिया था चलन उसका बहुत नेक था, निदान वह उस शहर में सब का प्यारा छौना और अनूठा खिलौना था। एकदिन संयोग से कुछ काम ऐसा ही जरूरी आगया कि उस सौदागर को लड़के समेत किसी टापू में जाने के लिये जहाज पर सफ़र करना पड़ा हवा मुवाफ़िक़ थी पाल उड़ाये चले जाते थे दर्या के तमाशे से अपना मन बहलाते थे पर आधा रास्ता भी न कटा होगा कि अचानक एक ओर से तुर्कों का जंगी जहाज आन पहुँचा जैसे बाज बटेर पर टूटे वैसेही उनके जहाज पर पालों के पर फैलाये चला आता था इन लोगों ने बहुतेरा चाहा कि अपने जहाज को भगा लेजावें परन्तु भाग कर कहां जावें वह तुर्कों का जहाज तो एक दम में उन के सिर पर आगया सौदागर के जहाज पर जितने आदमी सवार थे मारे डर के सब घबरा गये चिहरे जर्द होगये केवल एक सौदागर बच्चा अर्थात् छोटा फ्रान्सिस्को सिंह बनारहा और तलवार को म्यान से खींचा और पुकारा कि ऐ साहिबो जो यही दिल है तो फिर हाथो में चूड़ियां पहनो कोई तलवार न बांधो मर्दानगी का नाम कभी मत लो और जो कुछ दम बहादुरी का रखते हो तो हिम्मत हाथ से न छोड़ो मेरा साथ दो सौदागर बच्चे की हांक सुनकर फिर तो सब ने आस्तीनें चढ़ायीं और कमरें कसीं मरने मारने पर मुस्तइद हो गये इतने में तुर्कों का जहाज पास आगया गोलों का मेह बरसने लगा धुएं की घटा छा गयी, तोपों की रजक जो उड़ती थी मानो बिजली दिखायी दी तीन बार तुर्कलोग इनके जहाज पर हल्ला करके कूदे पर तीनों बार इन लोगों ने उन्हें मार हटाया सौदागर बच्चा मुहरे पर था, बीरों का जी बढ़ाता था और ललकार ललकार कर अपने आदमियों को मोरचों पर डटाता था आख़िर को जब तुर्कों ने देखा कि हमारी तरफ़ के आदमी आधे से जियादा कट गये और यह वीनिस वाले किसी तरह क़ाबू में नहीं आते लड़ने से हाथ खींचा और पतवार का मुँह फेरा जब इन लोगों ने देखा कि

तुर्कों ने दूसरी राह ली और हमारा पीछा छोड़ा तब तो अपने मन में बहुत खुश हुए आपस में बधाइयां देने लगे, सब के मुँह से यही निकलता था "बला आई थी लेकिन् खैर गुज़री" परन्तु अभी तलवारों को लोहू पोंछकर म्यान भी नहीं किया था कि दो जहाजों के मस्तूल दूर से फिर दिखायी दिये हर एक की निगाह उसी तरफ़ थी और सब उसी की चरचा करते थे देखते ही देखते पास आगये निशान से मालूम हुआ कि वह भी दोनों जहाज तुर्कों के हैं तब तो सामना करना बे फ़ाइदा समझा तुरन्त अपने जहाज का निशान झुका दिया, यह इस बात का इशारा है कि हम तुम्हारे सरण अथवा आधीन हैं सामना करना नहीं चाहते वह सब तुर्क उसी दम् भूखे, दुष्ट जंगली जानवरों की तरह जो शिकार पर गिरते हैं चारों ओर से उन के जहाज पर कूदने लगे और जितने आदमी उस के, भीतर पाये पकड़ के सब के पांव में बेड़ियां डाल दीं और जहाज समेत क़ैद करके अपने शहर को जिसका नाम तूनिस है लेगये और वहां उन बेचारों को बाजार में खड़ा कर दिया शहर वाले हर तरफ़ से दौड़े और जैसे जैसे हृष्ट पुष्ट और सुन्दर डील डौल के देखे दाम दे दे कर गुलामी के लिये खरीदने लगे उन में एक तुर्क जिस के चिहरे पर बड़प्पन और भलमनसाहत के लक्षण थे और आदमियत और शील संकोच के सारे चिह्न चमक रहे थे, दया की दृष्टि से इन आफ़त के मारों को देखने लगा जब सौदागर बच्चे अर्थात् छोटे फ़ान्सिस्को पर उसकी नजर पड़ी तो देर तक सिर से पैर तक उसे देखता रहा पहचाना नहीं जहाज वाले से पूछा कि इस जवान का क्या दाम लेगा जहाज वाले ने कहा क़सम खुदा की ५०० अशरफ़ी से कभी कौड़ी कम न लूंगा ॥

तुर्क । ऐसा इस में कौन सा गुण है इस से दूनी दूनी ताक़त वाले तू ने अभी पचास पचास और साठ साठ अशरफ़ी पर बेचे हैं ॥

जहाजवाला । ठीक है गुण तो इस अभागे में कुछ नहीं है पर मैंने क़सम खायी है कि या तो सारा अपना नुक़सान जो

इसके सबब से हुआ है इसी के दाम से भर लूंगा और नहीं तो उमर भर इसे ऐसी मिहनत में रक्खूंगा कि फिर यह भी याद करे ॥

तुर्क । ऐसा इसने तुम्हारा क्या नुक़्सान किया आख़िर औरों से भी तो तुम्हारा नुक़्सान हुआ है ॥

जहाज़ वाला । जनाब यह अभागा जहाज़ में न होता तो कोई हमसे न लड़ता इसने लोगों को उभारा और लड़ने को तैयार किया इन ईसाइयों का यह बूता था कि हमारे जहाज़ वाले तीन बार इन पर हमला करें और फिर ख़ाली फिरें बरन आधे से ज़ियादा काम आये जब हमारे जवान हमला करते थे यह तलवार लेकर आगे आता था सौदागर बच्चा अबतक आंखें नीची किये हुए अपने पावों की ओर देख रहा था परन्तु इन दोनों की बात चीत सुन कर गर्दन जो उठायी तो उस तुर्क का चिहरा देखते ही बेधड़क चिल्ला उठा कि ऐ हामिद तू यहां कहां आवाज़ सुनतेही हामिद ने भी सौदागर बच्चे को पहचाना झपट कर अपनी छाती से लगा लिया जैसे कोई अपने खोये हुए लड़के को पाकर ख़ुश होता है उसी तरह वह तुर्क भी सौदागर बच्चे की मुलाक़ात से ख़ुश हुआ उसी दम उसकी बेड़ियां कटवा दीं हर तरह पर अपनी मुहब्बत और इहसानमन्दी ज़ाहिर करने लगा परन्तु जब सुना कि इन ईसाइयों में जो बिकने के लिये वहां खड़े थे सौदागर बच्चे का बाप अर्थात् फ़्रान्सिस्को भी मौजूद है आसमान की ओर देखा और बोला कि या ख़ुदा अपने उपकारी हितकारी के साथ मुझे भी आज नेकी करने का तूने अच्छा मौक़ा दिया और तुरन्त दौड़ कर वहां गया जहां फ़्रान्सिस्को मर्दों की तरह बड़ा कड़ा दिल किये खड़ा था और इस बात के सोच में था कि देखूं मुझे कौन ख़रीदता है, अपने हाथ से हामिद ने बेड़ियां काटीं, गले लगे, प्रेम प्रीति की ख़ुशी से दोनों की आंखें डबडबा आईं उपकार और शिष्टाचार की बातें होने लगीं, तुर्क दोनों बाप बेटों को हाथ पकड़ कर अपने घर लाया उस मकान आलीशान में कि जिसमें अपने अपने क़रीने से क़ीमती असबाब रक्खे

थे, दोनों को कुर्सियों पर बैठाया हजामतें बनवायीं प्रेम से हेम कुण्ड में न्हवाया, कपड़ा बदलवाया खाने को खिलाया सुचित्त होकर एकान्त में अपना अपना हाल कहने लगे और दिल खोल कर एक दूसरे को सुनाने, पहले वह तुर्क बोला कि भाई जान जब से तुमने मुझे छुड़ाकर जहाज़ पर सवार कराकर अपने देश को बिदा किया मैं यहां. पहुँच कर बादशाही फ़ौज में भर्ती होगया भगवान् की दया से लड़ाइयों में कुछ ऐसे काम बन पड़े कि मेरा दर्जा बराबर बढ़ता गया यहां तक कि थोड़े ही दिनों में तूनिस का पाशा अर्थात् इस सूबे का नाज़िम मुक़र्रर होगया जब से मैं इस पदवी को पहुंचा हूं यह नेम कर रक्खा है कि जब कोई जहाज़ बन्दर में आता है और सुनता हूं कि तुर्कों ने ईसाइयों को पकड़ा है तो मैं उस मुक़ाम पर जाकर जहांतक बन पड़ता है रुपये देकर बेचारे ईसाइयों को गुलामी के बन्धन से छुड़वा देता हूं धन्य है वह सर्वशक्तिमान् कृपानिधान भगवान् जिसने मुझे इस लायक़ बनाया कि आज मैं अपने मालिक और हितकारी के छुड़ाने का कारण हुआ अब इससे जियादा जिन्दगी में और कौन सी खुशी की बात है। फ्रान्सिस्को ने भी जिस तरह पर उसके सब साथी तुर्कों की कैद में आगये थे अव्वल से आखिर तक कह सुनाया। बाप बेटे मुहर्रम के दस दिन तक हामिद के मिहमान रहे और हामिद ने भी मिहमानदारी में कोई बात उठा न रक्खी हर तरह से उनका मन बहलाता था और जो कुछ ख़ुशी आराम के सामान हैं सब उनके लिये मौजूद करता था आखिर देखा कि उनको अपने देश की खैंच है और अपने यार दोस्त और घर बार देखना चाहते हैं तुरन्त एक जहाज़ बहुत सुन्दर उनकी सवारी के लिये दिया और सिपाही भी छटे हुए जवान अपनी खास अर्दली के पहरे चौकी के लिये उनके साथ कर दिये जब सौदागर अपने लड़के के साथ जहाज़ पर गया तो क्या देखता है कि उनके सब साथी जो तुर्कों की क़ैद में पड़ गये थे पहले ही से उस जहाज़ पर सवार हो चुके हैं और वह जहाज़ भी जिस पर

वे वीनिस से आये थे उनके माल असबाब समेत चलने को तैयार है हामिद ने रुपये देकर उन सब को छुड़वा दिया था और जहाज़ उन का तुर्कों से दिलवादिया था निदान वे लोग बड़े खुश हुए और दिल से इस बात के क़ाइल कि नेकी का फल नेकी है जो किसी को आफ़त से बचाता है भगवान् उस को भी आफ़त से बचा लेता है जो किसी दूसरे के साथ नेकी करता है वह भी नेकी का फल नेकी ही पाता है जगत् की ढलती फिरती छांह है सदा दिन किसी के एक से नहीं रहते कभी गाड़ी नाव पर और कभी नाव गाड़ी पर न जाने कब किसी को किस से काम पड़े आदमी को सदा सब के साथ नेकी करनी चाहिये। हवा जैसी चाहिये वैसी थी थोड़े ही दिनों में वे सबलोग कुशल क्षेम से अपने घरों में आपहुँचे और जबतक जिये सब का भला करने में तन मन से उद्यत रहे॥

इसी अवसर में कि कहानी तमाम हुई तामी के बाप का नौकर घोड़ा लेकर तामी के लेने को आया तामी सवार होकर अपने घर गया मा बाप ने उस की आंखें चूमीं और छाती से लगाया देर तक भांति २ की बातें पूछते रहे विशेष कर के बारलो साहिब के यहां रहने और खाने पीने के कुछ दुख न पाने के विषय में— तामी सब बातों का ठीक २ जवाब देता रहा परन्तु उन चार सौ रुपयों का जो उस औरत को क़रज चुकाने के लिये दिये थे कुछ भी चर्चा न की दूसरे दिन अतवार था तामी के मा बाप उसे साथ लेकर गिरजा को गये अभी उन्होंने दर्वाजे के अन्दर पैर भी न रक्खा था कि एक साथ सारे लोग काना फूसी करने लगे यही वह लड़का है, यही वह लड़का है और औरत मर्द सब के सब तामी को टकटकी बांधकर देखने लगे मर्टनसाहिब और उन की मेम को इस बात से बड़ा अचम्भा हुआ बरन चित्त में एक सोच पैदा हुआ परन्तु वह समय भगवत् भजन का था कुछ हाल पूछ न सके, जब भजन बन्दन से छुट्टी पाई और गिरजा से बाहर आये, तामी से पूछा कि बाबा इस का क्या कारण था कि आज सारे आदमी तेरा मुँह देखते थे और आपस में काना फूसी करते

थे तामी जवाब भी न देने पाया था कि वही औरत जिस को उस ने रुपये दिये थे झपट कर तामी के पैरों से लिपटगयी सौ सौ तरह से बलायें लेती थी और हज़ार हज़ार तरह से असीस देती कभी उसे देवता कह कर पुकारती कभी उसे अपना मालिक और मुरब्बी और जान बचाने वाला कहती कभी उसके पैर चूमती और कभी आसमान की ओर मुँह करके भगवान् से प्रार्थना करती कि हे परमेश्वर सर्वशक्तिमान् ! जिस भांति इस बच्चे ने मुझे आफ़त से बचाया तू भी उसे दुनिया की सब आफ़तों से बचाइयो, पहले तो मर्टनसाहिब और उनकी मेम बहुत घबराईं कि यह कैसी बात है, पर जब मालूम हुआ कि वह चारसौ रुपये तामी ने उस औरत के घरबार और बाल बच्चों को तबाही, और बरबादी से बचाने के लिये देडाले तब तो अपने लड़के की नेक नियती और उदारता से बड़े प्रसन्न हुए और बदन में फूले न समाये झटपट तामी को उस के बाप ने उठा कर अपनी छाती से लगालिया परन्तु जब फिर उस भीड़ भाड़ का ख़याल आया जो उन के चारों ओर थी तुरन्त उस औरत से रुख़सत होकर गाड़ी में सवार हुए और ख़ुशी २ अपने घर आये, धन्यभाग उन मा बाप के जिनके लड़के इस तरह का काम करें और तामी का सा मन रक्खें ॥

बृहस्पति के दिन फिर तामी बारलो साहिब के यहां आया गर्मी की ऋतु बीत चुकी थी जाड़े की आनेवाली थी पानी पर चारों ओर पाला जमा हुआ दिखाई देने लगा और बर्फ़ आस्मान से सफ़ेद २ रुई के फाहों की तरह गिरने लगा धरती सारी सफ़ेद हो गयी मानो किसी ने करोड़ों मन पिसा हुआ नमक अथवा क़न्द का चूरा आस्मान से छिड़क दिया पेड़ और मकान भी बर्फ़ से ढक गये थे जानवरों का हाल जंगल में बुरा था बसेरे को उन्हें जगह न मिलती थी वह सब चिड़ियां जो नित सबेरे और शाम पेड़ों पर चह चहे मारती थीं और सुनने वालों का मन प्रसन्न करती थीं, जाड़े की अधिकाई से दाने बिना भूख के मारे चारे की लालच बस्तियों के पास फड़फड़ाने लगीं ॥

सयोग से एक दिन तामी जो बाहर से अपने कमरे में आया तो क्या देखता है कि एक चिड़िया बहुत सुन्दर कमरे के भीतर

घुसी हुई है तामी ने बारलो साहिब को बुलाया और दिखलाया बारलो साहिब ने कहा कि इस चिड़िया का नाम लाल छाती वाली राबिन है यह आदमियों के साथ तुरन्त हिलजाती है पर इस समय भूखी है जंगल में चारों ओर बर्फ पड़जाने से अब इसको कुछ चारा नहीं मिलता ॥

तामी । जो आप आज्ञा दें तो मैं इसके लिये एक टुकड़ा रोटी का ले आऊं ?

बारलो साहिब } जाओ ले आओ और इसको खिलाओ पर खिड़कियां चारों तरफ़ से खोल दो जिसमें उसे इस बात का डर न हो कि तुम पकड़ना चाहते हो, निदान तामी ने ऐसा ही किया और उस चिड़िया को पेट भर कर खिलाया फिर वह उड़कर बाहर एक पेड़ पर जा बैठी और चहचहे मारने लगी मानो तामी को धन्यवाद देने लगी तामी इस बात से अपने मन में बहुत प्रसन्न हुआ नित्त सबेरे उठते ही अपने कमरे की खिड़कियां खोलता और रोटी के टुकड़े फैला देता वह चिड़िया भी सदा आया करती और बेखटके वहां चुगती रहती धीरे २ तामी के साथ ऐसी हिलमिल गई कि उसके हाथ से रोटी खाया करती और उसके कन्धे पर बैठ कर अपने मीठे २ चहचहे सुनाती, तामी बहुत ही प्रसन्न होता और अकसर बारलो साहिब और हारी को यह तमाशा देखने के लिये बुला लाता ॥

एक दिन की बात है कि तामी जो अपने नियम अनुसार रोटी लेकर चिड़िया को खिलाने गया और कमरे का दर्वाजा खोला तो क्या देखता है कि उसको बिल्ली ने मारडाला बिल्ली, तामी को देखतेही भाग गई चिड़िया की यह दशा देखकर इस की छाती भर आई, रोने लगा, बारलो साहिब से जाकर सारा हाल कहा साहिब ने भी बहुत अफ़सोस किया और कहा कि खैर होना था सो होगया अब सिवाय संतोष के और क्या इलाज है ॥

तामी । इस अभागी बिल्ली को ज़रूर सज़ा देनी चाहिये ॥

बारलो साहिब } कौनसी सज़ा तजवीज़ करते हो ॥

तामी । जिस भांति इस दुष्टा ने उस बेचारी चिड़िया के प्राण लिये उसी भांति इसकी भी जान लेनी चाहिये क्योंकि न्याय इसी का नाम है ॥

बारलो साहिब } परन्तु यह तो बताओ कि उसने चिड़िया को बैर से मारा अथवा केवल अपनी भूख मिटाने को जैसी उसे शिकार की टेव है इस जानवर को भी मारखाया, तामी कुछ देर तो सोचता रहा परन्तु फिर यों बोला कि बैर विरोध तो बिल्ली का इस चिड़िया के साथ कुछ भी नहीं मालूम होता ॥

बारलो साहिब } क्या तुमने बिल्ली को चूहा पकड़ते हुए कभी नहीं देखा और क्या तुम यह नहीं जानते कि उसकी यह बान है और वह इसी भांति जानवरों को मारकर अपना पेट भरती है ॥

तामी । हां साहिब चूहा पकड़ते हुए तो मैंने कई बेर देखा है ॥

बारलो साहिब } कभी उसके छुड़ाने का भी उपाय किया है ॥

तामी । नहीं मैंने तो कभी उसके छुड़ाने का उपाय नहीं किया परन्तु हां हारी ने अल्बत्ता एक चूहे को बिल्ली के मुँह से छुड़ाया था बरन उसके लिये उसने बड़ी दौड़ धूप की थी ॥

बारलो साहिब } फिर सुनो तो सही अब हम उस बिल्ली को जो अपनी प्रकृति के अनुसार पेट भरने के लिये चिड़ियों को मारती है दोष देवें अथवा तुमको कि सबभांति उसकी प्रकृति से जानकार होकर तुमने अपनी चिड़िया के बचाव का कुछ उपाय न किया बरन उसको ऐसा परचाया कि बेचारी बेखटके तुम्हारे

कमरे में आने लगी और इसी कारण बिल्ली के पंजे में फसी, अपनी चिड़िया के मरने का इतना सोच करते हो परन्तु बेचारे चूहों पर कभी तर्स नहीं खाते उनके छुड़ाने का कभी उपाय नहीं करते और न बिल्ली की यह टेव छुड़ाने का कुछ इलाज करते हो ॥

तामी । क्या बिल्ली की भी यह बान छूट सकती है ?

बारलो साहिब } क्यों छूट क्यों नहीं सकती और याद रक्खो कि मार डालने से किसी को ठीक बना देना सौ दर्जे अच्छा है ॥

तामी । मैं आप का बड़ा गुण मानूंगा जो आप मुझ को बिल्ली ठीक बनाने की हिक्मत बता देवें ॥

दोही चार दिन के पीछे वैसी ही एक और चिड़िया तामी के कमरे में आई पहिले तो तामी इस डर से कि ऐसा न हो बिल्ली इसका भी वही हाल करे खिलाने पर्चाने से रुका, पर जब बारलो साहिब ने वादा किया कि हम बिल्ली की आदत छुड़ा देवेंगे तब तामी खुशी २ इसको भी उसी ढब से रोटी के टुकड़े खिलाने लगा और थोड़े दिनों में उससे भी जियादा परचा लिया जब उसका आदमियों से डर जाता रहा और तामी के पास आने लगी तब बारलो साहिब ने एक दिन उस को पिंजरे में बन्द किया और एक लोहे की झंझरी आग में लाल करके उस पिंजरे के आगे खड़ी कर दी फिर किसी बहाने से उस बिल्ली को कमरे के भीतर बुलाया जब बिल्ली आयी तो बारलो साहिब तामी और हारी को लेकर वहां से उठगये वे दोनों लड़के बाहर से झिल्मिलियों की राह देखते रहे बिल्ली ने जो कमरा सूना पाया और शिकार ठीक मुँह के सामने, पहले तो घूर २ कर चिड़िया को देखने लगी फिर उसी तरह पिंजरे पर आंख लगाये हुए ज़मीन से लगी हुई धीरे २ उसकी ओर चली जब कुछ पास पहुँची इस ज़ोर से उस पिंजरे पर झपट्टा मारा कि जो वह झंझरी बीच में न खड़ी होती तो पिंजरा चूर २ हो जाता और शिकार इसके हाथ लगता परन्तु उस तपी हुई झंझरी ने उसका

मुँह रास्ते ही में फेरा टक्कर के लगते ही सारा बदन भुलस गया रोती चिल्लाती पीछे फिरी और दुम दबाकर जिधर से आई थी उसी राह बाहर चली गई उस दिन से फिर कभी उस बिल्ली ने जबतक जी चिड़िया के शिकार पर मन नहीं चलाया सर्दी दिन २ बढ़ती जाती थी बर्फ़ तह पर तह जमती चली आती थी एकदिन तामी बारलो साहिब से यह चर्चा करने लगा कि देखिये जाड़े की भी ऋतु कैसी खराब है भांति २ के दुख उठाने पड़ते हैं क्याही अच्छी बात होती जो सदा गर्मी बनी रहती ॥

बारलो साहिब } शायद यह बात तुम नहीं जानते कि जहां गर्मी की अधिकाई है और वही ऋतु सदा बनी रहती है वहां के लोग सदा सर्दी की चाह रखते हैं और यही मनाते हैं कि बारहों महीने जाड़ा बना रहे ॥

तामी । तो फिर ऐसे देश में रहना चाहिये जो न बहुत गर्म है न सर्द ॥

बारलो साहिब } ऐसा तो दुनिया में कोई भी देश नहीं और जो छोटा सा टुकड़ा जमीन का कहीं किसी जगह हुआ भी तो उस की क्या गिनती है ॥

तामी । परन्तु जमीन के उस टुकड़े में मैं जानता हूं कि आबादी बड़ी पिचपिच होगी बरन कन्धे से कन्धा छिलता होगा क्योंकि सब कोई उसी जगह जाकर बसना चाहेगा ॥

बारलो साहिब } नहीं यह तुम्हारी भूल और कम समझ है जन्म-भूमि बड़ी चीज है जो जहां पैदा होता है उसे उसी जगह रहने की आदत हो जाती है ऐसे आदमी बहुत कम निकलेंगे जो गर्मी सर्दी के कारण अपना देश छोड़ कर दूसरे देश में जा बसें देखो लापलेन्ड में जो इङ्गलिस्तान से बढ़ कर उत्तर में है इतनी सर्दी पड़ती है कि बारहों महीने जमीन बर्फ़ से ढकी रहती है परन्तु वहां वाले भी अपना देश छोड़ कर दूसरे मुल्क में नहीं जाते ॥

तामी । ऐसे देश में आदमी क्योंकर बसते होंगे और वहां उनकी आजीविका क्या होगी ॥

बारलो साहिब } हारी से पूछो वह ज़मींदार का लड़का है उसको अवश्य यह बात जाननी चाहिये कि किस देश में किस रीति से जीविका पैदा करते हैं ॥

तामी । जो भाई तुम को वहां का कुछ हाल मालूम हो तो कह सुनाओ ॥

हारी । उस देश में खेती बारी कुछ नहीं होती न कोई ज़मीन जोतता बोता है न कोई फ़सल काटता है अनाज का वहां कोई नाम भी नहीं जानता फिर रोटी की क्या चर्चा है फल वाले पेड़ देखने को नहीं बरन हरे २ साग भी जो आदमी के खाने लायक़ हैं कभी किसी ने वहां जमते न सुने न भेड़ बकरी गाय बैल और घोड़े वहां होते हैं ॥

तामी । फिर वहां के आदमी खाते क्या हैं, क्या हवा फांक कर दिन काटते हैं ॥

हारी । उस देश में एक प्रकार का बारह सिंगा होता है बड़ा बलवान् और पुष्ट जैसे यहां हमलोग भेड़ बकरी पालते हैं वैसेही वहां वाले उन बारह सिंगों का गल्ला रखते हैं जब जाड़े की अधिकाई कुछ घटती है तो वे उनको पहाड़ों की दून में चरने को छोड़ देते हैं परन्तु जब बर्फ़ सब तरफ़ पड़ जाती है और चरने को कुछ नहीं रहता तो वह बारह सिंगे अपने खुरों से बर्फ़ खोद २ कर उसके नीचे से एक प्रकार की काई निकालते हैं और उसी से अपना गुज़ारा करते है निदान यही बारह सिंगे उस देश के आदमियों की दौलत हैं और यही उन की जीविका दूध उस का पीते हैं चमड़े पहनते हैं ओढ़ते हैं बिछाते हैं पालों की तरह लकड़ी पर तान कर उसी के नीचे सोते बैठते हैं जिन दिनों चराई मिलती है दूध की अधिकाई होती है काठ के बर्तनों में भरकर इकट्ठा कर रखते हैं वह बर्फ़ की सर्दी से जमकर पत्थर

सा हो जाता है महीनों तक नहीं बिगड़ता हथौड़ों से तोड़ २ कर खाया करते हैं जब बर्फ़ इतनी ऊंची जमजाती है कि उन बारह सिंगों को काई भी खाने को नहीं मिलती तो फिर वहां वाले उनको मारना शुरू करते हैं और उनके मांस से अपना पेट भरते हैं सोने चांदी और उन सब चीजों का जिसे आपलोग अपने जीने का मूल कारण समझते हैं वहां वालों ने कभी नाम भी नहीं सुना हर एक आदमी उस सर्द मुल्क में अपनी सारी आवश्यकता अपने हाथ से मिटा लेता है दूसरों की सहायता के भरोसे नहीं रहता न किसी के वह तावे हैं न किसी की उन पर हुकूमत है सब के सब अलग और उठौआ चूल्हे की नाईं रहते हैं जितने दिन जिस मैदान में पहाड़ों पर जी चाहता है उन्हीं चमड़े की पालों के नीचे पड़े रहते हैं जब उकताये तो अपना बोरिया बँधना एक नाव ऐसी बिना पहिये की गाड़ी पर रख कर और आप भी उसी पर सवार होकर किसी दूसरी ओर को चल देते हैं ॥

तामी । अभी तुम कहते थे कि वहां गाय बैल घोड़े कुछ भी नहीं होते फिर क्या वे उन गाड़ियों को अपने हाथ से खींचते हैं ॥

हारी । आपको इस बात के सुनने से बड़ा अचरज होगा कि वही बारह सिंगे उन गाड़ियों में घोड़ों की नाईं जोते जाते हैं और पंदरह कोसतक नित चल सकते हैं ॥

तामी । गाड़ियों में पहिये क्यों नहीं लगाते ?

हारी । पहिये लगावें तो वह बर्फ़ में धस जावें अथवा पाले पर फिसल कर सवार समेत गाड़ी को किसी गढ़े में लेजावें, यह गाड़ी नाव की भांति बर्फ़ पर खिसकती बड़े आनन्द से चली जाती है उस भयानक उजाड़ मैदान और पहाड़ों में जहां न शहर है न गांव न खेत है न बाग न सड़क है न पगदंडी न सराय है न दूकान जिधर आंख उठा कर देखो पहाड़ही पहाड़ बर्फ़ से ढके हुए दिखाई देते हैं यह लापलेंडी बारहसिंगों की

गाड़ियों पर सवार होकर दौड़ते फिरते हैं कहीं २ उन पहाड़ों पर भोज अथवा चील का पेड़ दिखाई दे जाता है बाक़ी भगवान् का नाम है, रीछ और भेड़ियों का वह घर है बारहसिंगों का बहुत नुक़सान करते हैं इसलिये वहां वाले सदा उनके शिकार में लगे रहते हैं जूतों की जगह खड़ाऊं की भांति डेढ़ २ दो दो गज लंबे काठ के पटरे अपने पैरों में बांध लेते हैं कि जिससे बर्फ़ में न धस जावें और फिर बेखटके तीर कमान या भाला लेकर उनका पीछा करते हैं, यह एक अनूठी बात है कि बर्फ़ और पाले के मैदान पर कोसोंतक वे लोग उन पटरों के बल से फिसले हुए हवा की नाईं लपके चले जाते हैं जिस दिन वे किसी रीछ को मारते हैं तो वह मानो उनका त्योहार है आस पास के सबलोगों का निमन्त्रण करते हैं और उस के मांस को उबाल कर बड़े आनन्द से खाते हैं चर्बी तो उन के लिये मानो अमृत है आग पर गला कर बेखट्के पी जाते हैं यद्यपि उन के दिन इसी भांति कटते हैं तथापि वे लोग मिलनसार और शुद्धचित्त, होते हैं जो कभी कोई परदेसी भूला भटका उस देस में जा पड़ता है तो वे लोग सामर्थ्य भर उस की सेवा करते हैं और लेते उस से कुछ नहीं, हां तमाखू जो कोई उन्हें देवे तो बड़ी इहसानमन्दी से लेते हैं क्योंकि तमाखू पीने की उन को बड़ी लत पड़ गई है।

तामी। इसभांति दिन काटने से तो यक़ीन है कि वे बेचारे जल्द ही मरजाते होंगे।

बारलो साहिब। क्या वे लोग जो बहुत खाते पीते हैं और भैंस की नाईं बे मिहनत पड़े रहते हैं, नहीं मरते या कभी मांदे नहीं होते।

तामी। नहीं यह बात तो मैं नहीं कह सक्ता क्योंकि मेरे यहां दो तीन बड़े आदमी सदा न्योते में आया करते थे और इतना खाते पीते थे कि जिस के देखने से आदमी दंग हो जाय पर वे बड़े अपाहज हो गये थे उनके पैर इतने फूल आये थे कि उन की तोंद से भी ज़ियादा मोटे दिखलाई देते थे न वे

खड़े हो सके न अपने पांव मोड़ सके जब पहुंचते तो हमारे यहां के दो तीन आदमी थाम थूम कर उन को गाड़ियों से उतारते और लाठियों के सहारे गिरते पड़ते सौ सौ खराबियों से वे अपनी कुर्सियों तक आते, पर बात उन के मुंह से सिवाय खाने पीने के और कुछ भी मैंने नहीं सुनी मानो यही उन्होंने जीवन फल समझ लिया है ।

बारलो साहिब } कभी तुमने किसी गरीब आदमी को भी ऐसा फूला हुआ देखा है कि जो अपने हाथ पांव को काम में न लासके ।

तामी । नहीं गरीब को तो ऐसी मांदगी में कभी नहीं पाया ।

बारलो साहिब } बस अब जान लो कि मिहनत करने और चलने फिरने से आदमी नहीं मरता बरन सच पूछो तो अधिक खाने पीने और बे मिहनत पड़े रहने से जान जाने का बड़ा डर है सुनो इसके सुबूत में मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूं ।

अनूठी चिकित्सा ।

———:०:———

इटालिया के देश में किसी शहर के बीच एक धनवान् रहता था न वह कभी चलता फिरता न किसी काम के लिये हाथ हिलाता और न कभी कुछ पढ़ता लिखता न अच्छी बातों की पूछ पाछ का शौक रखता सब दिन उस को खाने ही से काम था जो खाना सामने से हटा तो फिर कहां आराम था सबेरे से संझा तक वह यही सोचा करता कि आज कलेवा के लिये कौन २ सी चीज पकवाऊं और संझा के खाने को क्या २ बनवाऊं बरन सुपने में भी वह उन्हीं वस्तुओं को देखता और जो बर्राता तो रोटी ही रोटी पुकारता शराब उस देश में बहुत अच्छी होती है पर तौ भी फ़रासीस और पुर्टुगाल से गुमाश्ते भेज कर

मंगवाता और एक २ के दो दो दाम देता कोई ऐसा शहर समुद्र के किनारे न था जहां के बड़े २ सौदागरों से वह अपनी आढ़त, हर तरह की मछलियां पहुंचाने के लिये न रखता जितने मुर्गी और मुर्गाबी और अण्डे वाले शहर में थे सब से उस ने इकरारनामा लिखवा लिया था कि अच्छी से अच्छी चीज पहले उसके यहां पहुंचाया करें सबेरे जब कलेवा से निचन्त होता तो अपने पुस्तकालय में जाकर बैठता किताबें यद्यपि उसके यहां बहुत थीं परन्तु खोली उसने उनमें से कभी एक भी नहीं बड़ी सी कुर्सी पर तकिया लगाकर फैल जाता और अपने बावर्ची को बुलाता वह दो खिदमतगारों के हाथ में दो बड़े २ खान ढक कर चिखौनी के लिये लाता उन में सैकड़ों प्रकार की चटनियां और मुरब्बे और अचार रहते वह बलाचट एक २ टुकड़ा रोटी का हर एक में डुबोता जाता और बड़े सोच और धीरज से मुँह में रखता बावर्ची को हुकम देता कि इस चटनी को संझा के खाने में लाना और उस मुरब्बे को सबेरे कलेवा में देना इस अचार में खटाई कम है और उस चूरन में नोन जियादा, आगे को होशियार रहो जो तुम को बनाना न आवे किसी दूसरे से जा सीखो निदान कोई बादशाह भी अपनी बादशाही का काम इस खूबी से न करता होगा कि जिस ढब यह अपने खाने पीने के प्रबन्ध को एक बड़ा भारी काम समझता बावर्ची जब छुट्टी पाता तो यह अपने मनमें सोचता कि आज बड़ी मिहनत हुई परन्तु भला एक मुहिम्म तो बड़ी भारी पूरी हो गयी अब थोड़ा आराम करना चाहिये और फिर किसी बड़े दंगल पर पांव फैला कर लम्बा पड़जाता और खाने की घड़ियां गिना करता जब संझा का खाना मेजपर चुना जाता उस के प्रकारों की गिनती करना मनुष्य की ताकत से बाहर होता परन्तु अचरज यह है कि वह तोंदैल सब चट करजाता यहां तक कि रकाबी और पियाले चाटने लगता मन तो उस का खाने से कभी संतुष्ट न होता परन्तु जब पेट भर जाता और कुछ भी जगह बाकी न रहती तब नाचार हाथ

खींचता। धीरे २ वह इतना मोटा होगया कि एक कमरे से दूसरे कमरेतक उसे जाना कठिन हुआ पेट तो उसका फूल कर मशक बनगया और मुँह कुप्पा पांव भी बादी से सूज कर हाथी के से दिखलाई देते थे बद हज़मी की उसे सदा शिकायत रहती छाती जलती रहती कभी पेट में दर्द होता कभी सिर दुखता, जब बादी ने बहुत जोर किया और अत्यन्त दुख देने लगी तब हज़रत ने डाक्टर को बुलवाया वह डाक्टर अपनी विद्या में बड़ा पक्का और जसी था जब आया उस धनवान् ने कहा कि डाक्टर साहिब कुछ हमारा हाल भी देखते हो।

डाक्टर। मैंने अच्छीतरह देखा पर शायद हाल अपना आपही ने बनाया है जरूर बेठौर ठिकाने बद परहेजियां की होंगी नहीं तो यह नौबत काहे को पहुँचती।

धनवान्। बद परहेजी करने के लिये तो सौगंद तक खा सक्ता हूं हां इसमें संदेह नहीं कि मुझे खाने पीने का बड़ा शौक़ है परन्तु सदा एतिदाल के साथ नशे से बदमस्त मैं कभी नहीं हुआ।

डाक्टर। तो शायद आप सोते अधिक होंगे।

धनवान्। कुल बारह घण्टे रात भर में सोता हूं पर नींद मुझको जरा नहीं आती छाती में जलन बनी रहती है और सिवाय इसके सबेरे की ठंढी हवा मैं अब सह नहीं सकता इस कारण घड़ी एक दिन चढ़े तक पलंगही पर पड़ा रहता हूं।

डाक्टर। अचरज है कि आप की रात भर आंख नहीं लगती और फिर भी अबतक जीते हैं।

धनवान्। जो दिन को कुछ थोड़ा बहुत सो न लिया करता तो मैं कभी नहीं जीता।

डाक्टर। चलना फिरना भी आप का बहुत कम होता है। धनवान् ने एक ठंढी सांस भरी और बोला कि साहिब जिस समय मुझे ताक़त थी मैं सदा अठवाड़े में एक आध बार गाड़ी पर बैठ कर हवा खाने को जाया करता था परन्तु अब तो मैं

हिल भी नहीं सक्ता जो एक डग भी उठाता हूं तो नस २ ढीली हो जाती हैं

डाक्टर। मुझ को आप की मांदगी का बड़ा सोच है परन्तु आशा है कि जो आप अपना खाना और सोना कम करदें तो आप को थोड़े ही दिनों में फ़ायदा मालूम हो।

धनवान ने यह सुन कर फेर ठंढी सांस भरी और कहा कि हाय आपने मेरा रोग नहीं पहचाना आप को मेरी निर्बलता और पौरुष हीनता का हाल मालूम नहीं है नहीं तो कभी आप ऐसा न कहते जो खाना भी मैं छोड़ दूं और कुछ थोड़ी बहुत आंख लग जाती है उसे भी कम कर दूं तो फिर मरने में क्या बाक़ी रहेगा सबेरे के समय जब मैं उठता हूं बस यही जान पड़ता है कि मानो बिलकुल ताक़त एक साथ घटगई डकारें खट्टी, चली आती हैं पेट मारे बद हज़मी के फटा जाता है सिर घूमता रहता है जब कुछ थोड़ासा शोरबा पी लेता हूं तब दो आदमियों के थामने से फिर पलग पर जाता हूं मुझ को आप पर बड़ा विश्वास है जो कुछ दवा दीजे चाहे वह घुली हो चाहे पिसी, जिस भांति बतला दीजे मैं खुशी से उस का अभ्यास कर सक्ता हूं परन्तु खाना घटाना तो मारही डालना है यह कभी न होगा।

डाक्टर। आप अच्छा भी होना चाहते हैं और फिर अच्छे होने के उपाय से भी दूर भागते हैं भला उमर भर के कुपथ्य का दोष निरी दवा से कैसे मिट सकेगा। खैर जो आप मेरी सलाह नहीं मानते तो मैं भी इस बात में अधिक हठ नहीं करता परन्तु इतना आप को जता देता हूं कि आप की मांदगी दवा के योग्य नहीं है यह तभी दूर होगी कि जब आप खुद इस के पीछे पड़ेंगे।

धनवान्। कैसा बे शील संकोच डाक्टर है अभी इस जवानी में यह मेरी जिन्दगी से निरास हुआ जाता है, क्या सच मुच आप मेरा इलाज न करेंगे।

डाक्टर। जनाब जो कुछ मेरी समझ में आया मैंने

कह सुनाया जो आप को मेरी बात का यक़ीन न हो तो एक दूसरा हकीम इस विद्या का सागर हस्त चतुराई में आगर विशेष कर के इस रोग के दूर करने में जगत् उजागर रमूज़ीनी नाम पासही पडवा के शहर में रहता है परन्तु वह रोगी के घर पर कभी नहीं जाता चाहे कोई बादशाह हो चाहे अमीर जो आप को उस का इलाज करना मंज़ूर हो तो मैं सिफ़ारिश की चिट्ठी उस के नाम लिख सक्ता हूं ।

यह धनवान् जो एक कमरे से दूसरे तक जाना एक बड़ा भारी काम समझता था और कभी बिना बड़ी आवश्यकता के दर्वाज़े तक न जाता इलाज के लिये सफ़र करना कब अंगीकार करसक्ता था सलाम करके डाक्टर को विदा किया मांदगी उस की दिन २ बढ़ने लगी अन्त को जब बहुत तंग हुआ पडवा के जाने की तैयारी की और डाक्टर से सिफ़ारिश की चिट्ठी भी मंगाली यद्यपि वह स्थान वहां से कुल एक मंज़िल था पर उसने इतने मार्ग को चार दिन में पूरा किया छकड़ों पर खाने की चीज़ें साथ ले गया था और दो ख़ानसामां हमराह थे जब डाक्टर के दर्वाज़े पर पहुंचा पांच सात आदमियों का हाथ थाम थूमकर बड़ी कठिनाई के साथ गाड़ी से बाहर निकला मकान के भीतर गया तो देखा कि एक बड़े से दालान में बीस पचीस आदमियों के साथ वह डाक्टर खाने पर बैठा है और एक २ को हठ करके खिला रहा है एक ज़र्द चिहरे का आदमी उसकी दाहनी ओर बैठा था और डाक्टर उस से कह रहा था कि बिलकुल मांस जो तेरे सामने रक्खा है न खा जावेगा तो कभी इस तप से छुटकारा न पावेगा फिर दूसरे से कहने लगा कि यह शराब जो इङ्गलिस्तान से अभी पहुंची है पियाला भर कर पीजा तेरे रोग की दवा है तीसरे से बोला जो अपने लड़के को चंगा करना चाहता है तो मछली खाने से कभी मत रोक ।

धनवान् यह बातें सुन कर अपने मन में बहुत ख़ुश हुआ और आकाश की ओर देख कर ईश्वर का धन्यवाद किया और

कहने लगा कि बारे यह डाक्टर तो समझदार मालूम होता है यह उस मूर्ख की नाईं जिस काल के गाल से मुझे मेरी किस्मत ने बचा लिया केवल रोटी पानी पर कभी न रक्खेगा और न ऐसा परहेज बतलावेगा जिससे प्राण जाने का डर हो ।

अन्त को वे सब लोग खा पी कर डाक्टर को असीस देते और उस का शुक्राना अदा करते बिदा हुए वह डाक्टर उठ कर धनवान् के पास आया और बहुत शिष्टाचारी के साथ उससे बात चीत करने लगा धनवान् ने वह सिफ़ारिश की चिट्ठी दी जो साथ लाया था रमूज़ीनी ने बिलकुल पढ़ी और कहा कि बस मुझ को इस चिट्ठी के पढ़ने से आप का सारा हाल खुल गया सुनने की आवश्यकता न रही मांदगी आप की बहुत कड़ी है परन्तु आशा अबतक बाक़ी है जो आप मेरा कहना मानें और अपने नौकर चाकरों को बिदा करदें बरन इस बात का वचन हारें कि महीना भर तक जिस भांति मैं बताऊं उसी भांति आप रहें और कभी उस में अपना दखल न देवें नहीं तो जो आप बादशाह भी हों तो मैं कभी इलाज नहीं करने का ।

धनवान् । हज़रत जो कोई दूसरा डाक्टर होता कभी उस से यह क़ौल न हारता परन्तु आप के इलाज का जो हथकंडा मैंने देखा है उस से ऐसी मन को प्रतीति हो गई है कि जो कहिये करने को हाज़िर हूं ।

रमूज़ीनी । यह आप को इख़्तियार है चाहे इलाज कीजिये चाहे इसी भांति रोगी बने रहिये परन्तु मेरा ढंग बाज़ारी डाक्टरों कासा नहीं है कि अपने लाभ के लिये रोगी के मन की सी बात करूं और नाहक उस के प्राण लूं मैं जबतक कि पूरा यक़ीन आरोग्यता और उपाय का नहीं कर लेता कभी किसी को दवा नहीं देता क्योंकि इस में इस डाक्टरी विद्या की बदनामी है अब आप अपनी मांदगी को ध्यान देके सोचिये कि जो कुछ दिन भी इसी ढब से रहने पावे ज़रूर जान जाने का

डर है, फिर जबतक कि आप मेरा इलाज अच्छी तरह न करें तो वह मांदगी क्योंकर मिट सकेगी ।

धनवान् । बेशक आप का कहना ठीक और मानने के योग्य है, सिवाय इस के मैंने आप के इलाज का ढंग थोड़ीही देर में ऐसा देखलिया कि अब सब तरह मुझ को आप का विश्वास हो गया, जो आप कहियेगा वही करूंगा ।

यह कहकर अपने नौकरों को आज्ञा दी कि जाओ तुम सब घर को सिधारो और जबतक एक महीना पूरा न बीते तब तक कभी मेरे पास न आओ, जब वे सब चलेगये रमूज़ीनी ने पूछा कि रास्ते में आप को कुछ दुख तो नहीं हुआ धनवान् ने जवाब दिया कि नहीं दुख तो कुछ नहीं हुआ बरन मुझ को कभी यह आस न थी कि यह सफ़र इस आराम से कटेगा परन्तु इससमय भूख की अधिकाई है जो आप मिहरबानी करके खाना जल्द लाने की आज्ञा देवें तो मैं बड़ा गुण मानूंगा ।

रमूज़ीनी । बहुत अच्छा आठ बजे खाना तैयार होगा तब तक मैं जाकर थोड़े रोगियों को देख आता हूं रमूज़ीनी तो यह कह कर सवार हो गया और धनवान् अपने मन के लड्डू बांधने लगा कि धन्य ईश्वर जो अच्छे डाक्टर से काम पड़ा जब वह गरीबों को इसतरह ताकीदें करके अच्छी चीजें खिलाता है तो मुझ ऐसे धनवान् को तो जो कुछ न खिलावे अचरज है इस शहर की मछलियों की बड़ाई मैं लड़कपन से सुनता चला आता हूं बावर्ची डाक्टर का बेशक अपने काम में पक्का होगा कोई ऐसा सबब नहीं कि मुझे अपने नौकरों के फेर देने से पछताना पड़े ।

निदान इसी ढब बैठा मन के लड्डू बांध रहा था और खाने की घड़ियां गिनता जाता था एक २ पल उसको साल के बराबर बीतता था मारे भूख के आंतें कुलकुला रही थीं यहां तक कि वह डाक्टर के नौकरों से पूछने लगा कि आठ बजने में कितनी देर है अन्त को जब भूख की अधिकाई हुई तब उसके नौकरों से गिड़गिड़ाकर कहने लगा कि भाई जबतक खाना तैयार हो

थोड़ी सी कोई मज़ेदार चीज मुझे ला दो कि जिस से भूख बचाऊं औ लौब न हो किसी प्रकार का मोहनभोग ही सही नौकरों ने हाथ बांधकर प्रार्थना की कि दीनानाथ लौज और मोहन-भोग तो हम आप को बहुत सा देते पर हमारे मालिक की आज्ञा है कि जो कभी कोई नौकर बे पूछे एक खंस २ का दाना भी रोगी को देवेगा तो उसी दम निकाला जायगा पर आप यक़ीन जानिये कि यह सारी बातें आपही के लिये अच्छी हैं हमारे मालिक का दस्तूर है कि जो कुछ रोगी को खाने को देता है अपने सामने ही खिलाता है थोड़ी धीरज धरो दो घण्टे में खाना ही तैयार हो जाता है धनवान् बेचारा भूख का मारा इसी ढब दो घण्टे और भी चुपचाप बैठा रहा ऐसी भूख सहने का काम उसे उमर भर में यह पहली ही बेर पड़ा था पल २ में यही कहता कि घड़ी को क्या होगया कहीं बन्द तो नहीं है आठ क्यों नहीं बजते यहां तक कि रमूजीनी अपने ठीक समय पर फिर आया और खाना लाने का हुक्म दिया खानसामां ने छ रकाबियां ढकने से ढांक मेज पर ला रक्खीं धनवान् उन्हें देखकर अपने मन में बहुत खुश हुआ समझा कि संसार के अमृत पदार्थों का तत्त्व और षटरस का सार इन्हीं छ बरतनों में बंद किया है चाहता ही था कि हाथ बढ़ावे पर रमूजीनी ने रोका और कहा कि रकाबी खोलने से पहले इतना आप और भी सुन लीजिये कि आप की मांदगी ऐसी कड़ी है कि आप के खाने पीने की चीज़ों में भी मुझे दवा मिलानी पड़ी सवाद उनका कुछ भी नहीं बदला पर असर बहुत होगा आप इन के खाने पीने में इस बात का विचार रखिये और जहां तक बन पड़े थोड़ा ही खाइये इस में नौकरों ने जो ढकना उठाया तो यह धनवान् क्या देखता है कि एक में तो दो अंजीर रक्खे हैं दूसरी में दो जैतून तीसरी में दो सेब चौथी में दो छुहारे पांचवीं में दो उबाले हुए अण्डे और छठी में छोटा सा टुकड़ा पनीर का, दौलत-मन्द इन चीज़ों को देखकर बहुत घबराया और पुकारा कि

साहो यह क्या गजब करते हो क्या इसी लिये मेरे नौकरों को यहां से निकाल दिया भगवान् से डरो यह कैसा खाना मेरे सामने लाये हो मुझ से अमीर को यह चीजें देते हो कि जो उन कमेरों से भी जिन को आप ने अभी अपने साथ न्यामतें खिलाई हैं न खाई जावेंगी ।

रमूज़ीनी । जरा धीरज धरो यह केवल मैंने आप के अच्छे और तन्दुरुस्त होने के लिये उपाय किया है आप अपने मन में कुछ बुरा न मानिये, सफ़र की थकावट से आप का लोहू जोश खागया है जो मैं आप को मनमानता खाना दूं तो तुरन्त तप चढ़ आवेगी पर कल जब थोड़ा आप का चित्त ठिकाने हो जावे आप अच्छीतरह खाना खाइयेगा धनवान् को सिवाय मान लेने के उस जगह दूसरा उपाय क्या था उसी पनीर के साथ एक टुकड़ा रोटी का जो रमूज़ीनी ने दिया था खाया वह छुहारे और ज़ैतून भी चबागया पर यह चीजें भूख के कारण ऐसी सवाद लगीं कि वह लौज़ और हलुओं में भी कभी उसने न पाया था जब उन रकाबियों को उसने खाली किया पीने को शराब मांगी ।

रमूज़ीनी । ऐसा काम आप कभी न कीजिये शराब इस समय आप के लिये प्राणहंता विष है मुझे बड़ा पछतावा है कि आप की इच्छा पूरी नहीं कर सकता पर यह सारी बातें आपही की सलामती के लिये हैं जो आप को प्यास हो तो पानी का गिलास मौजूद है ।

लाचार उस धनवान् ने पानी ही पर संतोष किया जब मेज़ से चादर उठगई तब एक घण्टे तक डाक्टर रमूज़ीनी बड़े काम और काम की बातें करता रहा फिर उस धनवान् को सोने की आज्ञा दी वह धनवान् इस बात से बहुत प्रसन्न हुआ तुरन्त उठ कर नौकर के बताने बमूजिब सोने के कमरे में गया पर जब देखा कि अच्छे बिछौने झाड़ फानूस दीवारगीर और तस्वीरें कुछ भी नहीं हैं केवल एक सादी सी मसहरी पड़ी हुई है और

उस के भीतर एक गुदेला बिछा है और वह भी ऐसा कड़ा कि धरती से अधिक तब तो धनवान् को बड़ा क्रोध आया झुंझला कर नौकर से बोला कि अरे दुष्ट मुझ को कभी यक़ीन नहीं होता कि डाक्टर रमूज़ीनी ने ऐसा मकान मेरे सोने के लिये ठहराया हो यह तो कुत्तों के सोने लायक भी नहीं है चल तुरन्त मुझे दूसरा कमरा बता कि जिस में थोड़ी नींद तो आवे ।

नौकर । महाराजाधिराज मुझ को इस बात का बड़ा पछतावा है कि आप ने इस कमरे को नापसंद किया पर यह बात मुझको अच्छीतरह याद है कि डाक्टर साहिब ने आप को सोने के लिये इसी कमरे की आज्ञा दी है हमलोग ऐसी बात कभी नहीं भूलते वह तो यह कह कर चल दिया और धनवान् उसी कमरे में अपने मन की बातें सोचा किया जब नींद का ज़ोर हुआ आंखें बंद होने लगीं तो अंत दर्जे कपड़े उतार कर उसी मसहरी में पड़ रहा पर नींद उसको उस दिन ऐसी गहरी आई कि शायद उमर भर उस ने कभी इसतरह का चैन न पाया होगा एकही नींद में भोर हो गया डाक्टर ने उस के कमरे में आकर कुशल पूछी, यद्यपि वह धनवान् रात को यही सोचता २ सो गया था कि सबेरा होते ही डाक्टर से समझूंगा और जिस तरह बने इस कठोर चित्त के पंजे से अपने को छुड़ाऊंगा पर रात भर जो नींद का सुख चैन पाया और डाक्टर रमूज़ीनी ने बहुत नर्मी और शिष्टाचारी के साथ उस से बोल चाल की तो क्रोध थोड़ा ठंढा हुआ बोला मिज़ाज तो आज कुछ अच्छा है पर यह मकान आप का आदमी के रहने लायक नहीं भूतख़ाना इस को अलबत्ता कह सकते हैं कि जिस में फ़र्श बिछौना तक नहीं और पलंग भी सोने के लिये ऐसा कि पत्थर की चट्टान उस से अच्छी है ।

डाक्टर । ऐ कृपासिंधु ! मैंने इसीलिये आप से इस बात का बचन ले लिया है कि महीने भर तक जिस ढब से मैं रक्खू उसी ढब से आप को रहना पड़ेगा आप जानते हैं कि मैं जो काम करता हूं आपही के अच्छे होने और तनदुरुस्ती की फ़िकर में

लगा हूं चाहे यह बातें आप को बुरी लगें चाहे भली पर इतना आप निश्चय जानिये कि जो उपाये मैं करता हूं आपही के भले के लिये यह सब बातें उमर भर की परीक्षा से मैंने पाई है सम्भव नहीं कि मेरी सारी हिक्मतें आप की समझ में आ सकें पर बिछौने की जो आप ने इस बेरा शिकायत की तो मै भी इतना आप को सुना रखता हूं कि यह बिछौना भी जिस पर आप सोये हैं दवा की तासीर से खाली नहीं है आप खुद कहते हैं कि आज रात को खूब नींद आई थी और यह दवा की तासीर मख़मल और साटन में कभी नहीं आ सकती और न पर और सेमल की गुदगुदी गद्दियों में रह सकती है जो आप मांदगी से आरोग्यता चाहते हैं तो ऐसी बातों का बिचार न कीजिये और नाहक़ थोड़ी २ बात पर खफ़ा न हूजिये मै इस बात में लाचार हूं दिन बहुत चढ़ आया है अब जो इच्छा हो तो पलग से उठकर मुँह हाथ धोइये और कपड़े बदलिये ।

रमूज़ीनी ने नौकरो को पुकारा उन्होंने कपड़ा पहनाया धनवान् को बड़ी आस थी कि आज हाज़िरी में कुछ अच्छी २ चीजें खाने को मिलेंगी पर जब उस दिन भी उसको एक टुकड़ा रोटी का और एक पियाली शोरवे की मिली तो उस का मन जल कर राख हो गया पर डाक्टर ने चिकित्सा शास्त्र की पुस्तको से ऐसी दलीलें निकालीं कि उस की कुछ दाल न गली बिचारा चुपका होकर दम खींच गया ।

जब खाना खा चुके तो कुछ देर पीछे डाक्टर ने कहा कि जनाब आइये अब आप के हाथ पांव खोलने का कुछ उपाय करूं और उस की कुर्सी आदमियों के कंधे पर रखवा कर एक कोठरी में ले गया जब उस के भीतर गये तो डाक्टर ने कहा कि अब आप ज़रा खड़े हूजिये ।

धनवान् । मुझ में खड़े होने की शक्ति कहां मैंने तो तीन बरस से धरती पर पांव नहीं रक्खा ।

डाक्टर । इस की कुछ चिन्ता नहीं लाठियों के सहारे

से खड़े हो उठिये तो सही हियाव कीजिये थोड़ा और लगाइये दीवार पकड़ कर खड़े हो जाइये तब वह धनवान् बड़ी कठिनाई से लकड़ियों को थाम थूम कर खड़ा हुआ डाक्टर ने कुर्सी तो वहां से उसी दम हटवा दी और आप झटपट बाहर निकल कर कोठरी के दरवाजे पर ताला देदिया धनवान् क्या देखता है कि उस कोठरी की जमीन बिलकुल लोहे की बनी हुई है धीरे २ वह गर्म होने लगी थोड़ी ही देर में इतनी तप उठी कि धनवान् साहिब के पैर जलने लगे तब तो बहुत घबराये हायरे बापरे करने लगे डाक्टर को पुकारा नौकरों को आवाज दी जवाब किसी से न पाया कभी गालियां देता था कभी धमकाता था कभी इनाम की लालच दिखलाता था कभी मनौती करता था पर कोठरी का दर्वाजा किसी ने न खोला अन्त को जब तलुए बहुत ही जलने लगे तो एक पैर उठा लिया और दूसरे से मेंडक की नाईं कूदने लगा और जब वह जलने लगा तो उस को उठाया और पहले को काम में लाया निदान इसी तरह पारा पारी से पैर उठाता धरता उस कोठरी के भीतर कूदता फिरा जब देह मे पसीना आया और रगें अच्छीतरह खुल गई तो डाक्टर ने दर्वाजा खोल दिया और एक बड़ी सी कुर्सी गद्दी तकिये समेत वहां रखवादी कुर्सी देखतेही धनवान् की जान में जान आई तुरन्त उस पर जा गिरा उमर भर मे यह पहिली ही बेर थी कि उस ने आराम का मजा पाया क्योंकि आराम सा पदार्थ बिना मिहनत कभी प्राप्त नहीं होता और उसने तो कभी उमर भर कुछ मिहनत ही नहीं की थी जब आदमी मिहनत करता है तो उस के पीछे चटाई पर भी बैठने से आराम मिलता है और जो मिहनत न करो और सब दिन सूम की तरह मखमल की कौच पर पड़े रहो तो आराम के पलटे दुख प्राप्त होगा जी उकता जावेगा बरन घबराने लगेगा ।

निदान इसी तरह वह डाक्टर दिन पर दिन उस धनवान् को मिहनत करने और भूख सहने की टेव कराता जाता था और शरीर उस का अच्छा होता आता था यहां तक कि वह महीना पूरा हो गया और धनवान् के नौकर चाकर भी सवारी लेकर आ

पहुंचे उस ने न तो डाक्टर से छुट्टी ली और न उस के आदमियों से कुछ कहा तुरन्त गाड़ी पर सवार हो कर अपने घर को चल दिया मानो बंदीखाने से छुटकारा पाया क्रोध मे भरा हुआ था रास्ते भर यही सोचता गया कि यह सारा बखेड़ा उसी हकीम का है जिस ने मुझे रमूज़ीनी के इलाज करने की सलाह दी शायद इन दोनों ने मिलकर मुझे तंग करने के लिये पहले ही बात चीत कर रक्खी थी कुछ चिन्ता नहीं मै भी उस हकीम से समझ लूंगा जब अपने शहर में पहुचा, कोचवान को आज्ञा दी कि पहले उसी हकीम के यहां मुझे ले चल जिस ने रमूज़ीनी के इलाज की सलाह दी थी, घर पीछे चलना कोचवान ने गाड़ी उसी हकीम के दर्वाजे पर जा लगायी हकीम ने उस धनवान् को बड़ी मुश्किल से पहचाना क्योंकि इस महीने भर मे उस की तोंद सारी पिचक गई थी हाथ पांवों में बल आगया था और बिना लाठी लिये पैदल भी चल सकता था धनवान् ने हकीम को देखतेही बहुत सी धिक्कारी दीं और कहा कि वाह साहिब वाह आपने हमारा अच्छा इलाज करवाया भला मैने आप का क्या अपराध किया था जो आप ने मुझे ऐसी बिपत् में फसाया हकीम ने बहुत नर्मी के साथ उत्तर दिया कि जनाब मै नहीं जानता कि आप किस कारण से मुझे यह बातें सुना रहे है कुछ मैने आप को रमूज़ीनी का इलाज करने के लिये उकसाया फुसलाया भी तो नहीं यह अलबत्ता अपराध हुआ कि जब आपने उस के नाम की चीठी मांगी तो मैने अपने जान उस में आप की सिफ़ारिश लिखी ।

धनवान् । बेशक् आप ने उकसाया और फुसलाया तो नहीं पर बड़ाई आपने उस अभागे की क्यों की जो आप उस की बड़ाई न करते मै उस के दर्वाजे कभी थूकने भी न जाता ।

हकीम । जनाब जो मैने उस की बड़ाई की तो बुरा क्या किया आप ज़रा अपना मुंह तो दर्पन में देखिये अब वह लाठियां आप की कहां गयीं और भूख और नींद के उलाहने कहां गये ।

धनवान् । यह तो अलबत्ता मैं भी मानता हूं कि जब से

रमूज़ीनी के यहां गया पाचन शक्ति मेरी बहुत ठीक रहती है और नींद भी ऐसी आती है कि कभी उमर भर न आई थी खाने की ओर बड़ी चाहना रहती है और अब चलता फिरता भी अच्छी तरह हूं।

हकीम। बस इन्हीं सब बातों की यह शुक्र गुज़ारियां हैं जो आप उस बेचारे को गालियां देरहे हैं जिस भले आदमी ने महीने भर में आप के खोखले बदन में मानो नये सिरे से प्राण पैठाया है उस के हक़ में यह बातें आप मुंह से निकालते हैं।

पर हां इस बात का उलहना अलबत्ता आप चाहे जितना दे लीजिये कि उस ने आप को धोखा देकर हृष्ट पुष्ट कर दिया और मूर्ख बना कर छोड़ दिया जब आप उस के मकान में पहुँचे थे तब आपने कई कंगाल रोगियों को उस की मेज़ पर संसार के अमृत पदार्थ खाते हुए देखा पर यह न समझा कि कंगालों को बहुधा मांदगी पेट भर अन्न न मिलने के कारण पैदा होती हैं फिर उन को चंगा करने के लिये खूब खिलाना अवश्य हुआ इस के बिपरीत बड़े आदमियों को अधिक खाने पीने से रोग आ घेरते हैं उन के कुपथ्यों के मिटाने के लिये उन्हें संयम से रहना और परिश्रम करना अवश्य हुआ, इस में संदेह नहीं कि रमूज़ीनी ने आप को बनालिया, न आप के बिछौने में उस ने दवा दी थी और न आप के खाने पीने में, मनोरथ उस का आप की कुटेव छुड़ाने से था सचमुच इलाज डाक्टर रमूज़ीनी ने आप का इस खूबी के साथ किया कि जो आप अपना आधा धन भी उस को बांट देवें तब भी उस के उपकार से उत्तीर्ण नहीं हो सकते जब इस हकीम ने यों समझाया तब तो धनवान् के चेत ठिकाने आये और अपने लड़कपन और कुबचनों पर बहुत पछताया हकीम से तरह तरह के उज़र करने लगा और रमूज़ीनी के पास बहुत से रुपयों के साथ एक धन्यवाद की चीठी उसी दम रवाने की जब तक जिया फिर कभी अपनी पुरानी टेव के गिर्द न फटका और नियम के साथ रहने और भूख के अनुसार

खाने और समय पर चलने फिरने और मिहनत करने से बुढ़ापे में भी ज्यों का त्यों बना रहा ।

तामी । यह तो बड़े अच्छे मतलब की कहानी हाथ लगी अब मैं उन सब बादी से भरे तुंदैलों को जो मेरे बाप के यहां खाना खाने को आते हैं रोज सुनाऊंगा ।

बारलो साहिब } यह बात बड़ी अनुचित है ऐसा कभी न करना पहले तुम खुद तो ढंग सीखलो और शिक्षा पालो तब दूसरों को सिखाने जाना यह बात कब हो सकती है कि तुमसा बच्चा बड़े बूढ़ों को रास्ता बतावे क्या वे तुंदैले जो तुम्हारे घरमें आते हैं आप यह बात नहीं जानते कि असमय और कुपथ्य से मांदगी होती है याद रक्खो कि संसार में जितने धनवान् और अमीर हैं वे आ... से अधिक इसी बला में फंस रहे हैं सच पूछो तो जियादा खाना और नियम छोड़ना भूखे रहने और मिहनत करने से जियादा बढ़कर आफ़त लाता है और आदमी की जान को भय में डालता है वह लाप्लेन्ड के रहने वाले जिन की दशा तुम सुनकर पछताया करते थे ऐसे शरीरारोग्य और हट्ट कट्ट बने रहते हैं कि वैसे दूसरे देश में बहुत कम निकलेंगे युवा अवस्था में उस देश के लोग बहुत कम देहरोग से मरते हैं और उन सब मांदगियों को जो हमलोगों को सताती हैं उस देशवाले नाम भी नहीं जानते हां बरफ़ की चमक और धुएं की अधिकाई से जो आग के कारण सदा उन के घरों में घुटा रहता है कोई २ अंधा तो अलबत्ता हो जाता है ।

॥ इति ॥